वर्ष 11, अंक 38, जुलाई - सितम्बर 2021

मूल्य
₹120/-

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

वर्ष 11, अंक 38, जुलाई-सितम्बर 2021

संपादक

सपना सोनकर

सह-संपादक

रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. एन. पी. प्रजापति

प्रोफेसर बलिराम धापसे

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)

प्रोफेसर किशोरी लाल रैगर, जोधपुर (राजस्थान)

प्रोफेसर जयचंद्रन आर., तिरूअनंतपुरम (केरल)

प्रोफेसर दिनेश कुशवाह, रीवा (मध्यप्रदेश)

डॉ. एन.एस. परमार, बड़ौदा (गुजरात)

प्रोफेसर दिलीप कुमार मेहरा, वी.वी. नगर (गुजरात)

प्रोफेसर विजय कुमार रोड़े, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड़ (कर्नाटक)

प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

डॉ. दादासाहेब सालुंके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)

प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)

डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)

मुख पृष्ठ- अजय कुमार वर्मा (मनीष), ग्राफिक डिजाइनर, बैढ़न-सिंगरौली (म.प्र.)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक -रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन.पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली - 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य।

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. : 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू.डी. आर-62ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र.-486886, मो. : 09752998467

सहयोग राशि-120/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000/- रुपये, पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रुपये, विदेशों में- $50, आजीवन व्यक्ति - 6000/- रुपये, संस्था -10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि - इंडिया पोस्ट पेमेन्ट बैंक A/c - 030710018282 IFSC Code - IPOS0000001, Branch - SIDHI, (Nirpat Prasad Prajapati)

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति लेना आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक है। **'नागफनी'** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **'नागफनी'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनी आर्डर/चैक/बैंक ट्रांसफर/ई- पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चैक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

लेख भेजने के लिए Mail ID : nagfani81@gmail.com Website : http://naagfani.com/

नागफनी

अनुक्रम

	पृष्ठ क्रमांक
संपादकीय...	1
साहित्यिक शोध विमर्श -	
1. हिंदी का मानकीकरण: समस्याएँ और संभावनाएँ - प्रो.मोहन	2-6
2. आतंकवाद और रचनाकार का दायित्व - प्रो.मन्जुनाथ एन.अबिंग	7-10
3. संत काव्य का साहित्यिक अध्ययन - डॉ. सुशीला	11-17
4. 'नए युग के शत्रु' काव्य में वैश्वीकरण और पिसता हुआ आम आदमी - डॉ.कल्पना पाटील	18-20
5. तालाबंदी कालीन कविताओं में 'मजदूर विमर्श' - डॉ. महेंद्र कुमार वाढे	21-25
6. बौद्ध धर्म और जाति व्यवस्था - डॉ. नीरजा शर्मा	26-28
7. गुरू जम्भेश्वर का कर्म योग सिद्धान्त - डॉ. नरेश कुमार सिहाग	29-31
8. मेहनतकश जन के गीतकार: रमेश रंजक - डॉ. आकाश वर्मा	32-35
9. अस्तित्ववादी चिन्तन की दृष्टि से अज्ञेय का काव्य - डॉ. मार्तण्ड कुमार द्विवेदी	36-38
10. लोकसाहित्य अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व - डॉ.अनिता वेताळ-अंत्रे	39-40
11. रेणु की कहानियाँ: ग्राम्य जीवन का यथार्थ - डॉ.अनिल कुमार सिंह	41-44
12. भारत में गजलों का इतिहास - डॉ.नीलम	45-46
13. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य-संग्रह में सामाजिक-चेतना - डॉ. गौकरण प्रसाद जायसवाल	47-49
14. प्रेमचन्द के उपन्यासो में सामाजिक समस्यायें - शैलेषा एम. नन्दुरकर	50-52
15. समकालीन उपन्यासों में चित्रित राजनैतिक परिदृश्य - डॉ.सफीना एस.ए.	53-55
16. मिथिलेश्वर की कहानियों में चित्रित धार्मिक परिवेश - डॉ.धन्या के.एम.	56-57
17. एक अधूरी दास्तान तीसरी ताली की - ग्रीष्मा एलिज़बथ के.ए.	58-59
18. समाज को रेखांकित करती कैलाश बनवासी की कहानियाँ - नैन सिंह	60-63
19. भारतीय रंग परंपरा में नौटंकी की भूमिका - सर्वेश कुमार	64-68
20. 'मानव की विवेक-चेतना' और 'आत्मजयी':एक मूल्यांकन - शिवपाल	69-71
21. 'अभंग गाथा':एक अवलोकन - निवेदिता	72-73
22. सुधा अरोड़ा की कहानियों में चित्रित भारतीय पारिवारिक परिवेश का चित्रण - प्रवीण लता	74-77
23. पंत के काव्य में प्रकृति, पर्यावरण और जीवन - पुष्पलता मिश्रा	78-79
24. विनोद कुमार शुक्ल के कहानियों में प्रमुख समस्याएँ - नीलम रानी	80-81
25. बाजार में रामधन... - अमृता अनिल तौर	82-84
26. 'त्रिशूल' उपन्यास का समकालीन यथार्थ - शेख उस्मान सत्तारमियाँ	85-87
27. 'जल टूटता हुआ' और 'रेह नदी निरबधि' उपन्यासों में चित्रित आर्थिक संकट - शहिदुल इस्लाम खान	88-92
स्त्री विमर्श -	
28. कुसुम अंसल की आत्मकथा में चित्रित स्त्री जीवन का यथार्थ - डॉ.निशा मुरलीधरन	93-94
29. स्त्री हिंसा देह ही देश - प्राची तिवारी	95-97

	पृष्ठ क्रमांक
दलित विमर्श -	
30. समकालीन हिन्दी उपन्यास - साहित्य और दलित समाजशास्त्र - डॉ.तारु एस.पवार	98-102
31. दलित सहित्य की सौन्दर्यशास्त्रीय मान्यताएं - डॉ. इकरार अहमद	103-106
32. दलित चेतना के परिप्रेक्ष्य में 'ठाकुर का कुआँ' - डॉ.अन्सा ए.	107-108
33. सुशीला टाकभौरे की दलित कहानियों की भाषिक विशेषताएँ - विप्रा जनार्दन राऊल	109-111
आदिवासी विमर्श-	
34. विकास बनाम विस्थापन: आदिवासियों के संदर्भ में-प्रो. संजय एल.मादार	112-114
35. आजादी के बाद आदिवासियों का विकास बनाम स्थिति-धनराज मछिंद्र कामले	115-117
36. आदिवासी विमर्श और हिंदी उपन्यास-सनोज पी.आर	118-119
37. आदिवासी समाज की अस्मिता के सवाल : एक विश्लेषण-सुशील कुमार	120-123
विविध विमर्श-	
38. जाटों की उत्पत्ति का देशी सिद्धान्त-डॉ.कुलराज व्यास	124-126
39. उच्च शिक्षा स्तर पर कौशल विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की महता-डॉ.अविनाश पारीक	127-130
40. सरदार शहर-तहसील की कृषक महिलाओं की सामाजिक.आर्थिक रूपरेखा का अध्ययन-हिमांशु ग्रोवर	131-135
41. भूमि की जैविक व अजैविक दशा का अध्ययन सरदार शहर तहसील के सन्दर्भ में-डॉ सुनील कुमार	136-139
42. भारतीय संस्कृति में पेड़-पौधों का धार्मिक महत्व-डॉ. धर्मराज शिवाजी पवार	140-144
43. कोरोना महामारी का भारत में सामाजिक-आर्थिक प्रभाव-डॉ.नितिका माहेश्वरी	145-147
44. गंगा प्रदूषण पर्यावरण के लिए एक गहन समस्या -डॉ. प्रीति चौधरी/शिव कुमार खरवार	148-153
45. प्रणय गाथा का स्मारक-गूजरी महल-डॉ. गोविंद बाथम	154
46. ऑनलाइन शिक्षण और भाषा शिक्षण - चुनौतियां एवं आशाएं-डॉ. अर्शदीप सिंह	155-157
47. उपनिषदों में आध्यात्मिक बुद्धि -निधि सोनी	158-160
48. राजपूताना में आधुनिक शिक्षा का अध्ययन-राजपाल सिंह यादव	161-164
49. आदि काल से वैदिक काल तक योग की स्थिति-शिव कुमार तिवारी	165-167
संस्मरण...	
50. राजेन्द्र यादवः हम जा मिले खुदा से दिलवर बदल बदल कर-डॉ.दिनेश कुशवाह	168-172
पुस्तक समीक्षा...	
51. 'गोदान' और 'सूअर दान' ग्रामीण और दलित जीवन की व्यथा-कथा का प्रमाणिक दस्तावेज-डॉ. पान सिंह	173-181
52. हे बेशर्मी ! तेरी सदा ही जय हो-डॉ. काकोली गोराई	182
53. सूअरदान बनाम गोदान-रमेश चंद मीणा	183-185

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

बौद्ध धर्म और जाति व्यवस्था

डॉ. नीरजा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सदियों से हमारा समाज धर्मशास्त्रों पर आधारित विशिष्ट मानसिकता से सम्बद्ध सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक विधानों से नियंत्रित होता रहता है। भारतीय धर्म, चिन्तन दर्शन और संस्कृति को बौद्ध धर्म की अभूतपूर्व देन है जिसने प्रज्ञा और ज्ञान के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न कर दी। ज्ञान और देशना की दिशा में इसने विश्व को प्रभावित किया तथा अपनी नवीन चिन्तन पद्धति से लोगों को आकृष्ट किया। बौद्ध धर्म ने भारतीय जनमानस को सर्वप्रिय धर्म प्रदान किया जिसमें नैतिक आचरण और सचरित्रता थी तथा आडम्बर और कर्मकांड का अभाव था। वैदिक आर्यो ने भारत में एक सामाजिक व्यवस्था कायम की जिसे वर्ण व्यवस्था कहा गया। वर्ण व्यवस्था पर प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद पुरुषसूक्त में मिलते हैं यहां कहा गया है -

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहुराजन्य कृतः
उरु तदस्य यद्वैश्यः पदभ्या शूद्रोऽजात ॥

ब्राह्मण, भुजाओं से राजा या क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य तथा पैरों से शूद्र पैदा हुए हैं। भारतीय समाज की संरचना के विषय में देने वाला सम्भवतः यह प्रथम मंत्र था। ऋग्वेदकालीन भारतीय समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों का अस्तित्व एक-दूसरे के सदृश्य था। प्रारंभिक वर्णव्यवस्था कर्म पर आधारित थी। अपनी शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं के अनुकूल किसी की वर्ण का सदस्य बनाया जा सकता था। भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत चातुवर्ण का विकास देश, काल और परिस्थिति के अनुसार संवर्द्धित होता रहा है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र प्राचीन काल से लेकर 12वीं सदी तक विभिन्न परिवर्तनों और स्थितियों से होकर विकास की ओर प्रवृत्त हुए। उनके विकास का आधार धर्म था जो उनके शरीर मन और मस्तिष्क तीनों से संबंध था। प्रत्येक व्यक्ति से सामान्य धर्म की अपेक्षा की जाती थी जो उसके आचरण और मन से आबद्ध होता है। मनुष्य की सचरित्रता और सदाचारिता भी उसके गुणधर्म से सम्बन्धित थी। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, इन्द्रियविग्रह (ब्रह्मचर्य), अपरिग्रह, दान और दया मनुष्य का सामान्य धर्म था जो उसकी नैतिकता से परिचालित होता था। सामाजिक व्यवस्था का आधार इसीलिए कर्म भी रहा था जो धर्ममूलक और आचारमूलक दोनों था। कालान्तर में ऋग्वेद द्वारा स्थापित वर्णव्यवस्था संबंधी विचारों से भारतीय समाज व्यवस्था को श्रेणीगत समाज व्यवस्था में परिवर्तित किया गया। परवर्ती काल में वर्ण से जाति का विकास हुआ।

भारतीय जाति प्रथा के विकास के साथ इस देश का सहस्रों वर्षों का इतिहास जुड़ा है प्रत्येक भारतीय जाति व्यवस्था से उत्प्रेरक, प्रभावित एवं नियंत्रित है तथा इसके विशाल आयामों से सन्निहित है। उ. वैदिक काल से ही जाति शब्द का व्यवहार जन समुदाय के लिए होने लगा छठीं शताब्दी ईसा पूर्व भारतीय समाज को नये प्रतिरोधों चुनौतियों और परिवर्तनों का सामना करना पड़ा था। पारस्परिक भारतीय समाज जो हिन्दू धर्म और उसके गूढ़ यज्ञीय कर्मकाण्डों के निर्देशों से आप्लावित था वह तत्कालीन समाज में हुई नई वैचारिक क्रांति के तत्वों के निर्देशन, नवीन अनुष्ठानों के आरोपण और नूतन उपासना-विधियों के अनुकरण से निमज्जित हुआ।

बौद्ध युग में सामाजिक विभाजन चातुवर्ण पर आधारित था - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र। तत्कालीन जीवन में वर्ण व्यवस्था ऊँच-नीच की भावना से ग्रस्त होकर समाज को जर्जर कर रही थी। बुद्ध ने वर्ण-व्यवस्था की आलोचना की। बौद्ध मत का प्रसार हिन्दू धर्म और आचरण पद्धति के सर्वथा विरुद्ध था तथा हिन्दू धार्मिक क्रियाओ और व्यवहारों पर कठोरतम आघात था। निश्चय ही बौद्ध धर्म की दार्शनिक पद्धति उपनिषदों के तत्वों और उनके आध्यत्मिक विवेचन से अनुगृहीत थी तत्कालीन समाज की साधारण जनता को इस मतों ने नवीन आशा और विश्वास प्रदान किया। कठोर हिन्दू धार्मिक अनुष्ठानों, कठिन, कर्मकाण्डों और जटिल याज्ञिक क्रियाओं से सतत् समाज ऊब चुका था तथा उसके सदस्य असंतुष्ट और विकल हो चुका था। हिन्दू समाज अब नियंत्रित उन्मुक्त और स्वतंत्र वातावरण की अपेक्षा करता था।

बौद्ध साहित्य से विदित होता है कि वर्णव्यवस्था को निर्धारित करने का आधार मनुष्य का था। उसका आचार विचार एवं उसका सात्विक नैतिक जीवन था। यह सत्य है कि उस युग में वर्णो का भेदभाव अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी थी। ऊँच-नीच की भावना सब में घर कर गयी थी। बौद्ध काल में जन मानस के हृदय में यह धारणा घर कर गयी थी कि स्वयं स्रष्टा ने ही समाज का विभाजन चतुवर्ण में कर दिया है ऐसे ही समय भारत भूमि में एक महान धर्म प्रवर्तक तथा समाज सुधारक के रूप में भगवान बुद्ध का जन्म हुआ। उन्होंने तत्कालीन समाज में नवीन

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

धार्मिक एवं सामाजिक चेतना को जन्म दिया और वर्ण और जाति से संबद्ध परम्परागत धारणाओं को नितात निःसार एवं निरर्थक घोषित किया। उनका कथन था - न जच्चा बसलो होती न जच्चा होती ब्राह्मणो कम्मनो वसलो होति कम्मानु होति ब्राह्मणो।।

अर्थात् जन्म से ही कोई नीच नहीं होता और जन्म से ना कोई ब्राह्मण होता है। कर्म से ही कोई नीच होता है कर्म से ही ब्राह्मण होता है। जिस प्रकार बादल बिना किसी भेदभाव से सर्वत्र वर्षा करते हैं वैसे ही तथागत भी सभी पर समान अनुकम्पा करते है। उनका शिक्षण इतना पवित्र था कि कुलीन तथा अकुलीन, धनी एवं निर्धन में भेदभाव नहीं करते थे। उनकी शिक्षायें उस जल की तरह है जो बिना किसी भेदभाव से स्वच्छ करता है। बुद्ध के जाति संबंधी विचारों का संग्रह अम्बट्ठ सुत्त वासेट्ठ सुत्त, वसल सुत्त, सोदण्ड सुत्त आदि में मिलता है। यह विरोध जन्मना के लिए था। कर्मणा के लिए नहीं। रूढ़िगत परम्परा और ऊँच-नीच की भावना का उन्होंने सर्वदा खण्डन किया तथा सदाचार और सच्चरित्रता का समर्थन किया। उस युग में व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सम्मान उसके आचरण से माना गया। अपने सत्कर्मो, सदाचार और सचरित्रता से ही उच्च हो सकता था। सबको समान दृष्टि से स्वीकार करने की भावना बुद्ध की अपनी थी और इसी आधार पर उन्होंने उच्च पद प्राप्त ब्राह्मण को कर्म के आधार पर ही स्वीकार करने का प्रयास किया। बौद्ध युग में वर्णो के निर्दिष्ट कर्म पर भी आघात किया तथा यह माना गया कि किसी कर्म पर किसी विशेष वर्ण का एकाधिकार नहीं। उद्दालक जावक में ब्राह्मण पुरोहित के मुख से यह बात कहलाई गयी है कि क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, चाण्डाल तथा पक्कुस सभी में सत्कर्मों द्वारा निर्वाण प्राप्त करने की समान क्षमता होती है। बुद्ध का कहना है कि मनुष्य न तो जन्मना चाण्डाल होता है और न ब्राह्मण अन्तोगत्वा मानवमात्र में समता है विभेद तो बाह्य एवं कृत्रिम है। उन्होंने तार्किक रूप से कहा क्या उच्च वर्ण में जन्म पाने से किसी व्यक्ति विशेष के लिए मृत्यु का द्वार बंद हो सकता है? ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कोई भी तो अजर अमर नही है। सभी का अन्त एक ही है, फिर हम क्यों किसी को जन्मना श्रेष्ठ मानें और दूसरे को हेय दृष्टि से देखें? क्या किसी वर्ण या जाति विशेष में जन्म पाने से ही भौतिक ऐश्वर्य की उपलब्धि और मरणोपरान्त स्वर्ग सुख-दुख निश्चित रहता है? क्या जाति के बल पर ही मनुष्य पाप के लिए दोषी नहीं अथवा अपराध के लिए दण्ड का भागी नहीं होता। इस प्रकार विभिन्न तर्कों द्वारा भगवान बुद्ध तथा उनके अनुयायियों ने वर्ण तथा जाति व्यवस्था को व्यर्थ बतलाने की चेष्टा की। इन्होंने सामाजिक उन्नति के लिए कई प्रकार से बल दिया जैसे हिंसा, निर्दयता, परायी स्त्रियों के साथ दुराचार, चुगलखोरी, कड़वी भाषा तथा प्रलाप के विरुद्ध थे। इनकी मान्यता थी कि प्रत्येक गृहस्थ को अपने माता-पिता, आचार्य पत्नी, मित्र, सेवक और साधु सन्यासियों की सेवा करनी चाहिए। वैर से वैर नहीं मिटता है। वैर को प्रेम से मिटाया जा सकता है। क्रोध को अक्रोध से जीतना चाहिए। दूसरों के दोषों को देखने की आदत नहीं रखना चाहिए। मन, वचन, कर्म को संयत रखते हुए जीवन यापन करना चाहिए। कुछ विद्वानों का मानना है कि बौद्ध धर्म वास्तव में धर्म नहीं अपितु आचारशास्त्र है। इनका धर्म व्यवहारिक धर्म था। यह मनुष्य की उन्नति में सहायक तो था ही साथ ही इसमें किसी यांत्रिक कर्मकाण्ड, सूक्ष्म दार्शनिकता तथा पौराणिक अन्ध मान्यता के ऊपर न था। इसका आधार कल्याण मात्र था। भगवान बुद्ध ने सुनीत नामक व्यक्ति को उपदेश देते हुए कहा कि हमारे सद्धर्म मार्ग में जाति पाति का कोई भेदभाव नहीं है। तुम भी हमारे भांति ही एक मानव हो। केवल लोभ, घृणा और ईर्ष्या ही हमें अपवित्र कर सकते हैं। सम्बोधि के मार्ग में जाति का कोई स्थान नही है, जिस प्रकार गंगा, यमुना इत्यादि नदियां सागर में जाकर मिलती है तो उनका पृथक अस्तित्व क्या है यह पता लगाना कठिन हो जाता है ऐसे ही जो व्यक्ति सद्धर्म अपना लेता है उसका जन्म जाति दूर जाती है। भले ही वह ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अथवा अस्पृश्य जाति में ही क्यों न जन्मा हो। सील वीमंस जातक की गाथा में उल्लेख मिलता है कि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा पुक्सक सभी को इस लोक में धर्माचरण करने से देवताओं में समान होते हैं। न वेद न जाति और बन्धु ही परलोक में सुखदायक होता है।

जातिवाद के खण्डन में व्यवहारिक तौर पर बुद्ध कितने सफल हुए? बौद्ध साहित्य का अध्ययन यह बताता है कि जातिवाद के खण्डन में भगवान बुद्ध को केवल भिक्षु संघ में ही सफलता मिली। यह निर्विवाद सत्य है कि बौद्ध संघ में जाति वाद जैसी कोई चीज नहीं थी। बुद्ध ने भिक्षु संघ को संबोधित करते हुए कहा कि हे भिक्षुओं जिस प्रकार महानदियां सागर में मिलकर एकाकार हो जाती है उसी प्रकार चारों वर्णों के सदस्य तथागत द्वारा प्रतिपादित धर्म नियमानुसार प्रव्रजित होकर यह भूल जाते हैं कि हमारा अमुक वर्ण था, अमुक वंश था, उनकी एकमात्र संज्ञा रह जाती है 'श्रमण'। बौद्ध संघ में ऊँच-नीच की भावना पनपने नहीं पाती थी। यही कारण था कि नापित पुत्र होने पर भी उपालि बुद्ध के प्रिय शिष्यों में से थे तथा संघ के प्रधान होने का श्रेय भी उन्हें मिला। बौद्ध संघ में भिक्षुओं का जीवन सामुदायिक था और खान-पान में स्पृश्यास्पृश्य का भेदभाव नहीं था। भिक्षुओं की कोई जाति नही थी। परन्तु भगवान बुद्ध भिक्षुओं में जाति संबंधी धारणाओं को सर्वथा निर्मूल करने में सफल न हो सके। तत्कालीन समाज में जातिवाद की भावना इतनी प्रबल थी कि सभी भिक्षुओं के मस्तिष्क से उन्हें न निकाला जा सका। अंगुत्तर निकाय तथा उदान से पता चलता है कि कतिपय भिक्षु अपने को ब्राह्मण भिक्षु, उच्चकुलोद्भव भिक्षु इत्यादि की संज्ञाओ से संबोधित किया जाना पसंद करते थे।

तित्तर जातक में कहा गया कि भगवान बुद्ध ने जब भिक्षुओं से यह प्रश्न किया कि उत्तम आवास, उत्तम जल और उत्तम भोजन के अधिकारी कौन हो सकते हैं तो उन्हें भिक्षुओं से भिन्न उत्तर मिले जातिवाद के विचार यद्यपि संघ में तो सफल रहे परन्तु यह समाज में प्रभावशाली न हो सके। उनके द्वारा प्रतिपादित नवीन सामाजिक विचारधारा का तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर कोई प्रभाव न पड़ा। समाज का संगठन यथावत बना रहा। उपासक के रूप में बौद्ध धर्म स्वीकार करने का अर्थ अपनी जाति का त्याग कदापि नहीं था। बौद्ध होकर भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ही बने रह जाते थे। इसका कारण यह था कि जो सामाजिक प्रथा प्रबल थी उसका प्रतिकार कठिन था। उनका वास्तविक विरोध उसके तत्कालीन रूढ़ रूप से था।

दीर्घनिकाय के अम्बट्ठ सुत्त एक शिक्षित ब्राह्मण था। वह अपने गुरु के आदेश पर बुद्ध के पास यह जानने गया कि बुद्ध को समाज में मान सम्मान प्राप्त है वे उसके वास्तविक अधिकारी हैं या नहीं। अम्बट्ठ को ब्राह्मण जाति का होने का बहुत घमण्ड था। बुद्ध ने अम्बट्ठ का घमण्ड तोड़ने के लिए उसे बताया कि उसकी वंशावली का आरम्भ शाक्यों की एक दासी के पुत्र से हुआ था। गौतम बुद्ध ने उसे बताया कि यदि उसकी वंशावली का आरम्भ शाक्यों की एक दासी के पुत्र से हुआ है। वह कहते हैं नैतिक तौर पर श्रेष्ठ व्यक्ति का वाह्य व्यवहार उसके आंतरिक ज्ञान का परिणाम होता है और विद्या तथा चरण से युक्त ऐसा व्यक्ति मनुष्यों और सबों में श्रेष्ठ होता है। मधुर सुत्त में आर्थिक सम्पन्नता जन्म द्वारा प्राप्त की गयी जातीय श्रेष्ठता को परास्त कर सकती है।

शूद्र उपालि व अन्य लोग बुद्ध के पास इकट्ठे होकर दीक्षा लेने पहुँचे तो बुद्ध ने उपालि को शिक्षा पहले दी ताकि शाक्यों का जन्म व जातिनुमा घमण्ड दूर किया जा सके। कोई भी बौद्ध भिक्षु या भिक्षुणी भिक्षायाचना के समय लोगों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करता था तथा किसी भी गृहस्थ के यहां भोजन की याचना कर सकता था या आमंत्रित किये जाने पर उसके घर पर भोजन ग्रहण कर सकता था।

इस प्रकार बुद्ध और धम्म की सभी शिक्षायें शुद्ध आचरण के आत्मबल पैदा कर वैदिक धर्म और उसकी लोभ लिप्सा से लिप्त विषमतामूलक व्यवस्था के उन्मूलन के लिए थीं। बौद्ध धर्म शीघ्र ही सरल जनवादी आन्दोलन बन गया और उसने सम्पूर्ण समाज को आन्दोलित कर दिया।

वास्तव में बुद्ध ऊँच-नीच की भावना के प्रबल विरोधी थे। ऐसी भावना की प्रबलता समाज के लिए घातक होती। अतः समाज सुधारक के रूप में उन्होंने इसका विरोध किया। वे परम्परागत समाज के विरोधी न थे परन्तु उसकी त्रुटियों को दूर कर उस दुख का उन्मूलन करना चाहते थे जिसमें किसी जाति विशेष में जन्म ग्रहण करने के कारण ही मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास तथा उसकी सफलता का मार्ग अवरुद्ध हो जाए। व्यवहारिक रूप में तत्कालीन सामाजिक संगठन में उनके द्वारा जातिवाद का खंडन यहीं तक था।

संदर्भः-

1. मिश्र जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ. 763
2. ऋग्वेद 10.90.12
3. मिश्र जयशंकर, पृ. 32
4. सिंह मदनमोहन, बुद्धकालीन समाज और धर्म, पृ. 12
5. मिश्र जयशंकर, पृ. 80
6. भिक्षु धर्मरक्षित (अनु.) सुत्तनिपात, पृ. 30, सुत्त निपात 1.7.21, 03.09.57
7. सीलवंश जातक, सं. 86
8. सिंह मदनमोहन, बुद्धकालीन समाज और धर्म, पृ. 12
9. महावग्ग 1/15/1
10. सिंह मदनमोहन, बुद्धकालीन समाज और धर्म, पृ. 13
11. वेरेन धम्मपद
12. जातक तृतीय गाथा 68-69, पृ. 194-95
13. चुल्लवग्ग 9/1/4
14. सिंह मदनमोहन, बुद्धकालीन समाज और धर्म, पृ. 15
15. अंगुत्तर निकाय 1, पृ. 19
16. उदान, पृ. 115
17. सिंह मदनमोहन, बुद्धकालीन समाज और धर्म, पृ. 14
18. दीर्घ निकाय I, 87 FF
19. दीर्घ निकाय I, 99
20. मज्झिम निकाय II, 83-90
21. विनयपिटका, 182, BU I.61.1
22. विनयपिटका, 184-85, IV 80.177

वर्ष 11, अंक 39, अक्तुबर-दिसंबर 2021

मूल्य
₹ 150/-

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

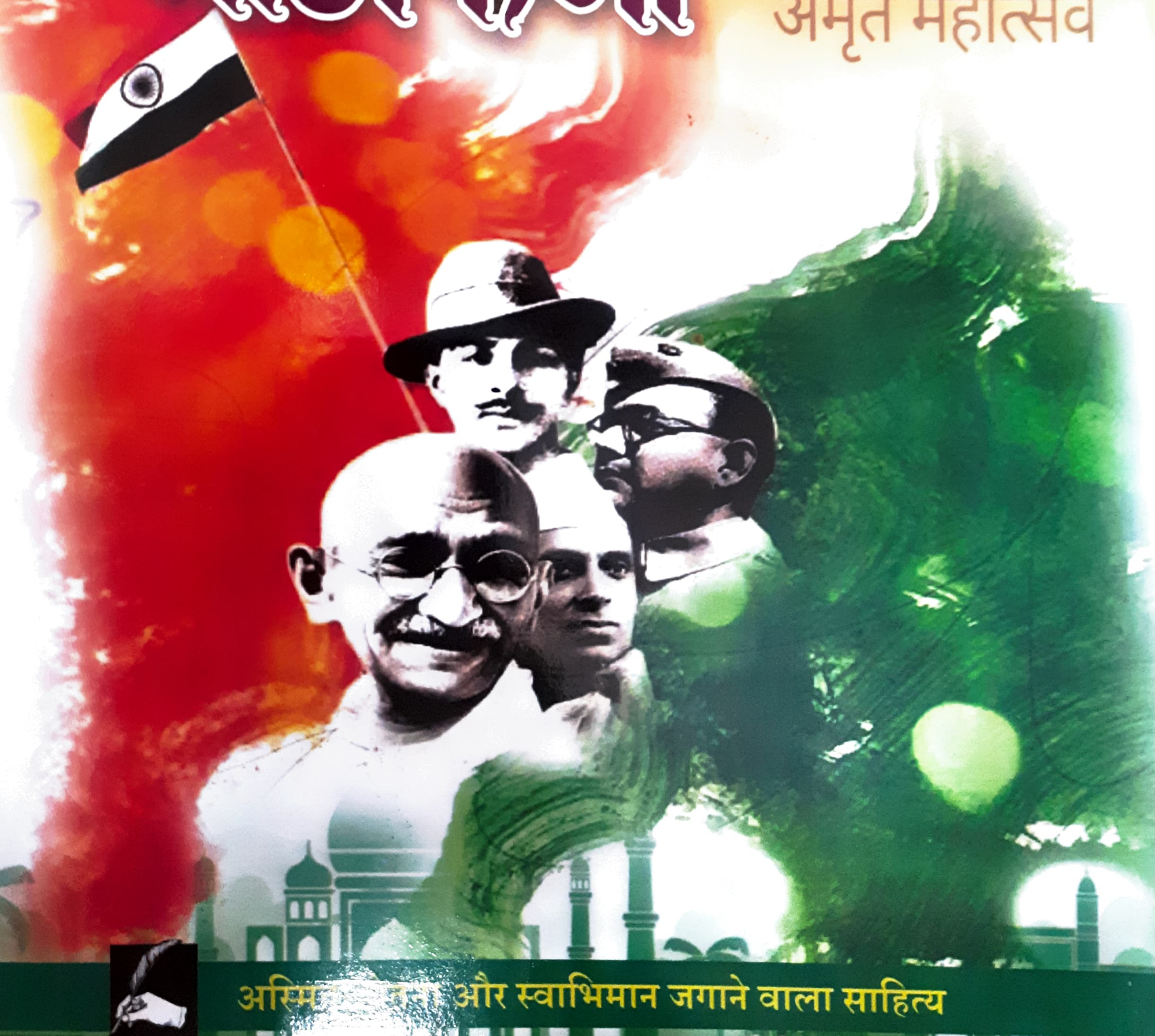

अस्मि[illegible] और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

संपादक
सपना सोनकर

सह-संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. एन. पी. प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक
प्रोफेसर विजय कुमार रोडे

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष 11, अंक 39, अक्तुबर-दिसंबर 2021

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह, रीवा (मध्यप्रदेश)
डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
प्रोफेसर दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)
डॉ. उमाकांत हजारिका, शिवसागर, (असम)
प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. दादासाहेब सालुंके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)

मुख पृष्ठ- डॉ.आजम शेख, मैत्री ग्राफिक्स , सावंगी (ह),औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467

सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रूपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक AC8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001,Branch -SIDHI(NIRAT Prasad Prajapati

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक पूर्णतय: अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। **नागफनी'** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वंय के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **"नागफनी"** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीआर्डर बैंक/चेक/ बैंक ट्रांसफर /ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

लेख भेजने के लिए Mail ID: nagfani81@gmail.com

Website: http:naagfani.com

नागफनी

अनुक्रम

पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय..... 01

साहित्यिक विमर्श

1. इक्कीसवीं सदी की कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ- डॉ.पठान रहीम खान 02-04
2. उपनिवेशवाद के आईने में ' मय्यादास की माडी' - डॉ.सुमा एस. 05-06
3. विष्णु प्रभाकर के ध्वनि नाटकों का शिल्पगत अध्ययन-डॉ.कल्पना मौर्य 07-09
4. अप्रस्तुत योजना और छायावादी कविता -डॉ.समय लाल प्रजापति 10-11
5. विमर्शों में उलझता समकालीन साहित्य व समाज- डॉ.उर्विजा शर्मा 12-13
6. अज्ञेय की लम्बी कविता : 'असाध्य वाणी'-डॉ.सचिन कदम 14-15
7. समकालीन हिन्दी कविताओं में पर्यावरण चिंता-डॉ.सुनील पाटील 16-18
8. दामोदर मोरे की कविताओं में अम्बेडकरवादी चेतना-डॉ.शिराजोद्दीन 19-21
9. आम आदमी का उपनिषद: राम चरितमानस-डॉ.उमा वाजपेयी/अनीता मिमरोट 22-24
10. धूमिल की कविताओं में पारिवारिक चित्रण- आरती सिंह राठौर/ डॉ.रेशमा अंसारी 25-26
11. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में सामाजिक चित्रण- डॉ.सुशीला 27-29
12. सुशीला टाकभौरे के साहित्य में संघर्ष - डॉ.मंजुला चौहान 30-31
13. मंजुल भगत की कहानियों में बदलते पारिवारिक संबंध- सुनिता यादव 32-33
14. 'सभा पर्व ' उपन्यास में चित्रित जीवन और समाज-डॉ.मोहम्मद फीरोज खान 34-37
15. मुस्लिम समाज में चित्रित असमानता की भावना : ' कुठाँव' उपन्यास के संदर्भ में- शेख उस्मान 38-40
16. बाबुराव बागुल कृत ' विद्रोह ' कहानी में विद्रोही चेतना- डॉ.भानुदास आगेडकर/ डॉ.अरूण सोनकांबले 41-43
17. समकालीन कविता का अस्तित्व वादी रूप और मूल्यबोध-डॉ.मार्तण्ड कुमार द्विवेदी 44-48
18. 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में आत्मसंघर्ष एवं पवित्र प्रेम की अभिव्यंजना- डॉ.गौकरण जायसवाल 49-52
19. हिंदी और कन्नड मुस्लिम उपन्यासकारों का साहित्यिक योगदान- मेहराज बेगम सैयद/डॉ.राजु बागलकोट 53-55
20. लोककथा का मौलिक सर्जनात्मक प्रयोग: सींगधारी नाटक- ईषा वर्मा 56-57

दलित विमर्श

1. 'गोदान' के मिथ का विरोधी उपन्यास रूपनारायण सोनकर का उपन्यास 'सुअरदान'-प्रो.ओम राज 58-62
2. दलित,स्त्री और आदिवासी साहित्य की वैचारिकी-डॉ.सविता शर्मा 63-65
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में वेदना और विद्रोह-डॉ.जयरामन पी.एन. 66-68
4. आधुनिक हिन्दी कहानियों में दलित चेतना- डॉ.विनय कुमार चौधरी 69-70
5. रूद्र प्रयाग जनपद में दलितों की स्थिति में परिवर्तन का ऐतिहासिक अध्ययन- प्रभाकर पाण्डेय 71-73
6. 'संघर्ष 'कहानी संग्रह में चित्रित दलित जीवन-डॉ.पी.महालिंगे 74-76
7. दलित जीवन की कथा ' अपने -अपने पिंजरे'- डॉ. ओम प्रकाश 77-79
8. हिंदी दलित आत्मकथाओं में विद्रोही स्वर- डॉ.अम्बर कुमार चौधरी 80-82
9. 'सद्गति' कहानी का फिल्मी रूपान्तरण : एक अध्ययन-डॉ.धीरेन्द्र कुमार 83-86
10. समकालीन हिंदी कविता में दलित प्रतिरोध के स्वर-मुकेश कुमार मिरोठा 87-89
11. 'अब और नहीं ..' में अभिव्यक्त दलित कविता की सामाजिक संस्कृति-शिवपाल 90-91

स्त्री विमर्श

पृष्ठ क्रमांक

1. 'स्त्री मन की दास्तान : 'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य-डॉ.युवराज माने 92-93
2. 'उन्नदारी 'में स्त्री संघर्ष एवं चेतना-डॉ.प्रेम चन्द भार्गव 94-95
3. हिन्दी की आत्मकथाओं में नारी विमर्श- डॉ.निशा पटेल 96
4. 'कोरजा': स्त्री जीवन की त्रासदी का आख्यान-मकसूद खान 97-99
5. स्त्री विमर्श और भारतीय समाज- अजीत कुमार राय 100-101
6. हिन्दी कथा साहित्य में नारी विमर्श- डॉ.सजिना पी.एस. 102-103
7. एक औरत होकर मैंने महसूस किया-रश्मि नरताम 104-106
8. महिला सशक्तिकरण हेतु कल्याणकारी योजनाएँ- योगाशन कचौले पाराशर 107-108
9. मामनि रयसम गोस्वामी की कथा साहित्य में चित्रित विधवा नारी जीवन- डॉ.मनिका शइकीया 109-110
10. मनीषा कुलश्रेष्ठ के 'कठपुतलियाँ' कहानी-संग्रह में चित्रित स्त्री- प्रियंका चाहर 111-112

आदिवासी विमर्श

1. 'बंजारा लोकगीतों में लोक विश्वास-डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम 113-114
2. घुमंतू जनजाति के परिवार और संस्कृति बदलता स्वरूप: डॉ.मनोहर येरकलवार 115-117

विविध विमर्श

1. अध्यापक-अध्यापिकाओं के अध्यापन कौशल को प्रभावित करने वाली मनो-सामाजिक दशाओं का तुलनात्मक अध्ययन- डॉ.महेश कुमार शर्मा 118-122
2. उत्तर आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य- डॉ.प्रकाश कोपार्डे 123-127
3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य : मीडिया और हिंदी -सोमनाथ वांजरवाडे 128-129
4. आर्थिक असमानता के परिप्रेक्ष्य में भारत के समावेशी विकास की समीक्षा- डॉ.धीरज कदम 130-133
5. बौध्द धर्म में पर्यावरण संरक्षण : एक अध्ययन-डॉ.नीरजा शर्मा 134-135
6. ऑनलाइन कक्षाओ का छात्रों पर प्रभाव-डॉ.कौशल चौहान 136
7. प्रबंधकीय उपकरण के रूप में बजट और बजटीय नियंत्रण प्रणाली की प्रभावशीलता का अध्ययन (राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम के संदर्भ में) -डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा/ डॉ.विकास सराफ 137-142
8. प्रवासी मजदूरों की त्रासदी: लाल पसीना- डॉ.रीना कुमारी वी.एल. 143-144
09. उपनिषदों में प्राज्ञ का स्वरूप- डॉ.निधि सोनी 145-146
10. प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था -रश्मि यादव/ डॉ.मोहन लाल आर्य 147
11. मातृशक्ति और उत्तराखण्ड राज्य गठन आंदोलन: एक ऐतिहासिक अध्ययन- प्रभाकर पाण्डेय 148-150
12. कोरोना महामारी के दौर में बढती आर्थिक विषमता- डॉ.प्रताप फलफले 151-152
13. किशनगढ राज्य में साहित्यिक परम्परा का विकास- डॉ.अविनाश पारीक 153-155
14. योगदर्शन विमर्श- डॉ.आभा द्विवेदी 156-157
15. भारत में कोविड-19 और खाद्यान्न सुरक्षितता @75- डॉ.समित माहोरे 158-160
16 लघु वनोपज के उत्पादन में वृद्धि हेतु सरकारी निति- सुचेता सिंह 161
17. प्राथमिक शिक्षा में सुधार के लिए सरकार के प्रयास- रीतू रूस्तगी 162-165
18. शैक्षणिक परिसर एवं युवा वर्ग की गतिविधियाँ- शैलेषा नंदुरकर 166-167
19. कश्मीर का लोक नाट्य उर्फ भाण्ड पाथेर- सुनील कुमार 168-173
20. अनुवाद : अतीत और इतिहास - डॉ.संतोष गिरहे 174-175
21. 'सलाम आखरी' उपन्यास में वेश्या विमर्श -डॉ.सुनिता कावळे 176-177

 ISSN-2321-1504 Nagfani No. UTTHIN/2010/34408

बौद्ध धर्म में पर्यावरण संरक्षण : एक अध्ययन

-डॉ नीरजा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सब्बपापस्स अकरणं कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्तपरियोदपनं एवं बुद्धान सासनं।।[1]

...पर्यावरण की उपज है।संसार की सभी वस्तुएं जिन की आवश्यकता मानव को होती ... सभी पर्यावरण में निहित है। मानव की शारीरिक रचना मन स्वास्थ्य पर पर्यावरण का ... अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है ।अर्थात हम जितने स्वच्छ वातावरण में रहेंगे ... ही हमारा तन और मन स्वस्थ रहेगा। वर्तमान विश्व अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा ... आतंकवाद ,पर्यावरण असंतुलन, जैविकीय युद्ध। विश्व का प्रत्येक देश निरंतर अपनी ... को बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। उसके लिए वह नित्य नए-नए परीक्षण(जल, थल, ... कर रहा है। वह अपनी शक्ति को तो अवश्य बढ़ा रहा है परंतु मानसिक रूप से बीमार ... जा रहा है। वर्तमान में भूमंडलीकरण ,नगरीकरण, उदारीकरण, निजीकरण के नाम पर ... विकास की आंधी चल रही है ,यह मानव के लिए सर्वाधिक खतरनाक है। प्रकृति का ... और शोषण कर विकास की नीति मानव के लिए खतरा है ।जब से मानव ने प्रकृति पर ... प्राप्त करने के लिए अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियां अर्जित की तब से ही प्रकृति का ... रूप खंडित होने लगा। वन कटने लगे ,उपजाऊ भूमि पर बहुमंजिला इमारतें बनने ... जंगलों को काट कर बांधने की योजनाएं जैसे अनेकानेक प्रयोग होते रहे हैं जो प्रकृति ... प्रतिकूल नहीं है। इन सब के परिणाम स्वरूप सामान्य जीवन में परिवर्तन आने लगा। ... प्राकृतिक संसाधनों में कमी आई और शनै शनै वायु, जल ,भूमि आदि जो जीवन ... लिए आवश्यक है प्रदूषित होने लगे। मानव और पर्यावरण का प्रारंभ से ही प्रगाढ़ संबंध ... है ।आज विश्व के समक्ष परिस्थिति विज्ञान एवं पर्यावरण अत्यंत जटिल विषय बन गया ... सुख सुविधाओं में विकास एवं तकनीकी विकास के नाम पर हम पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करते जा रहे हैं। मानव एवं पर्यावरण का अन्योन्याश्रित संबंध है। भूमंडलीय तापमान में वृद्धि से प्रदूषण बढ़ रहा है ।इसकी गंभीरता को समझते हुए विश्व के धनी संपन्न देशों ने मिलकर पृथ्वी पर प्राकृतिक संतुलन को बरकरार रखने के लिए पिछले कुछ दशकों से पृथ्वी दिवस का आयोजन करना प्रारंभ किया। 1972 में पर्यावरण संरक्षण का स्टॉकहोम में पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ जिसमें मानवीय पर्यावरण का संरक्षण करने और सुधार करने के दिशा निर्देश दिए गए एवं प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की घोषणा की गई। वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण की जिन समस्याओं से जूझ रहा है उसका एकमात्र सरल एवं सीधा उपाय भगवान बुद्ध के चिंतन में उपलब्ध है। वह एक मनोचिकित्सक के साथ-साथ महान पर्यावरणविद थे। बुद्ध लोकहित में मनुष्य के कल्याण को ही विषय नहीं बनाया बल्कि प्राणी मात्र के संरक्षण के लिए हिंसा करुणा प्रकृति सरक्षण एवं परिस्थिति विज्ञान के नए आयामों की ओर भी सक्रियता से कार्य किया। पेड़ पौधे, नदी, सरोवर, वन ,उपवन ,पर्वत श्रृंखला आदि की स्वच्छता के लिए उन्होंने क्रांतिकारी अभियान चलाया। भगवान बुद्ध के जन्म से बोधि प्राप्ति तक प्रथम उपदेश देने तक महान समर्थक एवं प्रणेता रहे हैं ।आज विश्व जिस पर्यावरण सुरक्षा को लेकर जूझ रहा है उसका समाधान बुद्ध ने 2600वर्ष पूर्व ही दे दिया था। महात्मा बुद्ध जीवन पर्यंत अपने विचारों को जनसामान्य के बीच अभिव्यक्त करने में सक्रिय रहे। प्रकृति की गोद में सभी शिक्षाओं के अनगिनत उदाहरण हैं। बुद्ध की जीवन शैली पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति तादम्य का पर्याय थी। उनका जन्म से मृत्यु पेड़ पौधे और वन्य जीव जंतु तथा वन संपदा में के मध्य संपन्न हुई। पर्यावरण के प्रति यह संवेदनशीलता गौतम बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के पहले विभिन्न पशु पक्षियों के रूप में उनके विभिन्न योनियों में जीवन यापन में दृष्टव्य है। प्रकृति की गोद में मन शांत रहता है इसीलिए महान योगी उद्यान,पर्वत शिखर ,एकांत गुफाएं ,नदी जैसे स्थान पर ही ध्यान कर निर्माण का साक्षात्कार करते हैं। प्रकृति से वे प्रेरणा लेते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य एकांत ध्यान करते हुए जो आनंद प्राप्त होता ,वैसा आनंद कहीं और नहीं। भगवान बुद्ध कहते हैं माता जिस प्रकार अपनी जान की परवाह न कर अपने इकलौते पुत्र की रक्षा करती है उसी प्रकार बिना बाधा वैर और शत्रुता से समस्त संसार के प्राणी मात्र के प्रति असीम मैत्री भाव बढ़ाना चाहिए।यथा:-

माता यथा नियं पुत्तमायुसा एकपुत्तमनुरक्खे।
एवम्पि सब्बभूतेसु,मानसं भावये अपरिमाणं।।
मेत्तञ्च,सब्ब लोकस्मिं,मानसं भावये अपरिमाणं।
उद्धं अउचो च तिरियञ्च,असम्बाधं आवेरमसपत्तं।।

भगवान बुद्ध बहुत बड़े पर्यावरणविद् थे। उन्होंने छठी शताब्दी ईसा पूर्व पर्यावरण के महत्व को अपनी अपनी शिक्षाओं के माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचाया ।यद्यपि बुद्ध के समय पर्यावरण समस्या आज की तरह विषम नहीं थी ,तथापि मानव ने प्रकृति का अनावश्यक दोहन प्रारंभ कर दिया था। बौद्ध संस्कृति नगरीय संस्कृति थी। यदि आज हम बुद्ध के पर्यावरण संरक्षण की सीख का अनुसरण करें तो हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ व स्वस्थ बना सकते हैं। बुद्ध ने लोकहित में मनुष्य के कल्याण को ही विषय नहीं बनाया बल्कि प्राणी मात्र के संरक्षण के लिए हिंसा ,करुणा ,प्रकृति संरक्षण एवं परिस्थिति विज्ञान के नए आयामों की ओर भी सक्रियता को जाहिर रखा। पेड़- पौधे, नदी ,झील, सरोवर, वन, उपवन ,पर्वत श्रृंखला आदि की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने क्रांतिकारी अभियान चलाया ।बौद्ध वाङ्मय में पर्यावरण के विभिन्न आयामों जैसे वन ,उपवन ,जंगल संपदा, वृक्षारोपण, सरोवर, नदी ,झील, विशाल जलाशय, चारागाह, उद्यान आदि पर प्रकाश पड़ता है। महात्मा बुद्ध का संपूर्ण जीवन पर्यावरण के विषयों से ओतप्रोत है। महात्मा बुध का जन्म लुंबिनी वन में हुआ। उनके महाभिनिष्क्रमण से लेकर राजगृह तक की यात्रा में जलाशयों सरोवरों, उद्यानों ,वनों उपवनों, पर्वत मालाओं की छवि से परिचय होता है । गौतम बुद्ध को बोधि की प्राप्ति पीपल वृक्ष की छाया में प्राप्त हुई । निरंजना नदी में उन्होंने अपना भिक्षा पात्र धोया ।बुद्ध धम्मचक्रप्रवर्तन (प्रथम उपदेश)सारनाथ की सुरम्य प्राकृतिक छटा के बीच दिया । बोधिप्राप्ति के पश्चात उनका संपूर्ण जीवन प्रकृति की गोद में व्यतीत किया। धम्मचक्र प्रवर्तन के प्राकृतिक प्रांगण में गंधमादन पर्वत समूह भी था ,जो सात पर्वत श्रृंखला से विभूषित था तथा इन सात श्रृंखला के बीच में अनोतत्त झील थी। बुद्ध जीवन पर्यंत गांव- गांव, नगर- नगर ,जनसाधारण को धर्म उपदेश देते रहे ।" करतल भिक्षा एवं तरुतल वास" उनके जीवन का आदर्श था । बुद्ध का महापरिनिर्वाण कुशीनगर के साल वन में हुआ । दो विराट साल के वृक्षों के बीच में बुद्ध ने अंतिम सांस ली। बुद्ध की जीवन शैली पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति तादाम्य का पर्याय थी ।उनका जन्म ,उनका बुद्धत्व एवं उनका निर्वाण पेड़ पौधों और वन्य जीव जंतु और वन संपदा के बीच ही हुआ। पर्यावरण के प्रति यह संवेदनशीलता गौतम बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के पहले विभिन्न पशु पक्षियों के रूप में उनके विभिन्न योनियों में जीवन यापन में दृष्टव्य है। पर्यावरण की स्वच्छता हेतु बुद्ध ने चार आर्य सत्य ,अष्टांगिक मार्ग ,ब्रह्म विहार एवं प्रतीत्यसमुत्पादवाद के माध्यम से लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया । बुद्ध द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों द्वारा मानव विश्व के प्राणियों में मैत्री, करुणा ,अहिंसा एवं शांति का वातावरण उपस्थित कर सकता है एवं विश्व में दुख संतप्त प्राणियों में सद् व्यवहार एवं समानता की भावना स्थापित कर पर्यावरण को संतुलित रख सकता है। वृक्ष मानव को जीवन प्रदान करते हैं इसलिए प्राचीन काल से वृक्षों को पवित्र मानकर एवं पेड़ पौधों की पूजा के माध्यम से उनकी रक्षा की गई है ।परंतु वर्तमान में व्यक्ति आधुनिकता एवं सुविधाओं के लिए वृक्षों को ही काट रहा है। वायु मानव के लिए प्रकृति का अनमोल वरदान है जिसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते ।संयुक्त निकाय में बुद्ध ने वृक्षारोपण पर जोर देते हुए कहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को वृक्ष लगाने चाहिए, नदियों पर पुल बनाने चाहिए ।यात्रियों के लिए धर्मशाला बनाने वाले

प्रपात बनाकर जल पिलाने की व्यवस्था करने वाले तथा कुआं खुदवाने वाले पुरुषों के पुण्य बढ़ते हैं यथा :-

आरामरोपा वनरोपा ,ये जना सेतु कारका।
पपञ्च उदापानञ्च,ये ददन्ति उपस्सयं।।
तेसं दिवा च रत्तो च,सदा पुञ्ञं पवड्ढति।
धम्मट्ठा सीलसम्पन्ना,ते जना सग्गगामिनो ति।।'

बुद्ध वृक्षों को काटने पर पाचित्तिय का दोष लगता है। उन्होंने कई अवसरों पर वृक्ष, तृण ,बीज आदि को नष्ट नहीं करने का उपदेश दिया और कहा जो भी भिक्षु इस दुष्कृत्य को करता है वह पाचित्तिय अपराध से आपन्न हो जाता है"[10] उदाहरण -महार्घवृक्ष को काटने मात्र पर पाराजिक नामक अपराध से आपन्न हो जाता है ।यथा-महग्घरुक्खे छिन्नमत्ते पाराजिक।[11] 56 वें पाचित्तिय में कहा गया है कि जरूरत ना होने पर अगर कोई निरोगी भिक्षु तापने की इच्छा से आग जलाए अथवा जलवाये तो तो उसे पारित्तिय है।

ये पन भिक्खु अगिलानो विसिब्बनापेक्खो
जोतिं समादहेय्य वा समादहापेय्य वा पाचित्तियं ति।[12]

वनस्पति एवं जैविक प्राणियों के संरक्षण हेतु उन्होंने भिक्षुओं के लिए वर्षावास की अनुमति प्रदान की अर्थात वर्षा के समय भिक्षु एक ही विहार में रहेंगे ।वे विचरण नहीं करेंगे। यह इसलिए किया कि अकारण हरे तृणों का मर्दन ना हो एवं जीव,वृक्ष, वनस्पति को कष्ट ना हो ।यथा:-

इमे पन समणा सक्य पुत्तिया हेमान्तम्पि गिम्हाम्पि वस्सम्पि चारिकं चरन्ति,हरितानि तिणानि सम्मद्दन्ता एकिन्दियं
ज ीवं विहेठेन्ता,बहू खुद्दके पाणे संघातं आपादेन्ता'ति।[13]

वृक्षारोपण वृक्षों की सुरक्षा द्वारा वायु को शुद्ध और स्वच्छ रखने की ही बात बुद्ध ने नहीं की वरन जल की पवित्रता पर भी उतना ही ध्यान दिया।मानव अपने पेड़ पौधों एवं जल से ही पोषक तत्व ग्रहण करते हैं।अत: जल भी जीवन के लिए आवश्यक है।अत: समय-समय पर जल प्रदूषण को बचाने के लिए उन्होंने उपदेश दिए। उदाहरणार्थ सेखिय धम्म के अंतर्गत पानी में मल मूत्र त्यागना वर्जित था- न उदके अगिलानो उच्चारं वा पस्सावं व खेलं वा करिस्सामि ति सिक्खा करणीया 'ति।[14] इसके अतिरिक्त जानबूझकर प्राणी सहित जल में तृण या मिट्टी को सींचना अथवा सिंचवाना,[15]"पानी में खेल करना"[16] ,जानबूझकर प्राणी युक्त जल को पीना[17] आदि के उपदेशों द्वारा उन्होंने जल प्रदूषण को रोकने का प्रयास किया निर्मल एवं स्वच्छ जल, स्वच्छ वातावरण में ही संभव है अतः निर्मल एवं स्वच्छ जलाशय की भी प्रशंसा की।

यथापि रहदो गम्भीरो,विप्पसन्नो अनाविलो।
एवं धम्मानि सुत्वान,विप्पसीदन्ति पण्डिता।"[18]

इसके अतिरिक्त दीर्घ निकाय में भी शुद्ध जल पर जोर दिया गया है। वायु और जल प्रदूषण के अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण को भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना है।मानसिक विकास के लिए शांत वातावरण अत्यंत आवश्यक है। बुद्ध .शांत निर्मल वातावरण के पक्षधर थे। इसका उदाहरण दीर्घ निकाय में मिलता है जब पोट्ठपाद परिव्राजक दूर से ही भगवान को आते देख कर अपनी परिषद को संबोधित करता है -

अप्पसद्दा भोन्तो होन्तु,मा भोन्तो सद्दमकत्थ।अयं समणो गोमतो आगच्छति।अप्पसद्दकामो खो सो आयस्मा अप्पसद्दस्स वण्णावादी।अपपेव नाम अप्पसद्दं परिसं विदित्वा उपसंकमितब्बं मञ्ञंय्या'ति।"[19]

अर्थात आप सब निशब्द हों। आप सब शब्द मत करें श्रमण गौतम आ रहे हैं। वह आयुष्मान निशब्द प्रेमी,निशब्द प्रशंसक हैं ।निशब्द देख,संभव है इधर आयें।यत्र तत्र वह ध्वनि प्रदूषण को खत्म करने का आदेश देते हैं। जल के समान मृदा प्रदूषण करना भी अपराध की श्रेणी में आता है।[20] निरोगी द्वारा नव अंकु में मल मूत्र करना सेखिय धर्म के विरुद्ध है। न हरिते अगिलनो उच्चारं वा पस्सावं वा करिस्सामी ति सिक्खा करणीया'ति।[21] मृदा प्रदूषित होने से ना केवल जीव जंतु को नुकसान पहुंचता है वरन प्रदूषित मृदा में उगने वाली फसलों में भी विषैले तत्व आ जाते हैं ,अतः गंदगी को इधर-उधर ना फेंक कर एक निश्चित स्थान पर ही गंदगी को फेंकना चाहिए।[22] अत: बौद्ध वाङ्मय से हमें यह ग्यात होता है कि बुद्ध बहुत बड़े पर्यावरणविद थे उन्होंने जनता में स्वच्छ वातावरण के प्रति जागरूकता फैलाई। बुद्ध के समस्त उपदेश पर्यावरण संरक्षण के लिए उपदेश थे।उन्होंने मानव समाज में व्याप्त विकृतियों एवं विसंगतियों को दूर करने का प्रयास किया एवं जनता के समक्ष सरल, सहज,सार्थक विकल्प प्रस्तुत किए। यह एक विज्ञान सम्मत ,तर्कसंगत और व्यवहार की कसौटी पर जांचा परखा विचार व्यवहार है[23] जिसे अपनाकर शांति अहिंसा भाईचारा कायम करके विश्व का कल्याण संभव है और पृथ्वी को विनाश से बचाया जा सकता है। बौद्ध जीवन में प्राणी तथा प्रकृति का वास्तविक समावेशी तत्व मौजूद है।वर्तमान परिस्थितियों में भी बौद्ध धर्म उतना ही प्रासंगिक है जितना छठी शताब्दी ईसा पूर्व था। भगवान बुद्ध के समस्त उपदेश पर्यावरण संरक्षण के लिए उपदिष्ट हैं।वर्तमान में पर्यावरण एवं परिस्थिति विज्ञान की दृष्टि से बौद्ध धर्म एकमात्र ऐसा विचार एवं व्यवहार है जिससे हम पृथ्वी पर आए इस संकट से निपट सकते हैं। मानव समाज में व्याप्त विकृतियों एवं विसंगतियों को हटाया जा सकता है और सहज,सार्थक, वैज्ञानिक ,तर्कसंगत विकल्प अपनाकर शांति अहिंसा भाईचारा कायम करके विश्व का कल्याण संभव है।इस प्रकार हम पर्यावरण संतुलन बना सकते हैं यदि हम बुद्ध के उपदेशों का पालन करें। पर्यावरण की स्वच्छता हेतु बुद्ध द्वारा प्रतिपादित विश्व मैत्री करुणा अहिंसा और शांति का वातावरण आदि सिद्धांत द्वारा मानव के दुख संतृप्त प्राणियों में सद्भावना एवं समानता की भावना स्थापित कर पर्यावरण को संतुलित संतुलित रख सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1.धम्मपद पालि,पृष्ठ36,वि.वि.वि,भाग 56,इगतपुरी1998।

2.प्रसाद रमेश, त्रिपिटक में पर्यावरण, द जर्नल ऑफ दा डिपार्टमेंट आफ बुद्धिस्ट स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, अंक 28,2005,पृष्ठ 212।

3. दास प्रमोदानंद एवं कुमार अमरेन्द्र, बौद्ध चिंतन, भारती प्रकाशन,वाराणसी,2017, पृष्ठ51।

4. पूर्वोक्त, पृष्ठ 52।

5.राजेंद्र राम,"बौद्ध वाग्डमय में पर्यावरण:एक सर्वेक्षण"इन्टरनेशनल बुद्धिस्ट कान्सेन्ट, बोधगया, 2006, पृष्ठ 230

6. उदानभाष्य, पालि बौद्ध सोसायटी पृष्ठ 238।

7.विनय पिटक,महावग्ग पालि पृष्ठ 181,वि.वि.वि,भाग, 98, इगतपुरी,1998

8. प्रसाद रमेश, त्रिपिटक में पर्यावरण, द जर्नल ऑफ दा डिपार्टमेंट आफ बुद्धिस्ट स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, अंक 28,2005,पृष्ठ 212।

9.पाराजिक कण्ड-अट्ठकथा।, पृष्ठ 274,विपश्यना विशोधन,विन्यास, वि.वि.वि,भाग 92,इगतपुरी,1998

10. विनयपिटक पाचित्तिय पालि,वि.वि.वि,भाग 88 इगतपुरी, 1998,पृष्ठ156।

11.विनयपिटक, महावग्ग पालि, वि.वि.वि, भाग 89, इगतपुरी 1998, पृष्ठ181।

12. विनयपिटक पाचित्तिय पालि, वि.वि.वि, भाग 88, इगतपुरी1998, पृष्ठ 282।

13. पूर्वोक्त, पृष्ठ 71

14. पूर्वोक्त, पृष्ठ 169

15. पूवोक्त पृष्ठ252

16. धम्मपद पालि, वि.वि.वि, भाग 47, इगतपुरी1988, पृष्ठ23।

17. दीर्घनिकाय पालि, वि.वि.वि, इगतपुरी1998, पृष्ठ 74।

18.विनयपिटक पाचित्तिय पालि, वि.वि.वि,भाग88 , इगतपुरी1988,पृष्ठ2 201।

19.पूर्वोक्त, पृष्ठ 281।

20. विनयपिटक, चुल्लवग्ग पालि, वि.वि.वि,भाग 90, इगतपुरी 1998, पृष्ठ351।

21. दास प्रमोदानंद, प्रमोदानंद एवं कुमार अमरेन्द्र, बौद्ध चिंतन, भारती प्रकाशन,वाराणसी,2017, पृष्ठ5।

22. सुत्त निपात पालि, वि.वि.वि,भाग-48,इगतपुरी,1998,पृष्ठ107।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

वर्ष 12, अंक 40, जनवरी -मार्च 2022

मूल्य ₹120/-

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-[illegible] Nagfani RNI No. UTTHIN/2013/[illegible]

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष 12, अंक 40, जनवरी - मार्च 2022

संपादक

सपना सोनकर

सह-संपादक

रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. एन. पी. प्रजापति

प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक

प्रोफेसर दिनेश कुशवाह

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)

प्रोफेसर किशोरी लाल रैगर, जोधपुर (राजस्थान)

प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअनंतपुरम (केरल)

डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)

डॉ. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)

प्रोफेसर विजय कुमार रोड़े, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)

प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

डॉ. दादासाहेब सालुंके, औरंगाबाद(महाराष्ट्र)

प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)

डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)

डॉ.उमाकांत हजारिका,शिवसागर (असम)

मुख पृष्ठ- डॉ.शेख आजम,मैत्री ग्राफिक्स,सावंगी (ह),औरंगाबाद

प्रकाशन/मद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा
नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467
सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये
पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रूपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक AC8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001,Branch -SIDHI(NIRAT Prasad Prajapati)

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक पूर्णतय: अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। **नागफनी'** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वंय के है, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **"नागफनी"** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीआर्डर बैंक/चेक/ बैंक ट्रांसफर /ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

लेख भेजने के लिए Mail ID: nagfani81@gmail.com **Website: http:naagfani.com**

नागफनी

पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय..... 01

साहित्यिक विमर्श

1. कन्नड भाषा और साहित्य का सांस्कृतिक संदर्भ-प्रो.संजय एल.मादार 2-4
2. मध्यकालीन हिन्दी काव्य : राम और कृष्ण के शब्द चित्रों के संदर्भ में-डॉ.नीतू परिहार 5-6
3. उदय प्रकाश की कहानियों में उदारीकरण की संस्कृति-डॉ.सुनील पाटिल 7-8
4. साहित्य के मानदण्ड एवं प्रेमचंद के निबंध-डॉ.अमित कुमार तिवारी 9-11
5. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरः-डॉ.संगिता चित्रकोटी 12-14
6. अज्ञेय की काव्य संवेदना : एक अन्तर्यात्रा-डॉ.वीणा जे 15-17
7. 'राम की शक्तिपूजा' मनोभावों की समग्रता का प्रबल साक्ष्य-त्रिनेत्र तिवारी 17-18
8. विष्णु प्रभाकर के स्वागत नाट्य (मोनो लॉग) का शिल्पगत अध्ययनः डॉ.कल्पना मौर्य 19-20
9. प्रेमचंद और आज का भारतः किसान विमर्श के संदर्भ में- वैशाली गायकवाड 21-22
10. निराला और उनकी राष्ट्रीय चेतनाः डॉ.समयलाल प्रजापति/डॉ.निरपत प्रसाद प्रजापति 23-24
11. 'सुख' तलाशते साठोत्तर समाज का 'दुख'-डॉ.दीपक जाधव 25-27
12. भारतीय अन्नदाता की त्रासदी का उपन्यास 'अकाल में उत्सव'-डॉ.मृत्युंजय कोईरी 27-29
13. हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श : यथार्थवादी चिंतन -डॉ.सुरेश सिंह राठौड 30-32
14. मुक्तिबोध और फैन्टेसी : 'अंधेरे में' कविता के संदर्भ में- आरती सिंह राठौर/डॉ.रेशमा अंसारी 33-34
15. रस का आधुनिक काव्य से संबंध - डॉ.कविता त्यागी 35-36
16. जयप्रकाश कर्दम के कथा साहित्य में लोकजीवन-सुनीता 37-38
17. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में सांस्कृतिक चिंतन के द्वारा राष्ट्रीय चेतना-श्रीमती मीना शर्मा 39-40
18. साहित्य से सिनेमा फिल्मांकन की समस्या पर विमर्श (हिन्दी सिनेमा के संदर्भ में)-संजय सिंह/डॉ.शाह आलम 41-43
19. 'नए इलाके में': नए इलाके की खोज करती कविताएँ-डॉ.अन्सा ए 44-46
20. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी की हास्य व्यंग्य कविता : डॉ.उर्विजा शर्मा 47-48
21. हिंदी साहित्य में विकलांगता का चित्रण-मोनी 49-52
22. निराला का अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह-डॉ.कृष्ण बिहारी राय 53-54
23. इक्कीसवीं सदी के प्रतिनिधि उपन्यासों में राजनीतिक मूल्य-श्रीमती मालती देवी 55-57
24. 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' : पर्यावरण चिंतन का महाकाव्य-डॉ.अंजू लता/आलिया जेसमिना 58-62
25. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में उत्पीडन एवं जीवन संघर्ष -डॉ.कुलदीप सिंह मीना 63-65
26. ढाई बीघा जमीन : आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में-डॉ.जयंत बोबडे 66-68

स्त्री विमर्श

1. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री अस्मितामूलक प्रश्नों की संवेदना-डॉ.बलविंदर कौर 69-71
2. नारी अस्मिता के विविध आयाम-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-डॉ.नीरजा शर्मा 72-73
3. नारी अस्मिता और छिन्नमस्ता उपन्यास-प्रोफेसर आसाराम बेवले 74-76
4. स्त्री लेखन का नया प्रतिमानः स्त्री-भाषा-डॉ.यमुना प्रसाद रतूडी 77-79
5. 'रेत' उपन्यास में चित्रित स्त्री-डॉ. शीतल गायकवाड 80-81
6. कृष्णा अग्निहोत्री की 'और...और...औरत' आत्मकथा में नारी विमर्श-राकेश भील 82-83
7. स्त्री विमर्श के दायरे में 'बारबाला' का अनुशीलन-डॉ.मीना सुतवणी 83-86
8. नन्द चतुर्वेदी की कविता में स्त्री चित्रण-डॉ.विदुषी आमेटा/संगीता भारद्वाज 87-93
9. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण स्त्री जीवन का परिदृश्य :'बेनीमाधो तिवारी की पतोह'के विशेष संदर्भ में- बेबी विश्वकर्मा 94-96
10. वर्तमान समय में नारी की स्थिति-डॉ.पूजा शर्मा 97-98
11. अनामिका की कविता में स्त्री पक्षधरता-डॉ.उषस पी.एस. 99-101
12. 'थेरीगाथा' में चित्रित स्त्री-जीवन की वैयक्तिक समस्याएँ- संजय यादव 101-102
13. शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री स्वर की अभिव्यक्ति-चंद्रावती 103-105
14. भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'वंचना'में व्यक्त नारी विचार-परेश सननसे/संजय कुमार शर्मा 106-107

नारी अस्मिता के विविध आयाम-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

-डॉ.नीरजा शर्मा
बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

"प्रजार्थ महाभागा पूजास्थल प्रहदीपप्तय।
स्त्रिय श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्तिकश्चन॥" - "बृहद संहिता।

स्त्री पुरुष की शरीरार्द्ध और अर्धांगिनी मानी गई है तथा श्री और लक्ष्मी के रूप में वह मनुष्य के जीवन को सुख और समृद्धि से दीप्ति एव पुंजित करने वाली होती है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता "को यथार्थ करता भारतीय समाज सदैव से ही स्त्रियों को पूजनीय मानता है। हिंदू समाज में नारी का सम्मान और आदर प्राचीन काल से आदर्शात्मक और मर्यादा युक्त था। उसकी अवस्था पुरुषों के समान थी। वह अपना समाकूल आत्मविश्वास और उत्थान कर सकती थी। कन्या के रूप में, पत्नी के रूप में ,मां के रूप में, बहन के रूप में समाज में उनके प्रति स्वाभाविक निष्ठा और श्रद्धा रही है। बहन, बेटी, पत्नी, मां के रूप में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एव गौरवशाली रहा है। भारतीय धर्म शास्त्र में नारी सर्वशक्ति संपन्ना मानी गई है तथा वह विद्या यश सौभाग्य का प्रतीक मानी जाती थी। यद्यपि समय के साथ-साथ स्त्री की स्थिति में भी परिवर्तन होते रहे। वैदिक युग में स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व रहा है वह बिना किसी प्रतिबंध के सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होती थी। शिक्षा ,ज्ञान ,यज्ञ ,रणक्षेत्र सभी में वह निर्विरोध स्वछतापूर्वक ना केवल सम्मिलित होती रहती वरन सम्मानित एव आदर प्राप्त करती थी।लोपामुद्रा ,विश्ववारा ,संघता, घोषा,सुलभा ,गार्गी ,मैत्री आदि विदुषियों ने अपनी मेधा ,अद्भुत प्रतिभा, विलक्षणता तर्कशक्ति,सूक्ष्म ज्ञान से सम्मान प्राप्त किया था। कालांतर में नारी को वह सम्मान ना मिल सका जो कि वैदिक काल में था। उसकी स्थिति दिन प्रति दिन खराब होती चली गई। वह नारी शक्ति, जो शक्ति का प्रतीक थी वह अबला कही जाने लगी। विदुषी शब्द तो लगभग खो ही गया था। वह असहाय ,आश्रित दोयम दर्जे की मानी जाने लगी। संभवत कहीं ना कहीं स्वयं स्त्री ही इसके लिए दोषी थी।

स्त्रियों की दशा किसी भी देश की संस्कृति एव सभ्यता का मानदंड मानी जाती है। डॉ. वात्स्यायन के शब्दों में स्त्रियों और पुरुषों की सापेक्ष स्थिति किसी भी देश अथवा सभ्यता का मानदंड होती है। डॉ अन्त करण के कथनानुसार नारी के प्रति सम्मान की मात्रा को समाज की सभ्यता का एक मानदंड माना जाता था।डा रामजी उपाध्याय ने लिखा है कि किसी भी राष्ट्रीय समाज के अभ्युदय के लिए स्त्री और पुरुष दोनों के कृतित्व का समान ही महत्व है। निसंदेह वैदिक आर्यों के बीच नारी की स्थिति इतनी ऊंची थी कि बीसवीं शती में संसार का अधिक से अधिक सशक्त राष्ट्र भी नहीं कह सकता कि उसने नारी को कितना ऊंचा स्थान प्रदान किया है। भारतीय साहित्य में सीता माता से लेकर राजगणिका एव वेश्या तक क्रमश उदात्त या अधम चरित्र प्रायश मिलती है। धर्म ग्रंथों में नारी को पुरुष के समान ही स्थान दिया है परंतु कालांतर में अपने को श्रेष्ठ साबित करने के लिए पुरुषों ने धर्म ग्रंथों की व्याख्या को अपनी सुविधानुसार कर दी। महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने यशोधरा काव्य में लिखा भी है

"नाकृत सारे शास्त्र बंधे हैं नारी को ही लेकर।
अपने लिए सारी सुविधाएं पहले ही कर बैठे हैं नर"॥

वैदिक काल में नारियों की स्थिति उच्चतम स्तर पर थी, परंतु उत्तर वैदिक काल तक आते-आते उसने पराभव होना शुरू हो गया।

प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति

प्राचीन काल में समाज में स्त्रियों को अत्यंत गौरवशाली स्थान प्राप्त था। गृहणी, स्त्री, माता, सहचरी के रूप में वह परिवार से जुड़ी रहती थी। गृहणी के रूप में वह परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखती थी। संतान का पालन पोषण कर उसे योग्य बनाना उनका दायित्व था। यद्यपि वैदिक काल के पश्चात समाज में स्त्रियों की स्थिति क्षीण हुई थी तथापि यज्ञ अनुष्ठान तथा सामाजिक समारोहों में उनकी अनिवार्यता थी। शिक्षा के क्षेत्र में ब्रह्मचारिणी स्त्रिया भी थी। अनेक स्त्रियां शिक्षिका बन कर जीवन व्यतीत करती थी जो पूर्ण निष्ठा के साथ अपना शिक्षण कार्य करती थी ।ऐसी उपाध्याया कहलाती थी। जो छात्राओ को पढ़ाती थी स्त्री ना केवल शिक्षा वरन ललित कला, नृत्य कला, चित्रकला, सूत काटना, वस्त्र सिलना, गाय दुहना आदि कला में प्रवीण थी। प्राचीन काल में अनेक ऐसी प्रज्ञा संपन्न नारियाँ हुई जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचना शैली और काव्य कला से साहित्यिक योगदान किया। मंडन मिश्रऔर शंकराचार्य के मध्य हुए शास्त्रार्थ की निर्णायिका मंडल मिश्र की पत्नी थी ,जो अपने तर्क में मीमांसा, वेदांत और साहित्य में पूर्णतः निपुण एव दक्ष थी। "रघुवंश में लिखा है गृहिणी ,सचिव मिथ प्रिय शिष्य ललित कलाविदे।स्त्रियां शासन व्यवस्था और राज्य के प्रबंधएवं प्रशासन में भी दक्ष थीं एवं प्रशासन का संचालन भी करती थी। भाष्यकार विज्ञानेश्वर ने छह प्रकार के स्त्रीधन बताते हुए कहा है-

पितृ मातृ पति भ्रात दत्तमध्यान्युपागतम।
आधिवेदनिकाद्धज्ज स्त्रीधन परिकीर्तित॥

अर्थात पिता, माता ,पति द्वारा दिया हुआ अग्नि की सानिध्य में विवाह के समय कन्यादान के साथ प्राप्त तथा अधिवेदन के निमित्त मिला हुआ धन। विवाह होने के पश्चात स्नेही पूर्वक सास-ससुर आदि से अनेकानेक प्रथाओं में जो धन प्राप्त होता था वह स्त्री धन की श्रेणी में आता था। प्राचीन काल में स्त्रीधन के उदाहरणों से नारी की सामाजिक और आर्थिक दशा का भी ज्ञान होता है साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि विपत्ति काल में अथवा दुर्दिन में कम से कम वह अपना जीवन यापन कर सकती थी। पति या पिता की मृत्यु के पश्चात स्त्री को किसी भी किसी पर भी आश्रित रहने की आवश्यकता नहीं होती थी।

गणिकाओ के अतिरिक्त राजनर्तकी होती थी जिनका समाज में स्थान अत्यंत उच्च था। भगवान बुद्ध ने भी प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली का निमत्रण एवं आतिथ्य स्वीकार किया था। लिच्छवियों ने आम्बपाली से कहा सौ हजार कार्षापण लेकर यह भोजन हमें कराने दो।आम्बपाली ने उत्तर दिया आर्य पुत्रों यदि वैशाली जनपद भी दे दो तभी इस महान भोजन को मै ना दूंगी। कालांतर में इन्हें नर्तकी रूपजीवा वैश्या देवदासी नामों से जाने जाने जाने लगा। जो मंदिर की सेवा से संबंध कार्य करती थी उन्हें देवदासी कहा जाता था। देव मंदिरों का निर्माण पूजा-अर्चना तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए हुआ था ना कि कामवासना और भौतिक सुख हेतु परंतु कालांतर में देव मंदिर

कामोद्दीन के केंद्र बनते गए तथा उनकी दीवारों पर कामकला के विभिन्न चित्र और आकृतियां उकेरी गई। प्राचीन काल में पर्दा प्रथा का भी कोई प्रचलन नहीं था। ।4स्त्रियां स्वतंत्रता पूर्वक कहीं भी जा सकती थी। सह शिक्षा का व्यवहार स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से उन्मुक्त वातावरण प्रदान करता था।ऋग्वेद में लिखा है -

सुममंगलरियं वधूरिमा समेत पश्यत।सौभाग्यमस्यै दत्त्वायाथास्वित परतेन॥

नवविवाहिता साम्राज्ञी बनकर जाती थी ।विद्वतसभाओं एवं उत्सवों मेलों में स्वतंत्रता पूर्वक भाग लेती थी। नारी के प्रति समाज का व्यवहार कठोर होता चला गया उन्हें हीन एव निम्न भावना से देखा जाने लगा। अनेकों प्रथाए जैसे बाल विवाह, पर्दा प्रथा,वेश्यावृत्ति ,विधवा दुर्दशा, तलाक ,दहेज आदि के कारण स्त्री का जीवन अत्यंत संघर्षमय हो गया।

मध्य काल में नारी की स्थिति

मध्य काल में नारी की स्थिति में सर्वाधिक गिरावट आई। मुसलमानों के आगमन के पश्चात सामाजिक राजनीतिक धार्मिक दायरा अत्यंत सीमित हो गया। मुसलमानों की कुदृष्टि के कारण नारी अशिक्षित रही उसे पर्दा करना पड़ा जिसके कारण वह पिछड़ गई। कुल की शुद्धता नारी के सतीत्व की रक्षा और हिंदू धर्म की रक्षा के नाम पर नारी को ऐसे सामाजिक धार्मिक बंधनों में जकड़ दिया गया था कि वह पुरुष की छाया मात्र होकर रह गई और उसका स्वतंत्र अस्तित्व लुप्त हो गया।मुस्लिम आक्रांताओं एवं मुस्लिम शासकों के कारण नारी की स्थिति बद से बदतर होती चली गई। वेश्यावृत्ति पर्दा प्रथा ,सती प्रथा आदि नारियों से जुड़ी विषमताएं समाज में कोढ की भांति लगी हुई थीं।ज्ञानमार्गी कवियों ने विलासिनी ,कामिनी एवं कुलटा नारियों की कड़े शब्दों में आलोचना की है ।कबीर दास के शब्दों में

अन्न न भावे नींद ना आवै गृह बन धरे न धीर रे।
कामिन को बालम प्यारो जो प्यासे को नीर॥

आधुनिक युग में स्त्री की स्थिति

आधुनिक युग में स्त्री की स्थिति में धीरे-धीरे उन्नति आने शुरु हुई। उसने उन्हें राजनीतिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक, शिक्षा ,कला और खेलकूद के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। वह नारी जिसे घर की चारदीवारी में मुसलमानों के डर के कारण बंद कर दिया गया था आज वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। यद्यपि हमारा समाज आधुनिकता की होड़ में लगा हुआ है परंतु उसकी मानसिकता रूढ़ियों के पीछे जकड़ी हुई है। दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, बाल विवाह और न जाने कितनी ऐसी प्रथाएं हैं जिसमें असंख्य नारियों की भेंट चढ़ गई। नारी की आधुनिकता एवं स्वच्छता का कदापि अभिप्राय यह नहीं कि वह हमारी संस्कृति एवं संस्कारों से खिलवाड़ करें। स्त्री का जीवन मर्यादित एव सम्मानित होना चाहिए। संस्कृति के विकास में प्राचीन काल से अपना बहुमूल्य योगदान देती है आवश्यकता है उसे समझने की जिस घर में नारी का अपमान में शोषण होता है वह घर कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए हैं लेकिन फिर भी अनेक स्थानों पर पुरुष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रहा है इस संदर्भ में युग निर्माता स्वामी विवेकानंद जी का कथन उल्लेखनीय है किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम मापक है वहां की महिलाओ की स्थिति।हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिए जहां वह अपनी समस्याओ को अपने ढंग से सुलझा सके। हमें नारी शक्ति का उदाहरण नहीं बनना चाहिए। भारतीयों की अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती है। आवश्यकता है कि इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनाएं हैं।

संदर्भ

1.बृहद संहिता 7-5,5
2.मनुस्मृति पंडित रामेश्वर भट्ट अध्याय तीन श्लोक 56 निर्णय सागर प्रेस मुंबई 1922 पृष्ठ संख्या 51।
3.मिश्र जयशंकर प्रसाद प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी ,पटना ,2013 पृष्ठ 365।
4.यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त
5. जातक संख्या 301 संपादक फाउल्स बोल अट्ठारह सौ 77093 कैम्ब्रिज हिंदी अनुवाद भदंत आनंद कौसल्यायन मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 2012
6.कर्पूर मंजरी राजशेखर कोलकाता 1948
7.अग्रवाल वासुदेव शरण पाणिनि कालीन भारत मोतीलाल बनारसीदास बनारस 1926
8. मिताक्षरा याज्ञवल्क्य स्मृति संपादक जीआर घरपुरे मुंबई 1926 बनारस
9.मिश्र जयशंकर प्रसाद प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी ,पटना ,2013 पृष्ठ 365।
10.महावग्ग दीर्घ निकाय अनुवादक भिक्षु राहुल सांकृत्यायन जगदीश कश्यप भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद लखनऊ 1979 पृष्ठ 128
11.महावग्ग दीर्घ निकाय अनुवादक भिक्षु राहुल सांकृत्यायन जगदीश कश्यप भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद लखनऊ 1979 पृष्ठ 128
12.महावग्ग दीर्घ निकाय अनुवादक भिक्षु राहुल सांकृत्यायन जगदीश कश्यप भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद लखनऊ 1979 पृष्ठ 129
13.महावग्ग दीर्घ निकाय अनुवादक भिक्षु राहुल सांकृत्यायन जगदीश कश्यप भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद लखनऊ 1979 पृष्ठ 128
14.मिश्र जयशंकर प्रसाद प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी ,पटना ,2013 पृष्ठ 288।
15.ऋग्वेद ऋग्वेद सायन भाष्य सहित संपादक एस मैक्स मूलर अट्ठारह सौ 9092 5 भाग वैदिक संशोधन मंडल पुणे 1933 105
16.केएमएफ हिंदुस्तान के निवासियों का जीवन एवं उनकी परिस्थितियां पृष्ठ 174
17.कबीर दास कबीर से हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी ग्रंथ रत्नाकर मुंबई 1942 पृष्ठ संख्या 245

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani

RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12, अंक-43, अक्टूबर - दिसम्बर 2022

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

भाग-3

मूल्य ₹ 150/-

भाग – 03

नागफनी

A Peer Reviewed Refereed Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NagfaniRNI No.UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12 अंक 43,अक्तूबर -दिसम्बर-2022 भाग-3

संपादक
सपना सोनकर

सह संपादक
रूपनारायण सोनकर

Co Editor(English
Prof.Rajesh karankal
Dr.Santosh Kumar Sonkar

कार्यकारी संपादक
डॉ.एन.पी.प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

सलाहकार मण्डल (Peer Review Comittee)

प्रोफेसर बिष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्य प्रदेश)
डॉ.एन. एस. परमार, बड़ौदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सालुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर मोहनलाल 'आर्य' मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)
डॉ.जी.व्ही .रत्नाकर हैदराबाद(तेलंगाना)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ.एन.पी.प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन–423/Aअंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य।

मुख पृष्ठ– उत्कर्ष प्रजापति, सिंगरौली - मध्यप्रदेश

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी -248179, उत्तराखण्ड, दूरभाष : 0135-6457809 मो.0941077718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी. आर. -62 ए ब्लॉक कॉलोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म. प्र. पिन-486886 मो. 09752998467
सहयोग राशि -150/-रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1500/-रुपये, पंच वार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-3000/-रुपये पंच वार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए –3500/-रुपये, विदेशों में$50 आजीवन व्यक्ति-6000/-रुपये,संस्था-10,000/-रुपये।

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-Dalit Utkarsh Samiti–A/C–31590110006504
IFSC Code-UCBA0003159 Branch-Waidhan ward no 40

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।**'नागफनी'**में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमेंसंपादक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।**'नागफनी'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादन न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gmail.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:–http:naagfani.com

संपादकीय 06
साहित्यिक विमर्श
1.ज्ञानेश्वर की भक्ति धारा-प्रो.डॉ.गुरुदत्त जी राजपूत 7-8
2.हिंदी के विकास में जनपदीय बोलियों का योगदान -डॉ.राम बिनोद रे 8-10
3.वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य: आधुनिक कविताओं के संदर्भ में-डॉ.जितेंद्र पी.पाटिल 11-12
4.स्वयं प्रकाश की कहानियों में मानव मूल्य-डॉ.शेळके बी.टी. 12-13
5.कविता के माध्यम से आम आदमी से संबंध स्थापित करता कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'-डॉ.सुशीला 14-15
6.रूपनारायण सोनकर की रचनाओं में सामाजिक बदलाव तथा टकराहट की अनुगूँजें-डॉ.हरे राम सिंह 16-17
7.गांधीवाद और 'दी अनटचेबल' उपन्यास-संत कीनाराम त्रिपाठी 18-19
8.नंद मोहन के काव्य में शिल्प वैभव-डॉ.शबाना हबीब 20-21
9.'कसप' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन: एक दृष्टि-डॉ.अखिलेन्द्र प्रताप सिंह 21-22
10.प्रौद्योगिक संस्कृति में बदलते मूल्यबोध: 'दौड़' के संदर्भ में-डॉ.जस्टी इम्मानुएल 23-24
11.'आषाढ़ का एक दिन' की नाट्य भाषा-डॉ.सुषमा कुमारी 24-25
12.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल:एक विशिष्ट व्यक्तित्व-डॉ.गगन कुमारी हळवार 25-26
13.हिंदी कथा साहित्य में गीतांजलि श्री का योगदान- कल्पना एन.&डॉ.बलविंदर कौर 27-28
14.मोहन राकेश की कहानियों में जीवन मूल्य और मानवीय सम्बन्ध-डॉ.हेमलता कांचनकर 29
15.हिंदी कथा साहित्य में लघुकथाकारों का योगदान-डॉ.मीना मिलिंद ठाकूर 30-31
16.हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में यथार्थ अभिव्यक्ति के विविध आयाम-डॉ.एन.पी.प्रजापति 32-34
17.डी-मेल एक्सप्रेस-एक नया आयाम-डॉ.एस.प्रीति 35-37
18.साहित्य में हास्य का स्वरूप-डॉ.उर्विजा शर्मा 37-39
19.वैश्विक संदर्भ में मथुरा बौद्ध मूर्तिकला:एक सांस्कृतिक धरोहर-डॉ.नीरजा शर्मा 39-40
20.कालजयी कवि कबीर-डॉ.ए.एस.सुमेष 40-41
21.अज्ञेय और उनका यात्रा-साहित्य-डॉ.सिन्धु टी.आई 42-43
22.प्रेमचंद साहित्य के अन्वेषी डॉ.कमलकिशोर गोयनका की शोध-साधना-अनिल कुमार पाण्डेय 43-45
23.विद्रोह की शालीन मुद्रा-समकालीन महिला कहानी का केरलीय परिवेश-मधु वासुदेवन 45-47
24.संत साहित्य की पूर्व पीठिका:सिद्ध साहित्य के विशेष सन्दर्भ में-रीतिका पाण्डेय&डॉ.सत्य प्रकाश पॉल 47-49
25.साहित्य और गल्पसत्ता:प्लेटो के विशेष संदर्भ में-डॉ.आलोक कुमार सिंह 50-51
26.नाटक का अनुवाद-डॉ.श्रीराम हनुमंत वैद्य&प्रा.संजय गहिनी नाथ मोराले 52-53
27.देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास 'कुसुम कुमारी' में नैतिक मूल्य-नवल पाल 54-55
28.भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'बाबल तेरा देस में' भारतीय संस्कृति-सुकेश कुमारी 56-57
29.चित्रा मुद्गल के कहानी संग्रह 'पेंटिंग अकेली है' में चित्रित सामाजिक यथार्थ-कुलदीप 58-59
30.सच्चिदानन्दन की कविताओं में पारिस्थितिक चेतना-अश्वती.एस 60-61
31.'लॉकडाउन गजनामचा:मौत मिले, पर माटी में..' उपन्यास में श्रमिक जीवन के दुःखांत स्वर-ओम प्रकाश 62-64
32.सुशील कुमार सिंह के 'सिंहासन खाली है' नाटक में अभिव्यक्त राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्य-संदीप हंसराज शिंदे 64-66
33.छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में वर्णित जीवन और प्रकृति चित्रण-आशा शर्मा 67-69
34.सामाजिक न्याय की इतिहास दृष्टि और हिंदी उपन्यास -जितेंद्र कुमार यादव 69-71
35.समकालीन कविताओं में पर्यावरण- डॉ.मिनी ए. आर. 72
36.वर्तमान परिप्रेक्ष्य में घटते नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य:श्री रामचरितमानस के संदर्भ में-श्रीमती संगीता समाधिया 73-74
37.'महाजनी महात्म्य' उपन्यास में अभिव्यक्त किसान-जीवन-राजेंद्र मीना 74-75
38.रांगेय राघव के जीवन चरित्रात्मक उपन्यासों में कबीर, तुलसी और बिहारी-डॉ.कनक लता रिद्धि 76-77
39.शिवनारायण सिंह की बोधकथाओं में निहित जीवन संदेश-सुशील कुमार तिवारी &डॉ.हरिणी रानी आगर 78-79
40.प्रबोध कुमार गोविल की कहानियों में युगीन सामाजिक चेतना-सुश्री मदालसा मणि त्रिपाठी&डॉ.विश्वजीत कुमार मिश्र 79-81
41.दक्खिनी हिंदी का नामकरण एवं प्रमुख साहित्यकार-शिल्पा दत्त 81-82
42.भारतीय समाज में व्यक्ति और उसके स्वाभिमान की वास्तविकता:उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी के संदर्भ में-नितुश्री दास 83-84
43.जर्वांगीची पायजणा:एक मूल्यांकन-डॉ.श्रीनिवास वी. शेणिव 84-85
44.खिड़की कहानी संग्रह में संवेदना और अधिकार चेतना पक्ष-डॉ.राजकुमारी 86-87
45.'जीवन हमारा' आत्मकथा में अम्बेडकरवादी चेतना-डॉ.मुदनर दत्ता सर्जेराव 87-88
स्त्री विमर्श
1. इतिहास लेखन से गुमनाम दलित-आदिवासी वीरांगनाएं-डॉ.भगवान गव्हाडे 88-89
2. कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा:स्त्री अंतर्व्यथा की बेबाक दास्तान-अनिमा विश्वास 92-93

3.विचारधारा और नैतिकता की प्रयोगशाला में जैनेन्द्र के उपन्यासों के नारी पात्र-डॉ.अजय कुमार 94-95
4.समकालीन हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथा में नारी जीवन-अंजू पटेल&डॉ.एन.पी.प्रजापति 96-97
5.एस.आर.हरनोट के उपन्यास 'नदी रंग जैसी लड़की' में सशक्त होती ग्रामीण नारी-डॉ.राजन तनवर 98-99
6.डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर:स्त्री मुक्तिदाता-डॉ.जितेंद्र सावजी तागडे 100-101
दलित विमर्श
1.दलित-क्रान्ति द्रष्टा कत्ति पद्माराव-डॉ.वी.कृष्ण 102-103
2.तेलुगु दलित कविता में दलित आक्रोश-डॉ.विष्णु सरवदे 104-105
3आंबेडकरवाद:दलितों के अस्मिताओं की वैचारिकी-प्रा.डॉ.विश्वनाथ किशन भालेराव 106-107
4.मानवीय मुक्ति का सौन्दर्यबोध पैदा करती हैं दलित कहानियां-डॉ.प्रवीण कुमार&डॉ.कौशल कुमार 108-113
5.प्रेमचंद, गांधी और आम्बेडकर का दलित चिंतन-डॉ.रूपेश कुमार 113-115
6.'डंक'उपन्यास वंचित वर्ग की फटेहाल जिंदगी से बाहर निकलने का रास्ता सुझाया है-सुनील कुमार 115-116
7.दलित अध्ययन का उदय,समाज में दलित वर्गों का उत्थान-सुमलक अपुम&शिवम चतुर्वेदी 117-118
8.मन्नू भण्डारी के 'महाभोज' में राजनीतिक व दलित विमर्श-डॉ.दीपक कुमार 118-119
9.प्रेमचंद जी के उपन्यासों में दलित चेतना-डॉ.कृष्ण बिहारी रॉय 119-120
10.डॉ.भीमराव अंबेडकर के चिंतन में जाति एवं जेंडर-शरद जायसवाल&वीरेन्द्र प्रताप यादव 121-123
आदिवासी विमर्श
1.बंजारा समाज और लोक साहित्य-डॉ.कृष्णा डी लमाणि 124-125
2.आदिवासी जीवन-दर्शन और गांधी-डॉ.बन्ना राम मीना 126-127
3.भतरा समुदाय के त्यौहार-भारती लक्ष्मी पाल 128
4.लोक और आदिवासी साहित्य-अशर्फी लाल 129-130
5.आदिवासियत की महागाथा 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी-डॉ.अंजली एस. 130-134
6.पत्थलगडी और आदिवासी संघर्ष-डॉ.उषस पी.एस. 134-136
7.पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में झारखण्ड के आदिवासियों की भूमिका और उनकी वर्तमान स्थिति-हिमांशु प्रभाकर 136-138
8.पर्यावरण-बोध: 'ईश्वर और बाज़ार'-मनीषा वी. के.&डॉ.सिंधु टी. आई. 139-140
9.पीटर पॉल एक्का के उपन्यास 'सोन पहाड़ी' में अभिव्यक्त आदिवासी विस्थापन एवं पुनर्वास-निम्मी सलोमी किन्डो 141-142
10.बंजारा बोली:भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता-प्रा.सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण 142-143
11.महिला सशक्तिकरण में डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर का योगदान-डॉ.मनिश कान्हा चव्हाण 144-145
12.'मन्नेरवारलु' आदिवासी समुदाय की भाषा-डॉ.गणशेटवार साईनाथ नागनाथ 145-147
किन्नर विमर्श
1.उत्तर आधुनिकता की दृष्टि से किन्नर पुनर्वास की कथा 'तीसरी ताली'-डॉ.सीमा चन्द्रन 148-149
2.सामाजिक न्याय परम्परा और किन्नर जीवन-डॉ.लक्ष्मीकान्त चंदेला 150-151
3.यथार्थ किन्नर कौन?(बिन्दा महाराज,किन्नर,गलती जो माफ़ नहीं,बीच के लोग,पन्ना बा,नेग,कहानियों के विशेष संदर्भ में)-दीप्ति दास 151-152
विविध विमर्श
1.भारतीय सामाजिक परिवेश में डॉ.अम्बेडकर का आधुनिक चिंतन-डॉ.गोपाल लाल मीना 153-155
2.अनुवाद का स्वरूप विश्लेषण-डॉ.वंदना रानी 155-157
3.'द गोखार्स डॉटर' के हिंदी अनुवाद में उद्धरित सांस्कृतिक प्रतीकों की समस्या-डॉ.लखिमा देओरी 157-159
4.मध्य गंगा घाटी की ताम्र पाषाणिक संस्कृति के विशिष्ट तत्व:एक नवीन अध्ययन-नरेश कुमार 160-161
5.समाचार-पत्रों में प्रकाशित कोरोना संबंधी शब्दावलियों का समीक्षात्मक अध्ययन-इस्तेखार अहमद&डॉ.अख्तर आलम 162-164
6. शांति शिक्षा में मानवाधिकार की भूमिका-डॉ.कुलराज व्यास 165-166
7. दुर्गम हिमालयी क्षेत्र में सामुदायिक रेडियो "कुमाऊं वाणी" का विकास व चुनौतियां-राजेन्द्र सिंह क्वीरा 167-169
8.वर्तमान विश्व में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता-मोनिका राज 169-171
9.अनुसूचित जनजाति के विकास में बाबासाहेब डॉ.अम्बेडकर का योगदान-डॉ.संजय कुमार 172-175
10.भारत में गरीबी निवारण में मानवाधिकार की भूमिका-राजपाल सिंह यादव 175-177
11.भारत में बाल-अपराध एक समाजिक समस्या:एक अध्ययन-डॉ.धनंजय शर्मा 177-180
12.झारखंड में निवासरत संथाल जनजातियों की व्यवसायिक स्थिति,जीवन स्तर एवं उपभोग स्थिति का आर्थिक अध्ययन: (गिरिडीह जिले के विशेष सन्दर्भ में)-जीतेन्द्र कुमार&डॉ.नमिता शर्मा 180-181
13.मातृभाषा की भूमिका और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-प्रभाकर कुमार 182-183
14.महाभारत कालीन प्रमुख नगरी द्वारका-एक ऐतिहासिक अध्ययन-डॉ.रुबी तबस्सुम 184-185
15. हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति:आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य-भरत सिंह &विपुल शर्मा 185-187
16.प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय अवधारणा-श्वेता तंवर 188-189
17.कुमाऊँ मण्डल के पिथौरागढ़ जनपद में संचालित विभिन्न पेंशन योजनाओं का निर्धन तथा लक्षित वर्गों पर प्रभाव का मूल्यांकन-डॉ. रीन रानी मिश्रा 189-192

वैश्विक संदर्भ में मथुरा बौद्ध मूर्तिकला: एक सांस्कृतिक धरोहर

डॉ.नीरजा शर्मा
सहायक प्रोफेसर
बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय-दिल्ली

भारतीय संस्कृति विश्व की अद्वितीय संस्कृति है। भारतीय संस्कृति का केन्द्र मनुष्य नहीं वरन् इसका दृष्टिकोण वैश्विक रहा है। हमारी संस्कृति का मूल आधार सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की अवधारणा है। यहाँ सत्य को ही शिवतत्व या परमतत्व माना गया है। सभ्यता समाज का संगठित पक्ष है जो संस्कृति की दशाओं का निर्माण करती है। संस्कृति इसी सभ्यता रूपी संगठन की उपज है जो भाषा, कला, दर्शन धर्म सामाजिक, आदतों, प्रथाओं आर्थिक संगठन एवं राजनीतिक संस्थाओं में अभिव्यक्त होता है।

भारतीय कला भारतवर्ष के विचार, धर्म, तत्वज्ञान और संस्कृति का दर्पण है। भारतीय जन-जीवन की पुष्कल व्याख्या कला के माध्यम से हुई है। यहाँ के लोगों के रहन-सहन, भाव, देवतत्व के विषय, पूजा विधि, पंचभूतों के धरातल पर उन्होंने कितना निर्माण किया था, इसका सम्पूर्ण लेखा जोखा भारतीय कला में सुरक्षित है। वास्तु, शिल्प, मूर्ति, चित्र, कांस्य प्रतिमा, मृण्मयी प्रतिमा, मृदभाजन, दन्तकर्म, काष्ठकर्म, मणिकर्म स्वर्णरजत कर्म, वस्त आदि के रूप में भारतीय कला की सामग्री प्रभूत मात्र में पायी जाती है। देश के प्रत्येक भाग में कला के निर्माण की ध्वनि सुनाई देती है। एक युग से दसरे युग में कलात्मक निर्माण के केन्द्र में छिटकते रहते हैं किन्तु यह विविध सामग्री समुदित रूप से समस्त देश की कला धारा के ही अन्तर्गत है। भारतीय कला में यहाँ के मस्तिष्क और हस्त कौशल का सर्वोत्तम प्रमाण पाया जाता है। भारतीय कला की सामग्री वैसी ही समृद्ध है जैसी भारतीय साहित्य, धर्म और दर्शन की। भारतीय कला के वातायन द्वारा हम यहाँ के शिल्प, मूर्तियों, चित्रें और खिलौनों का साक्षात् दर्शन प्राप्त कर सकते हैं और उनमें छिपी मानसिक कल्पना एवं प्रतिभा से भी परिचित हो सकते हैं। यद्यपि भारतीय कला विश्व कला के मंच पर अपना पद प्राप्त काफी देर से कर पाई किन्तु अब उसका सौन्दर्य और अर्थ विद्वानों और रसिकों के मन में पूरी तरह बस गया है। भारतीय जनता की सांस्कृतिक चेतना में भारतीय कला के जो अर्थ किसी समय निहित थे और बहुत से उदाहरणों में जिनकी परम्परा लोक में चली आयी है उन्हें कला और साहित्य के अन्योन्याश्रित सहयोग से अधिक स्पष्टता से पहचाना जा सका। जब भारतीय संस्कृतिक का प्रसार समुद्र पार और पर्वतों के उस पार और तब भारतीय कला के रूप और उसके अर्थ भी उन उन देशों में बद्धमूल हुए। सौभाग्य से वह सामग्री आज भी अधिकांश में सुरक्षित है और भारतीय कला के यशप्रभाह की कथा कहती है। दीपान्तर या हिन्देशिया से लेकर मरुचीन या मध्य एशिया तक का विशाल भूखण्ड भारतीय कला की मेघवृष्टि से उत्पन्न फुहारों से भर गया। यह आंदोलन कितना गम्भीर एवं बलिष्ठ था इस कल्पना से आज भी आश्चर्य होता है।

भारत की वास्तुशिल्प, मूर्तिकला और शिल्प की जड़े भारतीय सभ्यता के इतिहास में बहुत गहरी प्रतीत होती है। भारतीय मूर्तिकला आरम्भ से ही यथार्थ रूप लिए हुए हैं जिसमें मानव आकृतियों/ 1, 2 तथा 3 पेज की 3 लाइन सर्वप्रथम बुद्ध मूर्ति का निर्माण हुआ। कुषाण युग में मथुरा कला का अभ्युदय विशुद्ध भारतीय कला के रूप में प्रारम्भ हुआ। मथुरा कला का जन्म मथुरा के देशी कलाकारों के मानस में संयोजित बुद्ध की विभिन्न भंगिमाओं के कारण हुआ जिन्हें सुसज्जित करने की प्रेरणा सांची और भरहुत की कलाओं से मिली।

मथुरा कला के अन्तर्गत निर्मित बौद्ध मूर्तियों में गौतमबुद्ध के जीवन की मुख्यतः सात घटनाओं के प्रदर्शित किया गया है जो इस प्रकार है -(1) बुद्ध का जन्म (2) बुद्ध को ज्ञानप्राप्ति (3) धर्म प्रचार (4) महापरिनिर्वाण (5) इन्द्र को भगवान बुद्ध का दर्शन (6) बुद्ध द्वारा भयत्रिंश स्वर्ग से माता को ज्ञान देकर वापस आना (7) लोकपालों द्वारा बुद्ध को भिक्षापात्र अर्पित करना। पहले चारों मूर्तिभेद गान्धार कला में भी मूर्तिमान किये हैं जबकि अन्य तीन भेदों में ब्राह्मण धर्म की छाप दिखलाई पड़ती है क्योंकि पौराणिक या ब्राह्मण धर्म में ईश्वर को सभी देवताओं से श्रेष्ठ माना गया है। मथुरा की मूर्तिकला मांसलता और विशा लता के लिए प्रसिद्ध है।

बुद्ध की मूर्तियो में हम अवतारवादी भारतीय कला एवं संस्कृति का ही प्रभाव कह सकते हैं। मथुरा की बौद्ध मूर्तियों में बुद्ध एवं बोधिसत्व हाथों के द्वारा अनेक भावों को प्रकट करते दिखाये गये हैं। उन भाव-विशेषों को मुद्रा कहते हैं। मथुरा कला में निम्नलिखित चार मुद्रायें मिलती हैं-

1-ध्यान मुद्रा - इसमें बोधिसत्व या बुद्ध पद्मासन में बैठे हुए तथा बाएँ हाथ के ऊपर दायाँ रखे हुए ध्यान मग्न दिखाए जाते हैं।

2-अभय मुद्रा - इसमें वे दाएं हाथ को उठाकर उसे कंधे की ओर मोड़कर श्रोताओं या दर्शकों को अभय-प्रदान करते हुए दिखाये जाते हैं।

3-भूमि स्पर्श मुद्रा - इसमें ध्यानावस्थित बुद्ध दाएं हाथ से भूमि को छूते हुए प्रदर्शित किए जाते है।। जब वह बोधगया में उनके तप को नष्ट करने का प्रयत्न कामदेव द्वारा किया गया तब बुद्ध ने इस बात की साक्षी के लिए कि उनके मन में कोई भी काम विकार नहीं, पृथिवी का स्पर्श कर उसका आह्वान किया था जिसे उक्त मुद्रा द्वारा व्यक्त किया जाता है।

4-धर्मचक्र-प्रवर्तन मुद्रा - इसमें बाएं हाथ की उँगलियों के ऊपर दाएं हाथ की ऊँगलियों को इस प्रकार रखते हैं मानों वे चक्र घुमा रहे हों। यह दृश्य सारनाथ में उनके द्वारा धर्म के सर्वप्रथम उपदेश को सूचित करता है। यहीं से उन्होंने संसार में एक नये धर्म का प्रवर्तन किया।

भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की कथायें जातक कहलाती हैं। मथुरा कला में अनेक जातक कथायें बहुत मनोरंजक ढंग से उत्कीर्ण मिलती है। मथुरा की बौद्धकला में वेदिका स्तम्भों का स्थान महत्वपूर्ण है। वेदिका के खंभों पर लोकजीवन का बहुमुखी चित्रण मिलता है। इन पर विविध आकर्षक मुद्राओं में स्त्रियों को अंकित किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के पशु पक्षी लता, फूल आदि पर भी इन स्तम्भों पर बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से उत्कीर्ण किए गए हैं जिन पर कलाकारों ने प्रकृति तथा मानव जगत की सौन्दर्य के राशि उपस्थित कर दी है। मथुरा कला में अन्य यक्षियों का चित्रण भी मिलता है। इनके पूज्य प्रतिमाओं के साथ विविध अलंकरणों के रूप में किन्नर गंधर्व, अप्सरा सुपर्व विद्याधर आदि भी मिलते हैं। किन्नर स्त्री पुरुषों को आधा मानव और आधा अश्व के रूप में दिखाया जाता है जो संभवतः स्फूति और शक्ति का प्रतीक है। गंधर्व गान विद्या विशारद माने जाते हैं तथा अप्सरायें नृत्य कुशला। मथुरा की मूर्तियां लाल बलुए पत्थर की बनी हुई है तथा बुद्ध के चारों ओर प्रभामण्डल हैं। यहाँ की मूर्तियों आध्यात्मिकता की अपेक्षा भौतिकता की प्रधानता थी। मथुरा शैली की बुद्ध की मूर्तियों में सौंदर्य स्निग्धता, कोमलता और संतुलन का सुन्दर समन्वय हैं। मथुरा के कलाकारों ने मानव आकृति के चित्रण में असाधारण योग्यता का प्रदर्शन किया है। आकृतियां भव्य है और इनमें आभूषण तथा वस्त्रें की बहुलता को कम किया गया है। नारी सौन्दर्य इस कला का बहुत मजबूत बिन्दु हैं। शालमंजिका को अलग-अलग भंगिमाओं में बतलाया गया है। वेष्टिनियों पर जो नारी आकृतियां है वे तत्कालीन सामाजिक संस्कृति पर काफी प्रकाश डालती है। अधिकांश नग्न तथा अर्द्धनग्न मूर्तियों में कुछ लोगों ने अश्लीलता देखने की कोशिश की है परन्तु यथार्थता इससे परे हैं। इस कला के मुख्य नमूने इन्द्रिय परक और सौन्दर्य व्याप्त स्त्रियों की मूर्तियां है। स्त्रियों के गोल सुडौल और उन्नत वक्ष तथा भारी उभरे कूल्हे न केवल स्त्री की प्रजनन शक्ति के प्रतीक है वरन् इससे ज्ञात होता है कि इनका निर्माण करने वाले कलाकारों का जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं था। यहां भाव, भावना तथा शारीरिक सौंदर्य सभी को प्रदर्शित किया है। और इसीलिए यह कला शैली धार्मिक विचार और शारीरिक सुख देने की अभिव्यक्ति का साधन बन सकी। मथुरा कला हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है और हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी इस राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर को संजो कर रखें।

****

संदर्भ :-

1-अग्रवाल वासुदेव शरण, भारतीय कला, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, 1966, पृ- 4

2-पूर्वोक्त पृ- 1

3-दत्त नलिनाक्ष एवं वाजपेयी कृष्णदत्त-उत्तरप्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास, प्रकाशंन ब्यूरो, उ-प्र- सरकार, 1956, पृ- 288

4-अग्रवाल वासुदेव-भारतीय कला, 1966, पृ- 243

5-दत्त नलिनाक्ष एवं वाजपेयी कृष्णदत्त-उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास, प्रकाशन ब्यूरो, उ-प्र- सरकार, 1965, पृ- 281

6-पूर्वोक्त

7-डॉ- पहाड़िया एस-एम- प्राचीन भारत का इतिहास संजीव प्रकाशन, मेरठ 1994, पृ- 240

8-पूर्वोक्त

9-मित्र देबला, बुद्धिष्ट मोनोमेन्ट्स, साहित्य समद 1971, पृ- 174

10-पूर्वोक्त

वर्ष-5, अंक-1-2, मार्च-अक्टूबर, संयुक्ताङ्क 2018

ISSN - 2349-3097
UGC Journal No.40860

पालि-प्राकृत-अनुशीलनम्

Pāli-Prākṛta-Anuśīlanam

(पालि-प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर आधारित सन्दर्भित षाण्मासिक शोध पत्रिका)

(A bi-annual Refereed Journal of Pāli and Prākṛta Language & Literature)

पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालय:)

केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्

Accredited by NAAC with 'A' Grade

लखनऊ-परिसर:

पालि-प्राकृत-अनुशीलनम्

(पालि-प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर आधारित षाण्मासिक संदर्भित शोध-पत्रिका)

संरक्षक

प्रो. पी. एन. शास्त्री, कुलपति

प्रकाशक : प्रोफेसर विजयकुमार जैन

सम्पादक : प्रोफेसर विजयकुमार जैन
डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

सम्पादन सहयोग :

*सुश्री कृष्णा कुमारी, अतिथि अध्यापिका-बौद्धदर्शनविभाग

डॉ. मोहन मिश्र	डॉ. प्रभात कुमार दास
डॉ. प्रियंका	डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन
डॉ. सोनल सिंह	डॉ. अमित
डॉ. वेदब्यास पाण्डेय	डॉ. आनन्द जैन
डॉ. राहुल अमृतराज	डॉ. दर्शना जैन

पोस्ट डॉक्टरल फेलो (पालि) एवं (प्राकृत) लखनऊ, जयपुर एवं दिल्ली परिसर

*डॉ. जयवन्त खण्डारे, पालि विकास अधिकारी

*डॉ. धर्मेन्द्र जैन, प्राकृत विकास अधिकारी

डॉ. माला चन्द्रा, पालि प्राकृत योजना (I/c)

© प्रकाशक : प्राचार्य,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित-विश्वविद्यालय) लखनऊ-परिसर,
विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ.प्र.)
Email: rskslucknow@yahoo.com

मूल्य - रु. 100/-

टंकण कार्य : विकास जैन,
कैजुअल कम्प्यूटर क्लर्क/डीईओ
पालि अध्ययन केन्द्र, लखनऊ

मुद्रक : - माहेश्वरी एंड संस, मोतीनगर, लखनऊ

Pāli-Prākṛta-Anuśīlanam

(A bi-annual Refereed Journal of Pāli and Prākṛta Language & Literature)

Patron

Prof. P. N. Shastri, Vice-Chancellor

Publisher : Prof. Vijay Kumar jain

Editor : Prof. Vijay Kumar Jain
Dr. Gurucharan Singh Negi

Editor Assistance:

*Miss Krishna Kumari, Guest Teacher - Bauddha Darshan Dept.

Dr. Mohan Mishra	Dr. Prabhat Kumar Das
Dr. Priyanka	Dr. Satendra Kumar Jain
Dr. Sonal Singh	Dr. Amit
Dr. Ved Byas Pandey	Dr. Anand Jain
Dr. Rahul Amritraj	Dr. Darshna Jain

PDFs of Pali & Prakrit Lucknow, Jaipur & Dehli Campus

• Dr. Jaywant Khandare, Pali Development Officer

• Dr. Dharmendra Jain, Prakrit Development Officer

• Dr. Mala Chandra, Pali Prakrit Project (I/c)

© Publisher : Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan (Deemed University) Lucknow Campus, Vishal Khand-4, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.)
Email: rskslucknow@yahoo.com
Email: vijayjain.sampadak@gmail.com
Email-gcsnegi69@gmail.com

Price - Rs. 100/-

Computer work :
Vikas Jain,
Casual Computer Clerk/D.E.O.
Pali Centre, Lucknow

Publisher-Maheshwari & Sons, Moti nagar, Lko.

पालि-प्राकृत-अनुशीलनम्

(पालि-प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर
आधारित षाण्मासिक संदर्भित शोध-पत्रिका)

संरक्षक

प्रो. पी. एन. शास्त्री, कुलपति

प्रकाशक : प्रोफेसर विजयकुमार जैन

सम्पादक : प्रोफेसर विजयकुमार जैन
डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

सम्पादन सहयोग :

*सुश्री कृष्णा कुमारी, अतिथि अध्यापिका-बौद्धदर्शनविभाग

डॉ. मोहन मिश्र — डॉ. प्रभात कुमार दास
डॉ. प्रियंका — डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन
डॉ. सोनल सिंह — डॉ. अमित
डॉ. वेदब्यास पाण्डेय — डॉ. आनन्द जैन
डॉ. राहुल अमृतराज — डॉ. दर्शना जैन

पोस्ट डॉक्टरल फेलो (पालि) एवं (प्राकृत) लखनऊ, जयपुर एवं दिल्ली परिसर

*डॉ. जयवन्त खण्डारे, पालि विकास अधिकारी

*डॉ. धर्मेन्द्र जैन, प्राकृत विकास अधिकारी

डॉ. माला चन्द्रा, पालि प्राकृत योजना (I/c)

© प्रकाशक : प्राचार्य,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित-विश्वविद्यालय) लखनऊ-परिसर,
विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ.प्र.)
Email: rskslucknow@yahoo.com

मूल्य - रु. 100/-

टंकण कार्य : विकास जैन,
कैजुअल कम्प्यूटर क्लर्क/डीईओ
पालि अध्ययन केन्द्र, लखनऊ

मुद्रक : - माहेश्वरी एंड संस, मोतीनगर, लखनऊ

Pāli-Prākṛta-Anuśīlanam

(A bi-annual Refereed Journal of Pāli and Prākṛta Language & Literature)

Patron

Prof. P. N. Shastri, Vice-Chancellor

Publisher : Prof. Vijay Kumar jain

Editor : Prof. Vijay Kumar Jain
Dr. Gurucharan Singh Negi

Editor Assistance:

*Miss Krishna Kumari, Guest Teacher - Bauddha Darshan Dept.

Dr. Mohan Mishra — Dr. Prabhat Kumar Das
Dr. Priyanka — Dr. Satendra Kumar Jain
Dr. Sonal Singh — Dr. Amit
Dr. Ved Byas Pandey — Dr. Anand Jain
Dr. Rahul Amritraj — Dr. Darshna Jain

PDFs of Pali & Prakrit Lucknow, Jaipur & Dehli Campus

- Dr. Jaywant Khandare, Pali Development Officer
- Dr. Dharmendra Jain, Prakrit Development Officer

- Dr. Mala Chandra, Pali Prakrit Project (I/c)

© Publisher : Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan (Deemed University) Lucknow Campus, Vishal Khand-4, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.)
Email: rskslucknow@yahoo.com
Email: vijayjain.sampadak@gmail.com
Email-gcsnegi69@gmail.com

Price - Rs. 100/-

Computer work :
Vikas Jain,
Casual Computer Clerk/D.E.O.
Pali Centre, Lucknow

Publisher-Maheshwari & Sons, Moti nagar, Lko.

विषय-सूची

पालि खण्ड

1.	पूजाराहो धम्मकायो	बन्धकारो सेतल संघसेनो	1
2.	भारतीयआणपरम्पराय धम्मसंगणिया महत्त्वं	डॉ. वेदव्यास पाण्डेय	4
3.	पालिभासा अतिसरला	डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल	8
4.	बीसवीं शताब्दी के पालि आचार्य एवं उनका योगदान	प्रो. विजय कुमार जैन	9
5.	प्रथम बैद्ध संगीति और वुड्ढपब्बजित (वृद्धप्रव्रजित) सुभद्द (सुभद्र)	डॉ. उज्ज्वल कुमार	17
6.	बौद्ध साधना का आधार-शील	डॉ० धर्मेन्द्र कुमार	38
7.	हीनयान मत में निर्वाण : एक अध्ययन	डॉ. संतोष प्रियदर्शी	48
8.	सुत्तनिपातोक्त पराभवसुत्त-समीक्षण	डॉ. प्रयाग नारायण मिश्र	70
9.	पालि साहित्य में मङ्गल	डा. राका जैन	77
10.	भारतीय सीमान्त जनपद किन्नौर की बोली पर पालि-प्राकृत का प्रभाव : एक दृष्टि	डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी	80
11.	कच्चान-व्याकरण का वैशिष्ट्य और महत्त्व	डॉ. प्रफुल्ल गडपाल	90
12.	बौद्धकालीन नारी : थेरीगाथा के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. कृष्णा कुमारी	103
14.	बौद्ध धर्म में कर्म सिद्धान्त : कर्म और स्त्री जन्म के संदर्भ में	डॉ. जयवंत खंडारे	108
15.	अप्रामाण्य (अप्पमञ्ञा)	डॉ. मोहन मिश्र	115
16.	चित्तवीथि	डॉ. राहुल अमृतराज	120
17.	धम्मपद में जीवन प्रबन्धन	डॉ. प्रियंका	124
18.	सासनवंस : एक परिचय	डॉ. सोनल सिंह	131
19.	कल्याणकारिण्य: काश्चन गाथा:	डॉ. भुवनेश्वरी भारद्वाज	139

अप्रामाण्य (अप्पमञ्ञा)

- डॉ. मोहन मिश्र

''नत्थि पमाणं एतस्सा ति अप्पमाणो, अप्पमाणे भवा अप्पमञ्ञा''[1] अर्थात् जो प्रमाणरहित है अथवा जिनकी इयत्ता नहीं है, वह अप्रमाण है, तथा प्रमाण में उत्पन्न (भवा) 'अप्रामाण्या' है। ये सत्त्व-प्रज्ञप्ति- का आलम्बन करने वाले चेतसिक हैं, और सत्त्व-प्रज्ञप्ति असीम है, अपरिमाण सत्त्व इन भावनाओं के आलम्बन अथवा विषय होते हैं। यही आलम्बन का अप्रमाणत्व है। अप्रमाणत्व-प्रज्ञप्तिवश उत्पन्न होने के कारण ये अप्रामाण्या (अप्पमञ्ञा) कहलाते हैं[1]।

अप्रमाण को ही ब्रह्मविहार भी कहा गया है। **'विहरन्ति एतेहीति विहारा, ब्रह्मविहारा'** अर्थात् सत्पुरुषों द्वारा जिन मैत्री, करुणा आदि धर्मों का आचरण किया जाता है, उन्हें 'विहार' कहते हैं। इन चार धर्मों में से किसी एक का जीव के प्रति स्फारण (विस्तार) करके स्थित रहना 'ब्रह्मविहार' कहलाता है। ब्रह्मा के विहार के समान होने के कारण भी इन्हें 'ब्रह्मविहार' कहा जाता है[3]। इनके द्वारा राग, द्वेष, ईर्ष्या, असूया आदि चित्तमलों का क्षालन होता है। योग के अन्य उपाय तो केवल आत्महित के साधन हैं, किन्तु ब्रह्मविहार परहित के भी साधन कहे गए हैं।

मैत्री, करुणा, मुदिता इन प्रथम तीन में केवल प्रथम तीन ध्यानों का उत्पाद होता है और चौथे ब्रह्मविहार में अन्तिम ध्यान का ही उत्पाद होता है, क्योंकि मैत्री, करुणा और मुदिता, दौर्मनस्य-सम्भूत, व्यापाद विहिंसा और अरति के प्रतिपक्ष होने के कारण सौमनस्य-रहित नहीं होती। अत: इनमें सौमनस्य-रहित उपेक्षासहगत चतुर्थध्यान का उत्पाद सम्भव नहीं। उपेक्षा-वेदना से युक्त होने के कारण मात्र उपेक्षा ब्रह्मविहार में अन्तिम ध्यान का लाभ होता है।[4]

करुणा, मुदिता, मैत्री आदि भावना का बौद्धधर्म में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। सद्धर्म में कर्म को मुख्यरूप से मानसिक माना गया है। बौद्धों की अहिंसा न केवल पशुहिंसा या परपीड़न का निषेध है अपितु मैत्री और शान्ति की भावना भी है। दूसरों के दु:खस्मरण से करुणा का भाव जागृत होता है। दूसरों के सुखस्मरण से मुदिता का, एवं सर्वत्र कार्यकारण नियम के अव्याहत व्यापार के स्मरण से उपेक्षाभाव जागृत होती है। घोर क्लेश पाने पर भी अविरोध और सहिष्णुता की आदर्श अभिव्यक्ति मज्झिमनिकाय के 'ककचूपमोवाद' में हुई है। मैत्रीभावना का अन्यान्य सूत्रों में यशोगान हुआ है। इस दृष्टि से बौद्धों का ब्रह्मविहार विशेषोल्लेखनीय है। ब्रह्मविहार चित्तशुद्धि के सर्वश्रेष्ठ साधन हैं। ये समाज की आदर्श भावनाओं का निदर्शन हैं। प्रथम तीनों विहार सहानुभूति के विविध रूप हैं जिनकी ध्यान द्वारा वृद्धि होती है।

1. मैत्री-

इस विषय में कहा गया है- **'मिज्जति सिनिय्हतीति मेत्ता'** अर्थात् स्नेह करनेवाले धर्म ही मैत्री हैं । जीवों के प्रति स्नेह और सुहृद्भाव मैत्री है। परमार्थत: अद्वेष चैतसिक ही मैत्री है। यह प्रिय एवं मनाप

सत्त्वप्रज्ञप्ति को आलम्बन बनाती है। जब किसी सत्त्वप्रज्ञप्ति का आलम्बन करके द्वेष उत्पन्न होता है, तो उस द्वेष से सम्प्रयुक्त चित्त भी स्निग्ध न होकर अपितु शुष्क होकर आलम्बन करता है, जबकि मैत्री (मेत्ता) सत्त्वों पर स्निग्ध हो आलम्बन करती है। यह परहित-साधन प्रवृत्तिमूलक है। सत्त्वोपकार, उनके सुख की कामना, द्वेष तथा द्रोह का त्याग, इसके लक्षण हैं। मैत्री भावना की सम्यक्-निष्पत्ति से द्वेष की शान्ति होती है। राग इसका आसन्न शत्रु है। तृष्णा के वशीभूत स्वजनों के प्रति जो स्नेह होता है, वह मैत्री तो है; किन्तु यथार्थ मैत्री न होकर प्रतिरूपिका मैत्री है। यथार्थ मैत्री में कुशल अथवा क्रिया चित्तों में से किसी एक का होना अनिवार्य है। तृष्णाजनित स्नेह की अवस्था में अकुशल लोभचित्त होता है। शास्त्रों में अपनी भार्या एवं पुत्रादि के प्रति उत्पन्न प्रेम को **'गेहाश्रित प्रेम'** कहा गया है, क्योंकि उसका मूल तृष्णा है। मैत्रीभावना करते समय यह आवश्यक है कि द्वेष नामक दूरस्थ तथा लोभ नामक समीपस्थ शत्रु से सावधानी पूर्वक भावना करनी चाहिए। शास्त्रानुसार सत्त्वप्रज्ञप्ति का आलम्बन करके मैत्री चित्त द्वारा भावना के 528 प्रकार कहे गए हैं- **'अनोधिसो मेत्ताफरण'** के 5 तथा **'ओधिसो मेत्ताफरण'** के 7=12 नय होते हैं, जिनका **'अवेरा होन्तु, अव्यापज्जा होन्तु, अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु'**- इन से गुणा करके 48 नय होते हैं, 10 दिशाओं से गुणा करने पर ये 480 हो जाती है। इनमें 48 नय मिला देने पर ये कुल 528 हो जाते हैं। **'सब्बे सत्ता, सब्बे पाणा, सब्बे भूता, सब्बे पुग्गला, सब्बे अत्तभावपरियपन्ना'**- ये 5 भाव किसी भी स्त्री पुरुष में सीमित नहीं होते, अतः इन्हें **'अनोधिसो'** (अनवधिशः) मैत्रीस्फरण कहा जाता है। **'सब्बा इत्थियो, सब्बे पुरिसा, सब्बे अरिया, सब्बे अनरिया, सब्बे देवा, सब्बे मनुस्सा, सब्बे विनिपातिका'**- ये 7 भाव स्त्री, पुरुष आदि तक सीमित होते हैं, अतः इन्हें **'ओधिसो'** (अवधिशः) मैत्रीस्फरण कहा जाता है[6]।

उपर्युक्त 12 प्रकार से भावना करने वाले जीव भी 12 प्रकार के होते हैं। इन्हें भावना के समय **'अवेरा होन्तु, अव्यापज्जा होन्तु, अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु'**- इस प्रकार 4 प्रकार से करनी चाहिए। यथा- **''सब्बे सत्ता अवेरा होन्तु.....सब्बे सत्ता सुखी अत्तानं परिहरन्तु',....'सब्बे अत्तभावपरियापन्ना अवेरा होन्तु....सब्बे अत्तभावपरियापन्ना सुखी अत्तानं परिहरन्तु',....'सब्बा इत्थियो अवेरा होन्तु.... सुखी अत्तानं परिहरन्तु',....'सब्बे विनिपातिका अवेरा होन्तु....सुवी अत्तानं परिहरन्तु'**। इस प्रकार भावना के 48 प्रकार होते हैं। इनका **'पुरत्थिमाय दिसाय, पच्छिमाय दिसाय, उत्तराय दिसाय, दक्खिणाय दिसाय, पुरत्थिमाय अनुदिसाय, पच्छमाय अनुदिसाय, उत्तराय अनुदिसाय, दक्खिणाय अनुदिसाय, हेट्ठिमाय दिसाय, उपरिमाय दिसाय'**- इन दश दिशाओं से गुणा करने पर इनकी कुल संख्या 480 हो जाती है। यथा- **'पुरत्थिमाय दिसाय सब्बे सत्ता अवेरा होन्तु, पुरत्थिमाय दिसाय सब्बे सत्ता अव्यापज्जा होन्तु....'**- इत्यादि। इस 480 प्रकार की भावना में दिशाओं से रहित मूल 48 प्रकार मिला देने पर इनकी संख्या कुल 528 हो जाती है, जिनकी भावना करने वाले जीव भी 528 प्रकार के होते हैं[7]।

2. करुणा-

> **करुणा परदुक्खस्स अपनयनलक्खणा, तस्स असहनरसा अविहिंसा-उपट्ठाना। दुक्खभूतानामनाथभावदस्सनपदट्ठाना॥**[8]

'परदुक्खे सति साधूनं हदयकम्पनं करोतीति करुणा' परदुक्ख में जो साधुपुरुषों के हृदय में दुक्ख उत्पन्न कर देती है, 'करुणा' है। परदुक्ख का जो विनाश करती है, वह 'करुणा' है। जो दुःखित सत्त्वों में प्रसृत होती है, वह 'करुणा' है[9]।

'करुणा परदुक्खस्स अपनयनलक्खणा' पर दुःखों को दूर करना इसका लक्षण है और पर दुःखों को सहन न कर सकना इसका कृत्य है। दुःखसंतप्त सत्त्व को देखकर उसके दुःख का प्रहाण करने का स्वभाव साधुओं को कम्पित कर देता है। इस प्रकार करुणा दुःखों को प्रहाण करने के लक्षण वाली है और दूसरों के कष्टों को जानकर उन्हें सहन न कर पाने वाले कृत्यवाली है।

'अविहिंसा-उपट्ठाना' यह योगियों के ज्ञान में अविहिंसा के रूप में अवभासित होती है। करुणा भावना की सम्यक्-निष्पत्ति से विहिंसा का उपशम होता है। विहिंसा द्वेष है। द्वेष अन्य सत्त्वों का वध, ताड़न-पीड़न आदि चाहता है। इसके इतर करुणा अन्य सत्त्वों को इन कष्टों से बचाना चाहती है।

'दुक्खभूतानामनाथभावदस्सनपद्ठाना' दुःखी सत्त्वों के अनाथभाव को देखनेवाला योनिशोमनसिकार इसका आसन्न कारण है।

अपने स्वजन को दुःखी देखकर जो करुणा-सदृश भाव की उत्पत्ति होती है, वह करुणा नहीं कही जा सकती, क्योंकि यह एक 'शोक' नामक दौर्मनस्यवेदना है। करुणोत्पत्ति काल में चित्त क्लेशयुक्त नहीं होता, अपितु करुणा के कुशलधर्म होने के कारण यह प्रसादयुक्त होता है।

करुणा के **'अनोधिसो फरण'** और **'ओधिसो फरण'** प्रकार से दो भेद होते हैं। **'अनोधिसो फरण'** के 5 और **'ओधिसो फरण'** के 7 भेद होने के कारण यह 12 प्रकार की होती है। इनके अभ्यासी जीव भी 12 प्रकार के होते हैं। करुणा दुःखितसत्त्वप्रज्ञप्ति का आलम्बन करती है, इसलिए **'सब्बे सत्ता दुक्खा मुञ्चन्तु'**- इस प्रकार इसकी अलग-अलग 12 भावनाएँ की जाती हैं। 12 करुणा प्रकारों को 10 दिशाओं से गुणा करने पर इनकी संख्या 120 की हो जाती है। जैसे- **'पुरत्थिमाय दिसाय सब्बे सत्ता दक्खा मुञ्चन्तु'**....आदि। इनमें दिशा रहित 12 मूल करुणा को मिला देने पर ये 132 की संख्या में हो जाती हैं। करुणा न केवल दुःखित सत्त्वों का, अपितु अत्यन्त दुश्चरित जीवों का जिनका अपाय भूमि में उत्पाद स्पष्ट है, उनका भी आलम्बन करती है।[10]

3. मुदिता-

''पमोदनलक्खणा एसा अनिस्सायनरसका।
अरतिविघातुपट्ठाना लक्खोदस्सनपद्ठाना[11]॥''

'तंसमङ्गिनो मोदन्ति ताया ति मुदिता' मुदितायुक्त पुद्गल के हर्षित होने का कारण 'मुदिता' है। जो धर्म स्वयं मुदित होता है वह 'मुदिता' है या मोदनमात्र 'मुदिता' है[12]।

'पमोदनलक्खणा एसा' सुखी सत्त्वों को देख प्रमुदित अथवा हर्षित होना इसका लक्षण है। 'अनिस्सायनरसका' ईर्ष्या न करना इसका कृत्य है।

'अरतिविघातुपट्ठाना' यह पर सम्पत्ति में अरति करने वाला धर्म नहीं है- ऐसा योगी के ज्ञान में अवभासित होता है।

'लक्खीभावपदट्ठाना' परसम्पत्तिदर्शन इसका आसन्न कारण है।

यह अन्यों को गुण, श्री सम्पत्ति से सम्पन्न देखकर उनके प्रति ईर्ष्या न उत्पन्न होने देने वाला धर्म है। स्वजनों को सम्पन्न देखकर प्रमुदित होने वाला धर्म 'मुदिता' नहीं है, यह 'प्रतिरूपिका मुदिता' है। यह प्रीतिबल से उत्पन्न सौमनस्यसहगत लोभमूल चित्त है।

परिजनों की समृद्धि देखकर उत्पन्न होने वाले प्रमोद का आलम्बन उनकी समृद्धि है और उनकी विपन्नता देव उत्पन्न दयाभाव का आलम्बन उनकी विपन्नता है। करुणा एवं मुदिता का आलम्बन कभी भी किसी की सम्पन्नता अथवा विपन्नता नहीं होती। पञ्चस्कन्धात्मक सत्त्व ही उनका सदा आलम्बन होते हैं।

इसे **'अनोधिसो फरण'** एवं **'ओधिसो फरण'** के भेद से 2 प्रकार का बताया गया है। **'अनोधिसो फरण'** के 5 और **'ओधिसो फरण'** के 7=12 प्रकार होते हैं। यह सुखितसत्त्वप्रज्ञप्ति का आलम्बन करती है। कहा गया है- **'सब्बे सत्ता यथालद्धसम्पत्तितो मा विगच्छन्तु'**- इस प्रकार पृथक्-पृथक् 12 प्रकार से इसकी भावना की जाती है। इन 12 का 10 दिशाओं से गुणा करने पर यह 120 प्रकार की हो जाती है। जैसे- **'पुरत्थिमाय दिसाय सब्बे सत्ता यथालद्धसम्पत्तितो मा विगच्छन्तु'**.... इत्यादि। इन 120 प्रकारों में दिशारहित मूल 12 प्रकारों को सम्मिलित कर देने पर इनकी कुल संख्या 132 हो जाती है। अतः इसकी भावना करने वाले सत्त्व भी 132 प्रकार के होते हैं।

4. उपेक्षा- 'उपेक्खतीति उपेक्खा' उपेक्षा करनेवाला धर्म उपेक्षा कहलाता है। विषय के प्रति रागद्वेष न रखने वाले धर्म को **'उपेक्षा'** कहते हैं। परमार्थरूप से यह **'तत्रमज्झत्तता'** चैतसिक है। मैत्री के समान यह न तो अन्य सत्त्वों के हित की कामना करती है; न करुणा के समान अन्य सत्त्वों के दुःखों का प्रहाण करने की अभिलाषा रखती है। यह न मुदिता के समान अन्य सत्त्वों की सुखसम्पत्ति देखकर सुख का अनुभव करती है, अपितु **'सब्बे सत्ता कम्मस्सका'** अर्थात् समस्त जीव अपने-अपने कर्म के वशीभूत हैं, अपने-अपने कर्मानुसार फल का भोग करते हैं- ऐसा विचार कर उनके प्रति उपेक्षाभाव रखती है। यह उपेक्षितसत्त्वप्रज्ञप्ति का आलम्बन करती है। यह भी **'अनोधिसोफरण'** एवं **'ओधिसोफरण'** भेद से दो प्रकार की होती है। यह भी 132 प्रकार की है। भावना करते समय **'सब्बे सत्ता दुक्खा मुञ्चन्तु'** के स्थान पर **'सब्बे सत्ता कम्मस्सका'**- इस प्रकार भावना की जाती है[13]। उपेक्षा करना मात्र ब्रह्मविहार नहीं है अपितु रागद्वेष का ज्ञान न होने से सत्त्वों के प्रति उपेक्षा करनेवाली एक अज्ञानोपेक्षा भी होती है, यह मोह है। उपेक्षा द्विविध होती है- **'उपेक्षा ब्रह्मविहार'** और **'उपेक्षा पारमिता'**। इनमें भेद परिलक्षित होता है। उपेक्षा ब्रह्मविहार का कार्य मुख्यतः सत्त्वों के प्रति मैत्री, करुणा, मुदिता न करके उपेक्षा मात्र करना है, जबकि उपेक्षा पारमिता मुख्यरूप से सत्त्वों द्वारा अपने प्रति किए गए दुश्चरित या सुचरित का आलम्बन करके द्वेष अथवा प्रसन्नता नही है।

समस्त कुशलकर्म इच्छामूलक हैं। इसलिए चारों ब्रह्मविहार के आदि में इच्छा है, मध्य में नीवरण आदि क्लेशों का परित्याग है, और अन्त में अर्पणा समाधि है। एक अथवा अनेक जीव प्रज्ञप्ति रूप में इन भावनाओं के आलम्बन हैं। आलम्बन की वृद्धि क्रमशः होती है। आरम्भ में एक आवास के जीवों के प्रति भावना की जाती है, क्रमशः आलम्बन की वृद्धि कर एक ग्राम, एक जनपद, एक राज्य, एक दिशा, एक चक्रवाल के जीवों के प्रति भावना होती है[14]। समस्त क्लेश, द्वेष, मोह, राग पाक्षिक हैं। इनसे चित्तविशुद्धि

के ये ब्रह्मविहार श्रेष्ठतम उपाय हैं। सत्त्वों के प्रति कुशलचित्त की चार वृत्तियाँ हैं- परहितसाधन, उनका दु:खापनयन, उनकी सम्पन्नावस्था देखकर प्रसन्न होना और समस्त प्राणियों के प्रति निष्पक्ष और समदर्शी होना। इसलिए चार ब्रह्मविहारों की व्यवस्था है। इसकी भावना करने वाले को सर्वप्रथम चाहिए कि वह मैत्रीभाव द्वारा सत्त्वहित सम्पादन करे। इसके बाद दु:खाभिभूत जीव की प्रार्थना सुनकर करुणाभाव द्वारा उनके दु:खों का निराकरण करे। इसके अनन्तर दु:खी जीवों की सम्पन्नावस्था देखकर मुदिताभावना द्वारा प्रमुदित होना चाहिए पुन: कर्तव्याभाव में उपेक्षाभाव द्वारा उदासीनता का अवलम्बन करना चाहिए। इसी क्रम से इन भावनाओं की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

संदर्भ-संकेत

1. परमत्थदीपनि, पृ. 90।
2. अट्ठ0 'ब्रह्मविहारकथा', पृ. 156-161।
3. विसुद्धिमग्गो, पृ. 218; अट्ठ, पृ. 159-160।
4. बौद्धधर्म-दर्शन, आचार्य नरेन्द्रदेव, मोतीलाल बनारसीदास, पृ. 97।
5. विभा0, पृ. 197।
6. विभ0 अ0, पृ. 331।
7. पटिसम्भिदामग्ग, पृ. 379-381।
8. ब. भा. टी.। विसुद्धिमग्ग, पृ. 213-14; अट्ठ. पृ. 157।
9. अट्ठ. पृ. 157। परमत्थदीपनि, पृ. 89। विभा., पृ. 85। अभिधर्मकोश, 8 29, पृ. 231।
10. विसुद्धिमग्ग, पृ. 213-14; अट्ठ. पृ. 158।
11. विसुद्धिमग्ग, पृ. 213-15; अट्ठ. पृ. 157।
12. अट्ठ. पृ. 157।
13. विसुद्धिमग्गो, पृ. 215; विभङ्ग, पृ. 330-332।
14. बौद्धधर्म-दर्शन, आचार्य नरेन्द्रदेव, मोतीलाल बनारसीदास, पृ. 96।

-डॉ. मोहन मिश्र

पोस्ट डॉक्टोरल फेलो,

पालि अध्ययन केन्द्र,

रा. सं. सं., लखनऊ परिसर

विशाल खण्ड-4, गोमतीनगर, लखनऊ

पालि अध्ययन केन्द्र से प्रकाशित पुस्तकों की सूची

1. **खुद्दकपाठपालि** (रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-आङ्गलानुवादसहिता)
   उदानपालि एवं इतिवुत्तकपालि (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 500/-
2. **सुत्तनिपातपालि**(रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-आङ्गलानुवादसहिता) रु. 500/-
3. **विमानवत्थुपालि एवं पेतवत्थुपालि** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 500/-
4. **थेरगाथापालि एवं थेरीगाथापालि** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 500/-
5. **संयुत्तनिकायपालि (1. सगाथवग्गो)** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 500/-
6. **संयुत्तनिकायपालि (2. निदानवग्गो)** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 500/-
7. **संयुत्तनिकायपालि (3. खन्धवग्गो)** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 500/-
8. **संयुत्तनिकायपालि (4. सळायतनवग्गो)** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 500/-
9. **संयुत्तनिकायपालि (5. महावग्गो)** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 600/-
10. **अपदानपालि-I** (थेरापदानपालि-1-20 वग्गो) रु. 400/-
    (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)
11. **बुद्धवंसपालि** (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता) रु. 225/-
12. **थूपवंसो** (रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-आङ्गलानुवादसहिता) रु. 260/-
13. **पालि-सल्लाप-सहस्सकं** (पालि-संस्कृत-हिन्दी) रु. 50/-
14. **पाइअ-सद्द-कोसो** (प्राकृत डिक्शनरी) रु. 370/-
    (प्राकृत-रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अंग्रेजी सहित)
15. **पालि-प्राकृत-अनुशीनलम्** रु. 100/-
    (पालि-प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर आधारित षाण्मासिक शोध पत्रिका)

प्राप्ति-स्थान

प्राचार्य

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) विशाल खण्ड-4
गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.) दूरभाष : 0522-2393748
Email : rskslucknow@yahoo.com

ISSN-2231-0800

गोमती
GOMATI
(A JOURNAL FOR INDOLOGICAL RESEARCH)

योऽनूचानः स नो महान्।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(मानितविश्वविद्यालयः), लखनऊ-परिसरः
NAAC द्वारा 'ए' श्रेण्यां प्रत्यायितः
विशालखण्डः-4, गोमतीनगरम्, लखनऊ-226010 (उत्तरप्रदेशः)
दूरभाषः 0522-2393748, फैक्स- 0522-2302993
सन् 2019

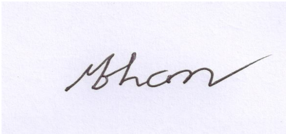

हिन्दी खण्ड

15. नाट्यशास्त्र उत्पत्ति एवं आचार्य परम्परा की समीक्षा — डॉ. नीरज तिवारी — 73
16. अरविन्द की दृष्टि में वाल्मीकीय रामायण — डॉ. हेरम्ब पाण्डेय — 82
17. महाकवि अश्वघोष — डॉ. मोहन मिश्र — 86
18. जातकों और उनकी अट्ठकथाओं का महत्त्व — डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव — 91
19. बौद्धधर्म में निहित मानवीय मूल्यों की सार्वभौमिकता — माया उपाध्याय — 97
20. जैनधर्म और पर्यावरण की पगडण्डियाँ — सुमेरीलाल — 103
21. वास्तुशास्त्र में वैदिक सन्दर्भ — मंगरु प्रसाद विश्वकर्मा — 108
22. बौद्ध धर्म में नैतिक शिक्षा के मूल तत्त्व एक दृष्टि — डॉ. प्रियंका — 113
23. माध्यमिकदर्शन की दृष्टि में पञ्चस्कन्ध की अवधारणा — डॉ. कृष्णा कुमारी — 119
24. भारतीयसौन्दर्यशास्त्र (काव्यशास्त्र के विशेष सन्दर्भ में) — रमेश चन्द्र नैलवाल — 124
25. पञ्चस्कन्ध : बौद्ध धर्म के सन्दर्भ में — डॉ. सोनल सिंह — 135
26. कालिदास के ग्रन्थों में प्रकृति के विविध स्वरूप — प्रवीक्षा दुबे — 142

आंग्ल भाषा

27. Future of Education: Autonomous Learning — Prof. Avanish Agrawal — 148

महाकवि अश्वघोष

- डॉ. मोहन मिश्र

अश्वघोष, बौद्ध महाकवि तथा दार्शनिक थे। चीनी परम्परानुसार कुषाणनरेश कनिष्क के समकालीन महाकवि अश्वघोष का समय ईसवी प्रथम शताब्दी का अन्त और द्वितीय का आरम्भ है। इन्होंने अभिधर्म की व्याख्या 'विभाषा' का भी लेखन किया था।

जीवन वृत्त- उनका जन्म साकेत (अयोध्या) में लगभग 2000 वर्ष पूर्व हुआ था। उनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था।[1] चीनी परम्परा के अनुसार महाराज कनिष्क पाटलिपुत्र के अधिपति को परास्त कर वहाँ से अश्वघोष को अपनी राजधानी पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर) ले गए थे। एक परम्परा कनिष्क द्वारा बुलाई गई चतुर्थ बौद्ध-संगीति की अध्यक्षता का श्रेय महास्थविर पार्श्व को और दूसरी परम्परा महावादी अश्वघोष को प्रदान करती है। सर्वास्तिवादी 'विभाषा' की रचनानुसार ये सर्वास्तिवादी बौद्धाचार्य थे। ये परमत को परास्त करनेवाले सम्भवतः प्रथम 'महावादी' दार्शनिक एवं कवि थे। सामान्य जन को बौद्धधर्म के प्रति आकृष्ट करने लिए इन्होंने काव्य और संगीति का आश्रय लिया। चीनी तीर्थयात्री इत्सिंग, जिसने 671 ई० से 695 ई० तक भारत भ्रमण किया था, कहता है कि अश्वघोष बौद्धधर्म के प्रबल समर्थक थे, उस समय बौद्ध मठों में उनकी रचनाओं का गायन हुआ करता था।[2]

विण्टरनिट्ज सम्राट कनिष्क के सिंहासनारूढ़ होने का समय 125 ई. मानते हैं। तदनुसार अश्वघोष का काल भी द्वितीय शताब्दी ई. कहा जा सकता है। अधिकांश विद्वान् कनिष्क को शक संवत् का प्रवर्तक मानते हैं। शक संवत्सर का आरम्भ 78 ई. से हुआ था। कीथ के अश्वघोष का समय 100 ई. के लगभग मानने का आधार भी यही है। यदि कनिष्क का राज्यकाल 78 ई. से 125 ई. मान लिया जाए तो महाकवि अश्वघोष का समय भी प्रथम शताब्दी मान लेने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। अनेक बौद्धग्रन्थों में भी ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं, जो अश्वघोष को सम्राट कनिष्क कालीन सिद्ध करते हैं। चीनी परम्परा भी सम्राट कनिष्क के द्वारा काश्मीर के कुण्डलव में आयोजित अनेक अन्तःसाक्ष्य के आधार पर अश्वघोष को कनिष्क कालीन सिद्ध करती है।[3] डॉ. जौन्स्टन के अनुसार अश्वघोष का समय 50 ईसा पूर्व और 100 ई. मध्य का रहा होगा।[4] अश्वघोषकृत 'बुद्धचरित' का उपलब्ध चीनी अनुवाद सम्भवतः पाँचवीं शताब्दी ईस्वी का है। इससे यह सपष्ट है कि भारत में प्रसिद्ध होने के पश्चात् ही इस ग्रन्थ का चीनी अनुवाद किया गया। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर सम्राट अशोक के राज्यकाल की अवधि 269 से 232 ई. पू. मानी जा सकती है। अशोक का उल्लेख 'बुद्धचरित' के अन्त में हुआ है, जिससे यह निश्चित है कि आचार्य अश्वघोष सम्राट अशोक के परवर्ती थे। चीनी परम्परा अश्वघोष को कनिष्क का दीक्षा-गुरु भी मानती है।

कनिष्क के ही समय में रची गयी अश्वघोषकृत 'अभिधर्मपिटक' की विभाषा नामक एक व्याख्या भी प्राप्त है। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ 'शारिपुत्रप्रकरण' के अनुसार इसका रचनाकाल हुविष्क का शासनकाल भी मानते हैं। हुविष्क के राज्यकाल में अश्वघोष की विद्यमानता ऐतिहासिक दृष्टि से अप्रामाणिक है। इनका राज्यकाल कनिष्क की मृत्यु के बीस वर्ष बाद का है। हुविष्क के प्राप्त सिक्कों पर कहीं भी बुद्ध का नाम नहीं मिलता, किन्तु कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध का नाम अंकित है। कनिष्क बौद्धधर्मावलम्बी और हुविष्क ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। अतः अश्वघोष का उनके दरबार में विद्यमान होना सिद्ध नहीं होता।

रचनाएँ- आचार्यरचित अनेक प्रख्यात रचनाएँ प्राप्त हैं- (1) बुद्धचरितम् (2) सौन्दरनन्दकाव्यम् (3) गण्डीस्तोत्रगाथा (4) शारिपुत्रप्रकरणम् (5) सूत्रालंकारशास्त्र (6) महायानश्रद्धोत्पादशास्त्र (7) वज्रसूची।

बुद्धचरित एक महाकाव्य है, जिसमें बुद्ध के सिद्धान्त और जीवनवृत्त हैं। एक भारतीय विद्वान् धर्मरक्ष, धर्मक्षेम या धर्मरक्ष द्वारा बुद्धचरित का चीनी अनुवाद लगभग (414-21 ई.) पाँचवीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ था। चीनी तथा तिब्बती अनुवादों में बुद्धचरित पूरे 28 सर्गों में उपलब्ध है, परन्तु मूल संस्कृत में केवल 17 सर्ग ही हैं जिनमें अन्तिम चार 19 वीं शताब्दी के आरम्भ में अमृतानन्द द्वारा जोड़े गए हैं। इसमें तथागत का जीवनचरित और उपदेश बड़ी ही रोचक वैदर्भी रीति में विविधरूपेण छन्दोबद्ध है। सौन्दरनन्दमहाकाव्य में सुन्दरी और नन्द की कथा है। यह महाकाव्य 18 सर्ग में जिसमें सिद्धार्थ के भ्राता नंद को उद्दाम काम से हटाकर संघ में दीक्षित होने का भव्य वर्णन किया गया है। इसकी केवल दो हस्तलिखित प्रतियाँ ही प्राप्त हैं, जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में नेपाल नरेश के पुस्तकालय में सुरक्षित हैं। काव्यदृष्टि से बुद्धचरित की अपेक्षा यह अधिक स्निग्ध तथा सुन्दर है। गण्डीस्तोत्रगाथा एक गीतिकाव्य है। यह एक सुन्दर गेय कविता है, जिसमें बुद्ध और संघ की स्तुति है। इसमें केवल 29 पद्य हैं जो अधिकांश स्रग्धरा छन्द में बद्ध हैं। शारिपुत्रप्रकरण या शारद्वतीपुत्रप्रकरण अपूर्ण होकर भी महनीय रूपक का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें बुद्ध द्वारा मौद्गल्यायन और शारिपुत्र को बौद्ध बनाए जाने का वर्णन है। शारिपुत्रप्रकरण अपूर्ण है तथापि महत्त्वपूर्ण है। इसकी पाण्डुलिपि के हस्तलेख या लिपि के आधार पर प्रो. लूडर्स इसे कनिष्क या हुविष्क के समय की रचना मानते हैं। 'शारिपुत्रप्रकरण' के तालपत्र पर लिखित कुछ भाग तुर्फान नामक स्थान पर प्राप्त हुए थे।[5]

सूत्रालंकारशास्त्र का मूल संस्कृत आज अप्राप्त है। आचार्य कुमारजीव द्वारा लगभग 405 ई. में इस ग्रन्थ का चीनी अनुवाद किया गया था। यह पालि-जातकों से उद्धृत सुन्दर कथाओं का संग्रह है और बौद्धधर्म के प्रचार का माध्यम है। तीर्थयात्री इत्सिंग ने अपने यात्रा विवरण में अश्वघोषकृत सूत्रालंकार का उल्लेख किया है।[6]

सम्भवतः महायान को सम्प्रदाय और सुसम्बद्ध मत का रूप देने वाले प्रथम आचार्य महाकवि अश्वघोष हैं। आचार्य परमार्थ द्वारा, अश्वघोष रचित 'महायानश्रद्धोत्पादशास्त्र' का चीनी भाषानुवाद

उपलब्ध है, किन्तु दुर्भाग्यवश इस ग्रन्थ का मूल संस्कृतानुवाद अप्राप्त है। आचार्य परमार्थ द्वारा इस ग्रन्थ के चीनी अनुवाद का विद्वानद्वय टी-सुजुकी और टी रिचर्ड द्वारा अंग्रेजी (आंग्ल) भाषानुवाद भी किया गया। तकाकुसु एवं विन्टरनित्ज जैसे विद्वान् आचार्य अश्वघोष को इस ग्रन्थ का लेखक नहीं स्वीकारते, किन्तु प्रोफेसर सुजुकी द्वारा एक परम्परानुसार चीनी सम्प्रदाय का उल्लेख करते हुए आचार्य को इस शास्त्र का लेखक सिद्ध करने के लिए जो तर्क दिया गया, वह सम्भवतः पर्याप्त है। चीनी यात्री ह्वेन्सांग की जीवनी में भी इसका प्रणेता आचार्य अश्वघोष को बताया गया है।[7] आचार्य का वज्रसूची नामक एक और प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमें सांसारिक व्यवस्था में समस्त जीव के समान होने की बात कही गई है। इसके विषयवस्तु से यूरोपीय अनुवादक और सम्पादक प्रभावित हैं।[8]

आचार्य का काल सम्भवतः ईसवी प्रथम शताब्दी रहा है। ये महाराज कनिष्क के समकालीन थे। कुछ विद्वानों के अनुसार ये हीनयानी आचार्य थे। ये प्रारम्भ में हीनयानी थे तदुपरान्त महायान में प्रवृत्त हुए।

'सौन्दरनन्द' तथा 'बुद्धचरित' में हीनयान सिद्धान्त प्रतिपादित है, किन्तु इन्होंने 'महायानश्रद्धोत्पादशास्त्र' भी लिखा है। उपरोक्त ग्रन्थों में प्रथम दो में हीनयान के साथ-साथ महायान का भी स्पष्ट उल्लेख देखा जा सकता है। महायानानुसार ये बुद्ध को "स्वयम्भू, जगत्पति, महायान समाश्रित, सर्वधर्माधिप तथा सर्वलोकाधिप प्रभु मानते हैं।[9] बुद्धचरित में ही उल्लिखित है कि- समस्त सत्त्व के हितार्थ ही सर्वबुद्धों द्वारा इस श्रेष्ठ महायान धर्म का प्रचार किया गया।

इदं मार्षा महायानं सम्बुद्धधर्मसाधनम्।
सर्वसत्त्वहिताधानं सर्वबुद्धैः प्रचारितम्॥[10]

इससे यह पुष्टि होती है कि अश्वघोष प्रारम्भ में स्थविरवादी थे तत्पश्चात् महायानी हो गये। उनके काल में उपलब्ध-महायान के मूल वैपुल्यसूत्र उपलब्ध थे, जिससे प्रभावित हो उन्होंने सम्भवतः महायान धर्म स्वीकार किया हो। इन सूत्रों के आधार पर महायान को सुसम्बद्ध रूप प्रदान करने के लिए उन्होंने महायानश्रद्धोत्पादशास्त्र की रचना की।[11] स्वयं अश्वघोष का कथन है कि- बुद्धनिर्वाण के पश्चात् उनके उपाय-कौशल्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के वास्तविक अर्थ को समझने वाले बहुत कम थे। अधिकांशों द्वारा बुद्धोपदेश को अन्यथा समझा गया। अत एव प्रस्तुत शास्त्र का उद्देश्य पृथग्जनों तथा हीनयानी श्रावकों और प्रत्येक बुद्धों के विपरीत मतों को त्यागकर भगवान् द्वारा उपदिष्ट सिद्धान्तों के वास्तविक अर्थ की अन्वेषणा है।[12]

आचार्य ने 'तथता' को आदितत्त्व कहा है। यह निर्विकार और सर्वदा एक सा रहता है। सत्ता की दृष्टि यही 'भूततथता'[13] भी है, बोध की दृष्टि से 'बोधि' प्रज्ञा या 'आलयविज्ञान', व्यापकता की दृष्टि से 'धर्मकाय' या 'धर्मधातु' तथा आनन्द की दृष्टि से 'तथागतगर्भ'[14]। व्यावहारिक दृष्टि से यह 'संसार' या जन्ममृत्यु चक्र है। पारमार्थिक दृष्टि से निर्वाण और अनन्तानन्द है। वस्तुतः यह अनिर्वचनीय है, क्योंकि यह वाणी और बुद्धि की सीमा से परे है। यह न सत् है न असत्, न सदसत् न सदसत्भिन्न, यह न एक है, न अनेक, न एकानेक न एकानेकभिन्न, यह न शून्य है, न अशून्य,

न शून्याशून न शून्याशून्यभिन्न, यह अनिर्वचनीय होते हुए भी अभावात्मक तथा असद्रूप नहीं है। यह अनुभव का विषय है, जगत् अनिर्वचनीय होने के कारण मिथ्या है किन्तु असत् नहीं क्योंकि यह व्यवहारसत्य तो है। जगत् का पारमार्थिक मिथ्या होना इसके व्यावहारिक सत्य की सिद्धि करना है। जगत् की प्रत्येक वस्तु सापेक्ष और सविकल्पक है। इसके होने पर यह होता है (अस्मिन् सति इदं भवति) यही परस्पर-सम्भवन तथा अन्योऽन्यापेक्षा ही प्रतीत्यसमुत्पाद है। अविद्या इसका आधार है, अतः अविद्याश्रित समस्त कार्य मिथ्या हैं। इसका आधारभूत तत्त्व 'तथता' ही सत्य है।

तथता बुद्धि की सीमा से परे है। जब कोई जीव बुद्धि की सीमा से आगे निकलता है, तभी वह बुद्धत्व की ओर अग्रसर होता है। बुद्धि का विनाश असम्भव है, क्योंकि इसकी सहायता से ही हम ज्ञानाभिमुख होते हैं। बुद्धि विना ज्ञान की प्राप्ति असम्भव है। स्वयं ज्ञान ही अविद्या के वशीभूत बुद्धि के रूप में भासित होता है। तत्व ही अविद्या के कारण संसाररूप से भासित होता है।

अश्वघोष का कथन है कि जिसप्रकार समुद्र का शान्त जल वायुवेग से प्रभावित होकर, अनेक तरंगों के रूप में प्रतीत होता है, उसी प्रकार विशुद्धज्ञानरूप तत्त्व अविद्या के प्रभाववश अनेक परिमित बुद्धि वाले व्यवच्छिन्न जीवों के रूप में भासित होता है।[15] तथता ही उपाधिभेद के कारण अनेक जीवों के रूप में भासित होती है।[16] विषयी जीव और विषयजगत् के रूप में भासित यह सम्पूर्ण संसार इसी 'सोपधितथता' की लीला है।[17] यही बुद्धज्ञान है और परमानन्द है। यही अमृततत्त्व है। इसका साक्षात्कार ही परमार्थ है। इसे ही अश्वघोष ''शान्त, शिव, नैष्ठिक और अच्युत-पद कहते हैं'' क्षेमं पदं नैष्ठिकमच्युतं तत्। शान्तं शिवं साक्षिकुरूष्व धर्मम्।[18]

बुद्धज्ञान शान्त जगत् के मोहान्धकार को नष्ट करने के लिए ही उदित होते हैं।

जगत्ययं मोहतमो निहन्तु ज्वलयिष्यति ज्ञानमयो हि सूर्यः।[19]

जीवन्मुक्त बोधिसत्त्व शान्त और शिवधर्म का साक्षात्कार करके नैष्ठिक और अच्युत पद प्राप्त कर लेता है; उसके लिए कोई कर्त्तव्य शेष नहीं रहता, तथापि वह अपने मुक्ति की परवाह न करते हुए लोकसंग्रह के लिए दुःखसन्तप्त व अज्ञानी जीवों की मुक्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहता है।

अवाप्तकार्यो सि परां गतो न तेऽस्ति किञ्चित् करणीयमण्वपि।
अतः परं सौम्य चरानुकम्पया विमोक्षयन् कृष्णगतान् परानपि।।[20]

महायान मतों के सिद्धान्त बीजरूप में आचार्य अश्वघोष के दर्शन में विद्यमान थे। यह जगत् व्यावहारिक रूप से सत्य होते हुए भी पारमार्थिक रूप से मिथ्या है, क्योंकि बुद्धि द्वारा इसकी सिद्धि सम्भव नहीं है। शून्य, अशून्य शून्याशून्य तथा शून्याशून्यभिन्न, इन चार कोटियों से परे 'चतुष्कोटि-विनिर्मुक्त' तथा अनिर्वचनीय है। यह सिर्फ स्वानुभूति का विषय है। यही सिद्धान्त आगे 'शून्यवादियों' या माध्यमिक सम्प्रदाय द्वारा विकसित हुआ तथा तत्त्व विशुद्धविज्ञान रूप है- यह आगे विज्ञानवाद अथवा योगाचार में विकसित है।

अश्वघोष बौद्ध-दर्शन-साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित थे। इनकी गणना उन कलाकारों की श्रेणी में की जाती है, जो कला की यवनिका के पीछे छिपकर अपनी मान्यताओं को प्रकाशित करते हैं। इन्होंने कविता के माध्यम से बौद्ध-सिद्धान्तों को जनसामान्य हेतु सुलभ बनाया। भगवान् बुद्ध के प्रति अटूट आस्था तथा अन्य धर्मों के प्रति आदर महाकवि के व्यक्तित्व की महान् विशेषता है। आचार्य अश्वघोष कवि होने के साथ-साथ कुशल संगीतज्ञ भी थे। उनके विचारों को प्रभावशाली बनाने में उनकी गीतात्मकता का विशेष योगदान रहा। उनका व्यक्तित्व तथा कवित्व अद्‌भुत था।

कुछेक समालोचक इन्हें कालिदास की काव्यकला का प्रेरक भी स्वीकारते हैं। कालिदास तथा अश्वघोष की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि कालिदास अश्वघोष के परवर्ती थे। अश्वघोष की तिथि प्रथम शताब्दी ई. पू. स्वीकारने से यह माना जा सकता है कि दोनों रचनाओं में जो साम्य दृष्टिगत है, उससे अश्वघोष का प्रभाव कालिदास पर स्पष्ट है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि अश्वघोष ने बुद्धचरित में जिन श्लोकों को लिखा, कालिदासकृत कुमारसम्भव और रघुवंश में उन्हीं का अनुकरण दृष्टव्य है।

सन्दर्भ-संकेत-

1. आर्यसुवर्णाक्षीपुत्रस्य साकेतस्य भिक्षोराचार्यस्य भदन्ताश्वघोषस्य महाकवेर्महावादिनः कृतिरियम्"-कविकृत सौन्दरनन्द का अन्तिम वाक्य।
2. बुद्धचरित, सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2000।
3. बौद्धदर्शन और वेदान्त, डॉ. चन्द्रधर शर्मा, विजन-विभूति प्रकाशन, इलाहाबाद-94।
4. बुद्धचरित, सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2000।
5. बौद्धदर्शन और वेदान्त, डॉ. चन्द्रधर शर्मा, विजन-विभूति प्रकाशन, इलाहाबाद-94; बुद्धचरित- 16,64-75।
6. बुद्धचरित, सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2000।
7. बौद्धदर्शन और वेदान्त, डॉ. चन्द्रधर शर्मा, विजन-विभूति प्रकाशन, इलाहाबाद-94।
8. बौद्धदर्शन और वेदान्त, डॉ. चन्द्रधर शर्मा, विजन-विभूति प्रकाशन, इलाहाबाद-2006।
9. बौद्धदर्शन और वेदान्त, डॉ. चन्द्रधर शर्मा, विजन-विभूति प्रकाशन, इलाहाबाद-2006।
10. बुद्धचरित- 16, 85। 11. बौद्धदर्शन और वेदान्त, डॉ. चन्द्रधर शर्मा, विजन-विभूति प्रकाशन, इलाहाबाद-2006।
12. सुजुकी महायानश्रद्धोत्पादशास्त्र, पृ. 47; रिचर्ड, पृ. 1 का आंग्ल भाषानुवाद।
13. सुजुकी : पृ. 112; रिचर्ड : पृ. 7।
14. रिचर्ड : पृ. 10। 15. रिचर्ड : पृ. 8। 16. रिचर्ड : पृ. 11।
17. रिचर्ड : पृ.11-12। 18. सौन्दरनन्द, 16, 26-27। 19. बुद्धचरित 1,74।
20. सौन्दरनन्द 18, 54।

– वरिष्ठ शोध अनुसन्धाता-पालि, पालि अध्ययन केन्द्र,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) लखनऊ परिसर, लखनऊ

******

UGC Care Journal

ISSN: 2347-3428

Dharmadoot

Published since 1935

धर्मदूत

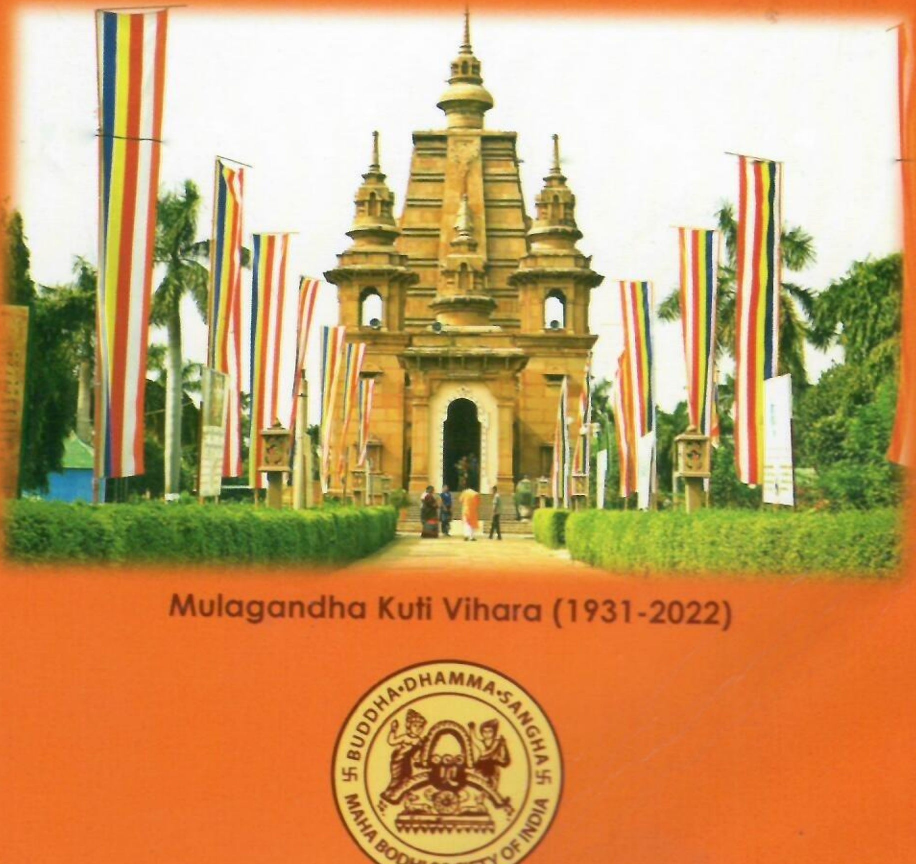

Mulagandha Kuti Vihara (1931-2022)

2566 B.E. Vol. 88 November 2022

MAHA BODHI SOCIETY OF INDIA
(Anagarika Dharmapala International Instititute of Pali & Buddhist Studies)
Sarnath, Varanasi (U.P.) India

The Role of Maha Bodhi Society of India, Sarnath Centre in the Expansion of Pāli Studies & Buddhist Literature
Gyanaditya Shakya 14

पालिनयस्सालोके सिक्खासुत्तानि
उमाशंकर व्यास 15

पञ्चगतिदीपनी : एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन
उज्ज्वल कुमार 15

पालिगन्थेसु पुच्छाविसज्जननयो
रामनक्षत्र प्रसाद 19

पालि साहित्य में 'कल्प' की अवधारणा एवं बुद्धों से सम्बन्धों का समीक्षात्मक अध्ययन
अरुण कुमार यादव 201

सम्यक् सम्बुद्ध का अनित्यवाद
रमेश प्रसाद 208

पालि-व्याकरण-परम्परा में समास की अवधारणा ('पदरूपसिद्धि' के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल 213

पालिवाङ्मय में प्रयुक्त "थेरवाद" एवं "विभज्जवाद" शब्दों के तात्पर्य का अनुशीलन
डॉ० सुस्मिता 236

Book Review

1. Buddha, Buddhism and Buddhist Art by B R Mani and Sanjib Kumar Singh in Association with Bimlendra Kumar and Anasua Das 253
   Reviewer by: Radha Banerjee Sarkar
2. An Appreciation of the Study of the Nandopanandanāgadamana-kathā by Prakash, Animesh 256
   Reviewed by: Sanghasen Singh
3. भेसज्जमञ्जूसा (देवनागरी संस्करण)- बिमलेन्द्र कुमार, समीक्षक: प्रफुल्ल गड़पाल 260

Notes and News 265

प्रकाशक

वीर बहादुर पब्लिकेशन

साउथ सीटी, राय बरेली रोड,

लखनऊ - २२६०२५

ISBN : 978-93-84817-71-8

बुद्ध का धर्मकाय

लेखन व सम्पादन

डॉ. मोहन मिश्र

बुद्ध का धर्मकाय

लेखन व सम्पादन

डॉ. मोहन मिश्र

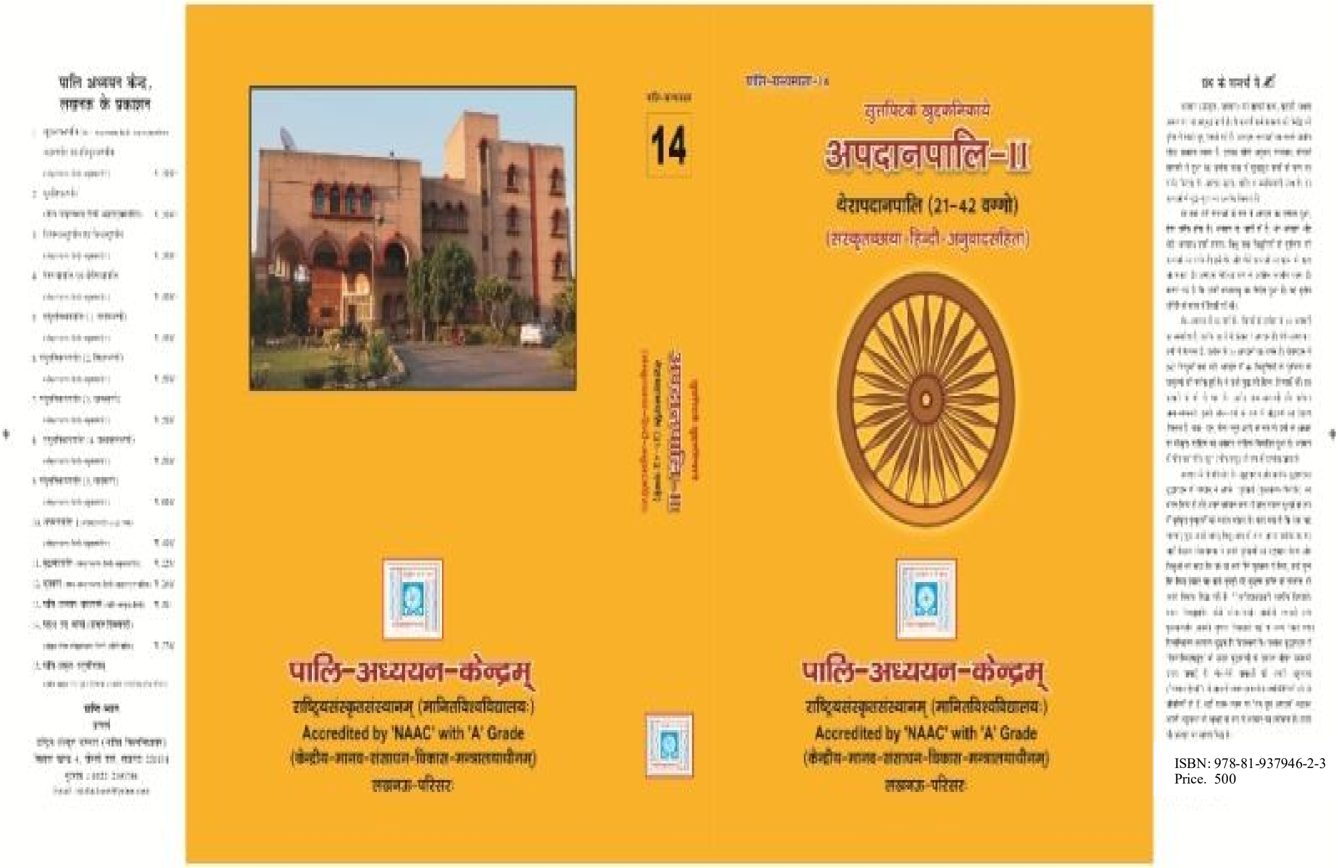

ISBN: 978-81-937946-2-3
Price. 500

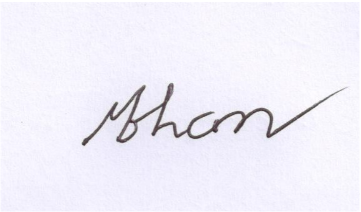

पालि-ग्रन्थमाला-14

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

अपदानपालि-II

(थेरापदानपालि-21-42 वग्गो)

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

संरक्षकः

प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री, कुलपतिः

संस्कृतच्छायाकारः सम्पादकश्च

डॉ. मोहनमिश्रः

हिन्दी अनुवादिका

डॉ. प्रियंका

पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)

NAAC द्वारा 'ए' श्रेण्यां प्रत्यायितः

(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)

लखनऊ-परिसरः, विशालखण्डः-4, गोमतीनगरम्, लखनऊ (उ. प्र.)

Pāli-Granthamālā-14

Suttapitake Khuddakanikāye

APADĀNAPĀLI-II

(THERĀPADĀNAPĀLI- 21-42 VAGGO)

(With Sanskritacchāyā & Hindi Translation)

Patron

Prof. Parameshwara Narayana Shastry

Vice-Chancellor

Sanskritacchāyākāra & Editor

Dr. Mohan Mishra

Hindi Translator

Dr. Priyanka

Pali Study Centre

Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
Accredited by NAAC with 'A' Grade
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus, Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U. P.)

पालि-ग्रन्थमाला-14

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

अपदानपालि-II (थेरापदानपालि-21-42 वग्गो)

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहित)

संस्कृतच्छायाकारः सम्पादकश्च - डॉ. मोहनमिश्रः

हिन्दी अनुवादिका - डॉ. प्रियंका

प्रकाशक : प्रो. विजय कुमार जैन
© प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ.प्र.)
दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : [illegible]

ग्रन्थमाला सम्पादक : प्रो. विजय कुमार जैन
डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

प्राप्ति स्थान :
1. प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमतीनगर, लखनऊ-226010
दूरभाष : 0522-2393748 [illegible]
2. दिल्ली मुख्यालय, बिक्री विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
56-57 इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
फोन- 28523949

ISBN :

मूल्य : रु.

प्रथम संस्करण : 2019

मुद्रक : गणपति प्रिंटर्स, कानपुर रोड, लखनऊ

अपदानपाळि-II

विषयानुक्रमणिका

विसयक्कमो

थेरापदानपाळि (21-42)

21. कणिकारपुप्फियवग्गो	**1-11**
1. कणिकारपुप्फियत्थेरअपदानं	1
2. मिनेलपुप्फियत्थेरअपदानं	2
3. किङ्कणिपुप्फियत्थेरअपदानं	3
4. तरणीयत्थेरअपदानं	4-5
5. निग्गुण्डिपुप्फियत्थेरअपदानं	5
6. उदकदायकत्थेरअपदानं	6
7. सललमालियत्थेरअपदानं	7
8. कोरण्डपुप्फियत्थेरअपदानं	8
9. आधारदायकत्थेरअपदानं	9
10. पापनिवारियत्थेरअपदानं	10-11
22. हत्थिवग्गो	**12-23**
1. हत्थिदायकत्थेरअपदानं	12
2. पानधिदायकत्थेरअपदानं	13
3. सच्चसञ्ञकत्थेरअपदानं	14-15
4. एकसञ्ञकत्थेरअपदानं	15-16
5. रंसिसञ्ञकत्थेरअपदानं	16-17
6. सन्धितत्थेरअपदानं	17-18
7. तालवण्टदायकत्थेरअपदानं	18-19
8. अक्कन्तसञ्ञकत्थेरअपदानं	19-20
9. सप्पिदायकत्थेरअपदानं	21-22
10. पापनिवारियत्थेरअपदानं	22-23
23. आलम्बणदायकवग्गो	**24-35**
1. आलम्बणदायकत्थेरअपदानं	24-25
2. अजिनदायकत्थेरअपदानं	25-26
3. द्वेरतनियत्थेरअपदानं	26-28
4. आरक्खदायकत्थेरअपदानं	28-29
5. अब्याधिकत्थेरअपदानं	29-30
6. अङ्कोलपुप्फियत्थेरअपदानं	30-31
7. सोवण्णवटंसकियत्थेरअपदानं	31-32
8. मिञ्जवटंसकियत्थेरअपदानं	32-33
9. सुकतावेळियत्थेरअपदानं	33-34
10. एकवन्दनियत्थेरअपदानं	34-35
24. उदकासनवग्गो	**36-44**
1. उदकासनदायकत्थेरअपदानं	36
2. भाजनपालकत्थेरअपदानं	37
3. सालपुप्फियत्थेरअपदानं	38
4. किलञ्जदायकत्थेरअपदानं	39
5. वेदिकारकत्थेरअपदानं	40
6. वण्णकारत्थेरअपदानं	41
7. पियालपुप्फियत्थेरअपदानं	42
8. अम्बयागदायकत्थेरअपदानं	42-43
9. जगतिकारकत्थेरअपदानं	43
10. वासिदायकत्थेरअपदानं	44
25. तुवरदायकवग्गो	**45-53**
1. तुवरदायकत्थेरअपदानं	45
2. नागकेसरियत्थेरअपदानं	46
3. नळिनकेसरियत्थेरअपदानं	47
4. विरवपुप्फियत्थेरअपदानं	48
5. कुटिधूपकत्थेरअपदानं	48-49
6. पत्तदायकत्थेरअपदानं	49
7. धातुपूजकत्थेरअपदानं	50
8. सत्तलिपुप्फपूजकत्थेरअपदानं	50-51
9. बिम्बिजालियत्थेरअपदानं	51-52
10. उद्दालकदायकत्थेरअपदानं	52-53
26. थोमकवग्गो	**54-63**
1. थोमकत्थेरअपदानं	54
2. एकासनदायकत्थेरअपदानं	55

3. चितकपूजकत्थेरअपदानं 56
4. तिकण्णिकपुप्फियत्थेरअपदानं 57
5. सत्तपाटलियत्थेरअपदानं 58
6. उपाहनदायकत्थेरअपदानं 58-59
7. मञ्जरिपूजकत्थेरअपदानं 59-60
8. पण्णदायकत्थेरअपदानं 60-61
9. कुटिदायकत्थेरअपदानं 61-62
10. अग्गपुप्फियत्थेरअपदानं 62-63

27. पदुमुक्खिपवग्गो 64-72
1. आकासुक्खिपियत्थेरअपदानं 64
2. तेलमक्खियत्थेरअपदानं 65
3. अड्ढचन्दियत्थेरअपदानं 66
4. पदीपदायकत्थेरअपदानं 66-67
5. बिळालिदायकत्थेरअपदानं 67-68
6. मच्छदायकत्थेरअपदानं 68-69
7. जवहंसकत्थेरअपदानं 69
8. सळलपुप्फियत्थेरअपदानं 70
9. उपागतासयत्थेरअपदानं 70-71
10. तरणियत्थेरअपदानं 71-72

28. सुवण्णबिब्बोहनवग्गो 73-81
1. सुवण्णबिब्बोहनियत्थेरअपदानं 73
2. तिलमुट्ठिदायकत्थेरअपदानं 74
3. चङ्कोटकियत्थेरअपदानं 75
4. अब्भञ्जनदायकत्थेरअपदानं 76
5. एकञ्जलिकत्थेरअपदानं 77
6. पोत्थकदायकत्थेरअपदानं 78
7. चितकपूजकत्थेरअपदानं 78-79
8. आलुवदायकत्थेरअपदानं 79-80
9. एकपुण्डरीकत्थेरअपदानं 80
10. तरणीयत्थेरअपदानं 80-81

29. पण्णदायकवग्गो 82-91
1. पण्णदायकत्थेरअपदानं 82
2. फलदायकत्थेरअपदानं 83-84
3. पच्चुग्गमनियत्थेरअपदानं 84-85
4. एकपुप्फियत्थेरअपदानं 85
5. मघवपुप्फियत्थेरअपदानं 86
6. उपट्ठाकदायकत्थेरअपदानं 86-87
7. अपदानियत्थेरअपदानं 88
8. सत्ताहपब्बजितत्थेरअपदानं 89-90
9. बुद्धुपट्ठाकत्थेरअपदानं 89-90
10. पुब्बङ्गमनियत्थेरअपदानं 90-91

30. चितकपूजकवग्गो 92-101
1. चितकपूजकत्थेरअपदानं 92
2. पुप्फधारकत्थेरअपदानं 93
3. छत्तदायकत्थेरअपदानं 94-95
4. सद्दसञ्ञकत्थेरअपदानं 95
5. गोसीसनिक्खेपकत्थेरअपदानं 96-97
6. पादपूजकत्थेरअपदानं 97
7. देसकित्तकत्थेरअपदानं 98
8. सरणगमनियत्थेरअपदानं 99
9. अम्बपिण्डियत्थेरअपदानं 99-100
10. अनुसंसावकत्थेरअपदानं 100-101

31. पदुमकेसरवग्गो 102-112
1. पदुमकेसरियत्थेरअपदानं 102
2. सब्बगन्धियत्थेरअपदानं 103
3. परमन्नदायकत्थेरअपदानं 103-104
4. धम्मसञ्ञकत्थेरअपदानं 104-105
5. फलदायकत्थेरअपदानं 106
6. सम्पसादकत्थेरअपदानं 106-108
7. आरामदायकत्थेरअपदानं 108-109
8. अनुलेपदायकत्थेरअपदानं 109-110
9. बुद्धसञ्ञकत्थेरअपदानं 110-111
10. पब्भारदायकत्थेरअपदानं 111-112

32. आरक्खदायकवग्गो 113-124
1. आरक्खदायकत्थेरअपदानं 113
2. भोजनदायकत्थेरअपदानं 113-114
3. गतसञ्ञकत्थेरअपदानं 115
4. सत्तपदुमियत्थेरअपदानं 115-116
5. पुप्फासनदायकत्थेरअपदानं 117-118
6. आसनसन्थविकत्थेरअपदानं 118-119
7. सद्दसञ्ञकत्थेरअपदानं 119-120
8. तिरंसियत्थेरअपदानं 120-122
9. कन्दलिपुप्फियत्थेरअपदानं 122-123
10. कुमुदमालियत्थेरअपदानं 123-124

33. उमापुप्फियवग्गो 125-146
1. उमापुप्फियत्थेरअपदानं 125-126
2. पुळिनपूजकत्थेरअपदानं 126-127
3. हासजनकत्थेरअपदानं 127-128
4. यञ्ञसामिकत्थेरअपदानं 128-130
5. निमित्तसञ्ञकत्थेरअपदानं 130-131
6. अन्नसंसावकत्थेरअपदानं 131-132
7. निग्गुण्डिपुप्फियत्थेरअपदानं 132-137
8. सुमनावेळियत्थेरअपदानं 137-139
9. पुप्फच्छत्तियत्थेरअपदानं 139-141
10. सपरिवारच्छत्तदायकत्थेरअपदानं 141-146

34. गन्धोदकवग्गो 147-175
1. गन्धधूपियत्थेरअपदानं 147-148
2. उदकपूजकत्थेरअपदानं 148-149
3. पुन्नागपुप्फियत्थेरअपदानं 149-150
4. एकदुस्सदायकत्थेरअपदानं 150-154
5. फुसितकम्पियत्थेरअपदानं 154-157
6. पभङ्करत्थेरअपदानं 157-161
7. तिणकुटिदायकत्थेरअपदानं 161-164
8. उत्तरेय्यदायकत्थेरअपदानं 164-168
9. धम्मसवनियत्थेरअपदानं 169-172
10. उक्खित्तपदुमियत्थेरअपदानं 172-175

35. एकपदुमियवग्गो 176-189
1. एकपदुमियत्थेरअपदानं 176-177
2. तीणुप्पलमालियत्थेरअपदानं 178-179
3. धजदायकत्थेरअपदानं 179-181
4. तिकिङ्कणिपूजकत्थेरअपदानं 181
5. नळागारिकत्थेरअपदानं 182-183
6. चम्पकपुप्फियत्थेरअपदानं 183-184
7. पदुमपूजकत्थेरअपदानं 184-185
8. तिणमुट्ठिदायकत्थेरअपदानं 185-187
9. तिन्दुकफलदायकत्थेरअपदानं 187-188
10. एकञ्जलियत्थेरअपदानं 188-189

36. सद्दसञ्ञकवग्गो 190-198
1. सद्दसञ्ञकत्थेरअपदानं 190
2. यवकलापियत्थेरअपदानं 191
3. किंसुकपूजकत्थेरअपदानं 192
4. सकोटककोरण्डदायकत्थेरअपदानं 192-193
5. दण्डदायकत्थेरअपदानं 193-194
6. अम्बयागुदायकत्थेरअपदानं 194
7. सुपुटकपूजकत्थेरअपदानं 195
8. मञ्चदायकत्थेरअपदानं 195-196
9. सरणगमनियत्थेरअपदानं 196-197
10. पिण्डपातिकत्थेरअपदानं 197-198

37. मन्दारवपुप्फियवग्गो 199-207
1. मन्दारवपुप्फियत्थेरअपदानं 199
2. कक्कारुपुप्फियत्थेरअपदानं 200
3. भिसमुळालदायकत्थेरअपदानं 200-201
4. केसरपुप्फियत्थेरअपदानं 201-202
5. अङ्कोलपुप्फियत्थेरअपदानं 202
6. कदम्बपुप्फियत्थेरअपदानं 203
7. उद्दालकपुप्फियत्थेरअपदानं 203-204
8. एकचम्पकपुप्फियत्थेरअपदानं 204-205
9. तिमिरपुप्फियत्थेरअपदानं 205
10. सळलपुप्फियत्थेरअपदानं 206-207

38. बोधिवन्दनवग्गो 208-218
1. बोधिवन्दकत्थेरअपदानं 208
2. पाटलिपुप्फियत्थेरअपदानं 209-210
3. तीणुप्पलमालियत्थेरअपदानं 210-212
4. पट्टिपुप्फियत्थेरअपदानं 212-213
5. सत्तपण्णियत्थेरअपदानं 213-214
6. गन्धमुट्ठियत्थेरअपदानं 214-215

7. चितकपूजकत्थेरअपदानं	215
8. सुमनतालवण्टियत्थेरअपदानं	216
9. सुमनदामियत्थेरअपदानं	216-217
10. कासुमारिफलदायकत्थेरअपदानं	217-218
39. अवटफलवग्गो	**219-237**
1. अवटफलदायकत्थेरअपदानं	219-220
2. लबुजदायकत्थेरअपदानं	220-221
3. उदुम्बरफलदायकत्थेरअपदानं	221-222
4. पिलक्खफलदायकत्थेरअपदानं	222-223
5. फारुसफलदायकत्थेरअपदानं	223
6. वल्लिफलदायकत्थेरअपदानं	224
7. कदलिफलदायकत्थेरअपदानं	225
8. पनसफलदायकत्थेरअपदानं	226
9. सोणकोटिवीसत्थेरअपदानं	227-229
10. पुब्बकम्मपिलोतिकबुद्धअपदानं	230-237
40. पिलिन्दवच्छवग्गो	**238-341**
1. पिलिन्दवच्छत्थेरअपदानं	238-279
2. सेलत्थेरअपदानं	279-298
3. सब्बकित्तिकत्थेरअपदानं	298-304
4. मधुदायकत्थेरअपदानं	304-308
5. पदुमकूटागारियत्थेरअपदानं	308-314
6. बाकुलत्थेरअपदानं	314-321
7. गिरिमानन्दत्थेरअपदानं	321-327
8. सळलमण्डपियत्थेरअपदानं	327-328
9. सब्बदायकत्थेरअपदानं	328-333
10. अजितत्थेरअपदानं	333-341
41. मेत्तेय्यवग्गो	**342-416**
1. तिस्समेत्तेय्यत्थेरअपदानं	342-346
2. पुण्णकत्थेरअपदानं	347-350
3. मेत्तगुत्थेरअपदानं	350-355
4. धोतकत्थेरअपदानं	355-361
5. उपसीवत्थेरअपदानं	361-373
6. नन्दकत्थेरअपदानं	373-377
7. हेमकत्थेरअपदानं	377-385
8. तोदेय्यत्थेरअपदानं	385-395
9. जतुकण्णित्थेरअपदानं	395-406
10. उदेनत्थेरअपदानं	406-416
42. भद्दालिवग्गो	**417-454**
1. भद्दालित्थेरअपदानं	417-423
2. एकछत्तियत्थेरअपदानं	423-432
3. तिणसूलकछादनियत्थेरअपदानं	432-437
4. मधुमंसदायकत्थेरअपदानं	437-439
5. नागपल्लवत्थेरअपदानं	439-440
6. एकदीपियत्थेरअपदानं	440-444
7. उच्छङ्गपुप्फियत्थेरअपदानं	444-445
8. यागुदायकत्थेरअपदानं	445-449
9. पत्थोदनदायकत्थेरअपदानं	449-451
10. मञ्चदायकत्थेरअपदानं	452-454
गाथानुक्कमणिका	**I-XXVIII**

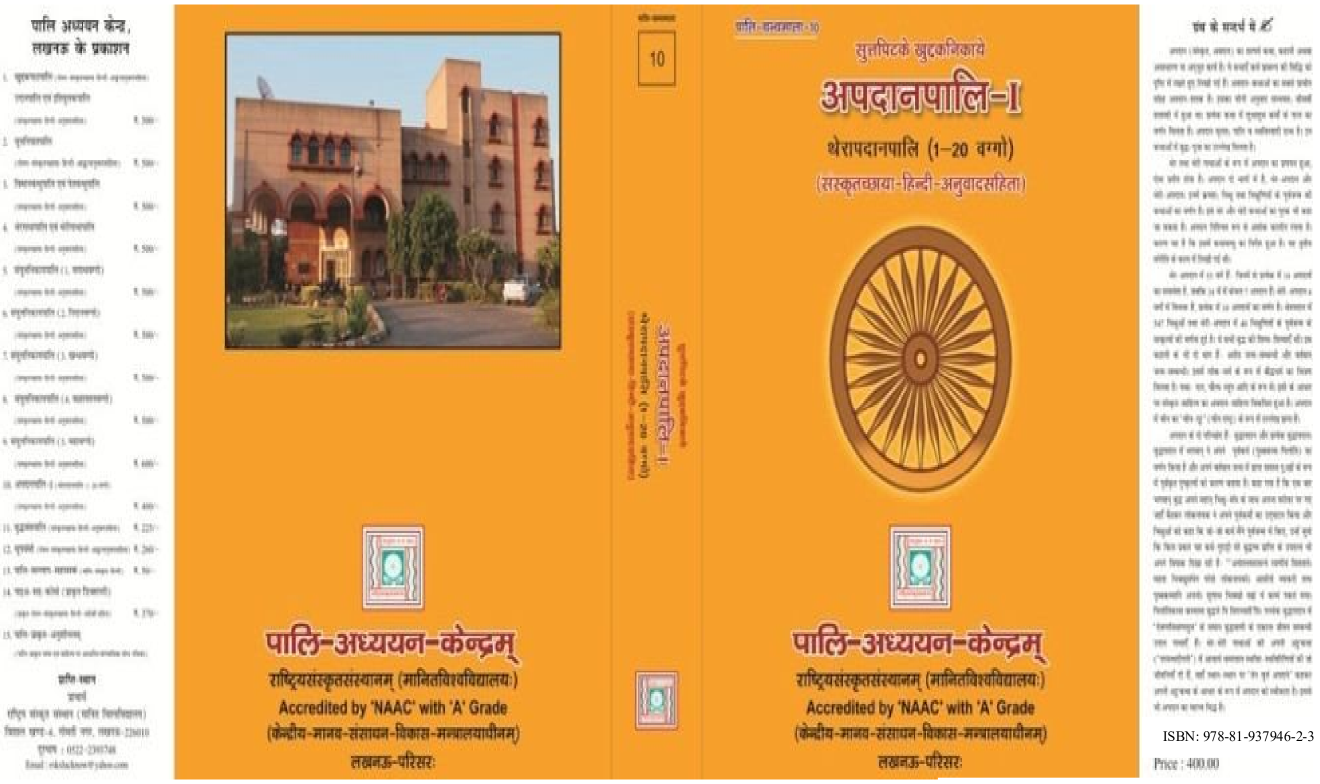

पालि अध्ययन केन्द्र,
लखनऊ के प्रकाशन
10
सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये
अपदानपालि-I
थेरापदानपालि (1–20 वग्गो)
(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)
पालि-अध्ययन-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
Accredited by 'NAAC' with 'A' Grade
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः
ISBN: 978-81-937946-2-3
Price : 400.00

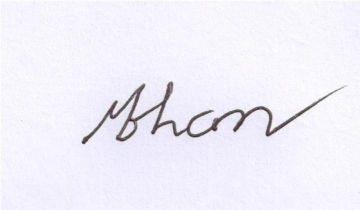

पालि-ग्रन्थमाला-10

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

अपदानपालि-I (थेरापदानपालि 1-20 वग्गो)

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

संस्कृतच्छायाकारः सम्पादकश्च - डॉ. मोहनमिश्रः

हिन्दी अनुवादिका - डॉ. प्रियंका

प्रकाशक : प्रो. विजय कुमार जैन
© प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ.प्र.)
दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rkslucknow@yahoo.com

ग्रन्थमाला सम्पादक : प्रो. विजय कुमार जैन
डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

प्राप्ति स्थान :
1. प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमतीनगर, लखनऊ-226010
दूरभाष : 0522-2393748 E-mail:rkslucknow@yahoo.com
2. दिल्ली मुख्यालय, बिक्री विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
56-57 इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
फोन- 28523949

ISBN : 978-81-937946-2-3

मूल्य : रु. 400/-

प्रथम संस्करण : 2018

मुद्रक : गणपति प्रिंटर एण्ड पैकेजर्स, कानपुर रोड, लखनऊ

Pāli-Granthamālā-10

Suttapitake Khuddakanikâye

APADÂNAPÂLI-I

(THERÂPADÂNAPÂLI- 1-20 VAGGO)

(With Sanskritacchâyâ & Hindi Translation)

Patron
Prof. Parameshwara Narayana Shastry
Vice-Chancellor

Sanskritacchâyâkâra & Editor
Dr. Mohan Mishra
Hindi Translator
Dr. Priyanka

Pali Study Centre
Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
Accredited by NAAC with 'A' Grade
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus, Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)

विषयानुक्रमणिका

थेरापदानपाळि (1-20 वग्गो)

1. बुद्धवग्गो

1. बुद्धअपदानं 1-18
2. पच्चेकबुद्धअपदानं 18-30
3. 1. सारिपुत्तत्थेरअपदानं 30-77
 2. महामोग्गल्लानत्थेरअपदानं 78-82
 3. महाकस्सपत्थेरअपदानं 83-87
 4. अनुरुद्धत्थेरअपदानं 88-90
 5. पुण्णमन्ताणिपुत्तत्थेरअपदानं 91-92
 6. उपालित्थेरअपदानं 92-123
 7. अञ्ञासिकोण्डञ्ञत्थेरअपदानं 124-127
 8. पिण्डोलभारद्वाजत्थेरअपदानं 127-130
 9. खदिरवनियरेवतत्थेरअपदानं 131-134
 10. आनन्दत्थेरअपदानं 134-139

2. सीहासनियवग्गो

1. सीहासनदायकत्थेरअपदानं 140-142
2. एकत्थम्भिकत्थेरअपदानं 142-145
3. नन्दत्थेरअपदानं 145-147
4. चूळपन्थकत्थेरअपदानं 147-151
5. पिलिन्दवच्छत्थेरअपदानं 151-154
6. राहुलत्थेरअपदानं 154-158
7. उपसेनवङ्गन्तपुत्तत्थेरअपदानं 158-160
8. रट्ठपालत्थेरअपदानं 160-163
9. सोपाकत्थेरअपदानं 164-166
10. सुमङ्गलत्थेरअपदानं 166-170

3. सुभूतिवग्गो

1. सुभूतित्थेरअपदानं 171-181
2. उपवानत्थेरअपदानं 181-192
3. तिसरणगमनियत्थेरअपदानं 192-198
4. पञ्चसीलसमादानियत्थेरअपदानं 198-203
5. अन्नसंसावकत्थेरअपदानं 203-204
6. धूपदायकत्थेरअपदानं 204-205
7. पुलिनपूजकत्थेरअपदानं 205-206
8. उत्तियत्थेरअपदानं 206-208
9. एकञ्जलिकत्थेरअपदानं 209
10. खोमदायकत्थेरअपदानं 210-211

4. कुण्डधानवग्गो

1. कुण्डधानत्थेरअपदानं 212-215
2. सागतत्थेरअपदानं 215-218
3. महाकच्चानत्थेरअपदानं 218-221
4. काळुदायित्थेरअपदानं 221-224
5. मोघराजत्थेरअपदानं 225-228
6. अधिमुत्तत्थेरअपदानं 229
7. लसुणदायकत्थेरअपदानं 230
8. आयागदायकत्थेरअपदानं 231-232
9. धम्मचक्किकत्थेरअपदानं 232-233
10. कप्परुक्खियत्थेरअपदानं 234-235

5. उपालिवग्गो

1. भागिनेय्युपालित्थेरअपदानं 236-240
2. सोणकोळिविसत्थेरअपदानं 241-246
3. काळिगोधापुत्तभद्दियत्थेरअपदानं 247-250
4. सन्निट्ठापकत्थेरअपदानं 250-251
5. पञ्चहत्थियत्थेरअपदानं 252-253
6. पदुमच्छदनियत्थेरअपदानं 253-254
7. सयनदायकत्थेरअपदानं 254-255
8. चङ्कमनदायकत्थेरअपदानं 255-257
9. सुभद्दत्थेरअपदानं 257-261
10. चुन्दत्थेरअपदानं 262-266

6. बीजनिवग्गो

1. विधूपनदायकत्थेरअपदानं 267-268
2. सतरंसित्थेरअपदानं 268-271
3. सयनदायकत्थेरअपदानं 271-272
4. गन्धोदकियत्थेरअपदानं 272-274
5. ओपवय्हत्थेरअपदानं 274-276
6. सपरिवारासनत्थेरअपदानं 276-277
7. पञ्चदीपकत्थेरअपदानं 277-279
8. धजदायकत्थेरअपदानं 279-281
9. पदुमत्थेरअपदानं 281-283
10. असनबोधियत्थेरअपदानं 283-286

7. सकचिन्तनियवग्गो

1. सकचिन्तनियत्थेरअपदानं 287-288
2. अवोपुप्फियत्थेरअपदानं 288-289
3. पच्चागमनियत्थेरअपदानं 290-291
4. परप्पसादकत्थेरअपदानं 291-293
5. भिसदायकत्थेरअपदानं 293-294
6. सुचिन्तितत्थेरअपदानं 295-296
7. वत्थदायकत्थेरअपदानं 296-298
8. अम्बदायकत्थेरअपदानं 298-300
9. सुमनत्थेरअपदानं 300-301
10. पुप्फचङ्गोटियत्थेरअपदानं 301-303

8. नागसमालवग्गो

1. नागसमालत्थेरअपदानं 304
2. पदसञ्ञकत्थेरअपदानं 305
3. बुद्धसञ्ञकत्थेरअपदानं 306
4. भिसालुवदायकत्थेरअपदानं 307
5. एकसञ्ञकत्थेरअपदानं 308
6. तिणसन्थरदायकत्थेरअपदानं 309-310
7. सूचिदायकत्थेरअपदानं 310-311
8. पाटलिपुप्फियत्थेरअपदानं 312-313
9. ठितञ्जलियत्थेरअपदानं 313-314
10. तिपदुमियत्थेरअपदानं 314-320

9. तिमिरवग्गो

1. तिमिरपुप्फियत्थेरअपदानं 321-322
2. गतसञ्ञकत्थेरअपदानं 323-324
3. निपन्नञ्जलिकत्थेरअपदानं 324-325
4. अधोपुप्फियत्थेरअपदानं 325-327
5. रंसिसञ्ञकत्थेरअपदानं 327-328
6. दुतियरंसिसञ्ञकत्थेरअपदानं 328
7. फलदायकत्थेरअपदानं 329
8. सद्दसञ्ञकत्थेरअपदानं 330
9. बोधिसिञ्चकत्थेरअपदानं 330-331
10. पदुमपुप्फियत्थेरअपदानं 331-333

10. सुधावग्गो

1. सुधापिण्डियत्थेरअपदानं 334-335
2. सुचिन्तिकत्थेरअपदानं 335-336
3. अड्ढचेळकत्थेरअपदानं 336-337
4. सूचिदायकत्थेरअपदानं 337-338
5. गन्धमालियत्थेरअपदानं 338-340
6. तिपुप्फियत्थेरअपदानं 340-341
7. मधुपिण्डिकत्थेरअपदानं 341-342
8. सेनासनदायकत्थेरअपदानं 343-344
9. वेय्यावच्चकत्थेरअपदानं 344-345
10. बुद्धुपट्ठाकत्थेरअपदानं 345-346

11. भिक्खादायिवग्गो

1. भिक्खादायकत्थेरअपदानं 347-348
2. ञाणसञ्ञिकत्थेरअपदानं 348-349
3. उप्पलहत्थियत्थेरअपदानं 349-350
4. पदपूजकत्थेरअपदानं 350-351
5. मुट्ठिपुप्फियत्थेरअपदानं 351-352
6. उदकपूजकत्थेरअपदानं 352-354
7. नळमालियत्थेरअपदानं 354-356
8. आसनुपट्ठाहकत्थेरअपदानं 356-357
9. बिळालिदायकत्थेरअपदानं 357-359
10. रेणुपूजकत्थेरअपदानं 359-360

12. महापरिवारवग्गो

1. महापरिवारकत्थेरअपदानं 361-362
2. सुमङ्गलत्थेरअपदानं 363-364
3. सरणगमनियत्थेरअपदानं 364-366
4. एकासनियत्थेरअपदानं 367-368
5. सुवण्णपुप्फियत्थेरअपदानं 368-370
6. चितकपूजकत्थेरअपदानं 370-372
7. बुद्धसञ्ञकत्थेरअपदानं 372-373
8. मग्गसञ्ञकत्थेरअपदानं 374-375
9. पच्चुपट्ठानसञ्ञकत्थेरअपदानं 375-377
10. जातिपूजकत्थेरअपदानं 377-379

13. सेरेय्यवग्गो

1. सेरेय्यकत्थेरअपदानं 380-381
2. पुप्फथूपियत्थेरअपदानं 381-384
3. पायासदायकत्थेरअपदानं 385-386
4. गन्धोदकियत्थेरअपदानं 386-387
5. सम्मुखाथविकत्थेरअपदानं 388-392
6. कुसुमासनियत्थेरअपदानं 392-394
7. फलदायकत्थेरअपदानं 394-396
8. ञाणसञ्ञिकत्थेरअपदानं 396-397
9. गण्ठिपुप्फियत्थेरअपदानं 398-399
10. पदुमपूजकत्थेरअपदानं 399-401

14. सोभितवग्गो

1. सोभितत्थेरअपदानं 402-403
2. सुदस्सनत्थेरअपदानं 404-405

3. चन्दनपूजनकत्थेरअपदानं	405-407
4. पुप्फच्छदनियत्थेरअपदानं	407-409
5. रहोसञ्ञकत्थेरअपदानं	409-410
6. चम्पकपुप्फियत्थेरअपदानं	410-411
7. अत्थसन्दस्सकत्थेरअपदानं	411-413
8. एकपसादनियत्थेरअपदानं	413-414
9. सालपुप्फदायकत्थेरअपदानं	414-415
10. पियालफलदायकत्थेरअपदानं	415-417
15. छत्तवग्गो	
1. अतिछत्तियत्थेरअपदानं	418
2. थम्भारोपकत्थेरअपदानं	419
3. वेदिकारकत्थेरअपदानं	420-421
4. सपरिवारियत्थेरअपदानं	421-422
5. उमापुप्फियत्थेरअपदानं	422-423
6. अनुलेपदायकत्थेरअपदानं	423-424
7. मग्गदायकत्थेरअपदानं	425
8. फलकदायकत्थेरअपदानं	426-427
9. वटंसकियत्थेरअपदानं	427-428
10. पल्लवद्धदायकत्थेरअपदानं	428-429
16. बन्धुजीवकवग्गो	
1. बन्धुजीवकत्थेरअपदानं	430-431
2. तम्बपुप्फियत्थेरअपदानं	431-432
3. वीथिसम्मज्जकत्थेरअपदानं	433-434
4. कक्कारुपुप्फपूजकत्थेरअपदानं	434
5. मन्दारवपुप्फपूजकत्थेरअपदानं	435
6. कदम्बपुप्फियत्थेरअपदानं	436
7. तिणसूलकत्थेरअपदानं	437
8. नागपुप्फियत्थेरअपदानं	438-439
9. पुन्नागपुप्फियत्थेरअपदानं	439-440
10. कुमुददायकत्थेरअपदानं	440-442
17. सुपारिचरियवग्गो	
1. सुपारिचरियत्थेरअपदानं	443-444
2. कणवेरपुप्फियत्थेरअपदानं	444-445
3. खज्जकदायकत्थेरअपदानं	445-446
4. देसपूजकत्थेरअपदानं	446-447
5. कणिकारछत्तियत्थेरअपदानं	447-448
6. सप्पिदायकत्थेरअपदानं	448-449
7. यूथिकपुप्फियत्थेरअपदानं	449-450
8. दुस्सदायकत्थेरअपदानं	450-451
9. समादपकत्थेरअपदानं	451-452
10. पञ्चङ्गुलियत्थेरअपदानं	452-454
18. कुमुदवग्गो	
1. कुमुदमालियत्थेरअपदानं	455-456
2. निस्सेणिदायकत्थेरअपदानं	456-457
3. रत्तिपुप्फियत्थेरअपदानं	457-458
4. उदपानदायकत्थेरअपदानं	458
5. सीहासनदायकत्थेरअपदानं	459
6. मग्गदत्तिकत्थेरअपदानं	460
7. एकदीपियत्थेरअपदानं	460-461
8. मणिपूजकत्थेरअपदानं	461-462
9. तिकिच्छकत्थेरअपदानं	462-463
10. सङ्घुपट्ठाकत्थेरअपदानं	464-465
19. कुटजपुप्फियवग्गो	
1. कुटजपुप्फियत्थेरअपदानं	466-467
2. बन्धुजीवकत्थेरअपदानं	467-468
3. कोटुम्बरियत्थेरअपदानं	468-469
4. पञ्चहत्थियत्थेरअपदानं	469-470
5. इसिमुग्गदायकत्थेरअपदानं	470-471
6. बोधिउपट्ठाकत्थेरअपदानं	472
7. एकचिन्तिकत्थेरअपदानं	472-475
8. तिकण्णिपुप्फियत्थेरअपदानं	475-476
9. एकचारियत्थेरअपदानं	476-477
10. तिवण्टिपुप्फियत्थेरअपदानं	477-478
20. तमालपुप्फियवग्गो	
1. तमालपुप्फियत्थेरापदानं	479
2. तिणसन्थारकत्थेरअपदानं	480-481
3. खण्डफुल्लियत्थेरअपदानं	481-482
4. असोकपूजकत्थेरअपदानं	482-483
5. अङ्कोलकत्थेरअपदानं	483-484
6. किसलयपूजकत्थेरअपदानं	484-485
7. तिन्दुकदायकत्थेअरापदानं	485-487
8. मुट्ठिपूजकत्थेरअपदानं	487-488
9. किंकणिकपुप्फियत्थेरअपदानं	488-489
10. यूथिकपुप्फियत्थेरअपदानं	489-491
गाथानुक्कमणिका	492-516

Self-Reliant India

Since Independence

Editors
Dr. Raju Kumar Gupta
Dr. Surendra Kumar Gupta

LIST OF CONTRIBUTORS

1. **Prof. Sandeep Kumar,** Professor & Ex-Head, Department of Economics, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur, (U.P.)
2. **Nikhil Kumar Gautam,** Research Scholar, JRF, Department of Economics, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur, (U.P.)
3. **Dr. Ashok Kumar Kaithal,** Assistant Professor, Department of Economics, University of Lucknow, (U.P.)
4. **Dr. Manish Kumar Srivastava,** Associate Professor, Department of Commerce, D D U Gorakhpur University, Gorakhpur,(U.P.)
5. **Mr. Atul Kumar Srivastava,** Research Scholar, Department of Business Administration, D D U Gorakhpur University, Gorakhpur, (U.P.)
6. **Smt. Archana Singh,** Associate Professor, Department of Economics, BAKPG College, Lakhimpur-Kheri, (U.P.)
7. **Dr. Vikas Kumar,** Assistant Professor, Shaheed Mangal Pandey Govt.Girls P.G. College, Meerut, (U.P.)
8. **Dr. Deepa Gupta,** Assistant Professor, Shaheed Mangal Pandey Govt. Girls P.G. College, Meerut, (U.P.)
9. **Dr. Vijay Kumar,** Assistant. Professor, Department of Economics, VKM, BHU, (U.P.)
10. **Mr. Vishal Gupta,** Research Scholar Education Department of Kriya Sharir, Faculty of Ayurveda, BHU,(U.P.)
11. **Dr. Vandana Verma,** Assistant. Professor, Education Department of Kriya Sharir, Faculty of Ayurveda, BHU, (U.P.)
12. **Mr. Shatrujeet Singh,** Assistant Professor, Department of Economics, Government Girls P G College, Rampur, (U.P.)
13. **Dr.Deepti Sharma,** Associate Professor, Uttaranchal University, Dehradun, (U.K.)

14. **Mr.Vinay Kumar Pandey,** Assistant Professor, Department of Education, S.D.P.G. College, Math-Lar, Deoria, (U.P.)

15. **Dr. Amit Kumar Tiwari,** Assistant Professor, Bapu P.G. College, Pipiganj, Gorakhpur, (U.P.)

16. **Dr. Nirja Sharma,** Assistant Professor, Department of Buddhist Studies, University of Delhi, New Delhi

17. **Mr. Ajeet Kumar Pandey,** Research Scholar, Department of Buddhist Studies, University of Delhi, New Delhi

18. **Dr. Rohit Rai,** Assistant Professor, Government Degree College, Khalilabad, (U.P.)

19. **Mr. Anand Tripathi,** Research Scholar, Department of Economics, University of Allahabad, Prayagraj, (U.P.)

20. **Dr. Indu Upadhyay,** Professor, Department of Economics, Vasant Kanya Mahavidyalaya Kamachha, Varanasi, (U.P.)

CONTENTS

Preface *vii*

List of Contributors *ix*

1. **Self-reliant India: Several Aspects** 1
   Prof. Sandeep Kumar & Nikhil Kumar Gautam

2. **Gandhian Model of Self-reliance and Indian Economy in 21st Century** 15
   Dr. Ashok Kumar Kaithal

3. **Green Responsibility: A Way Towards Self Reliant India** 33
   Dr. Manish Kumar Srivastava & Mr. Atul Kumar Srivastava

4. **The Gandhian Model of Self-reliance in the Indian Economy** 43
   Archana Singh

5. **New Economic Policy and the Relevance of Self Reliance in India** 49
   Dr. Vikas Kumar & Dr. Deepa Gupta

6. **Self-reliance in Agriculture: A Myth or Reality** 59
   Dr. Vijay Kumar

7. **How Health and Education Can Play a Crucial Role for Making India Self Reliant** 74
   Vishal Gupta & Dr.Vandana Verma

8. **How India Can Become Self-reliant** 87
   Shatrujeet Singh

9. **Mapping the Journey to India's Ambitious Campaign Self-reliance** 98
   Dr. Deepti Sharma

10. **Concept and Dimension of Self-reliance for a Country** 106

Vinay Kumar Pandey

11. **The Role of Skill Development, Employment and Entrepreneurship in Self-reliant India: Opportunities and Challenges** 114

Dr. Amit Kumar Tiwari

12. **Buddhist Perspective to Self Reliance and Mindfulness by Global Development** 127

Prof. (Dr.) Nirja Sharma & Ajeet Kumar Pandey

13. **Economic Policy of Self-reliance in India: Past, Present and Future** 134

Dr. Rohit Kumar Rai

14. **Agricultural Finance and Rural Development: A Step towards Self Reliant India** 145

Anand Tripathi

15. **Planning and Management for Sustainable Agriculture in India** 154

Dr. Indu Upadhyay

Index *166*

12

BUDDHIST PERSPECTIVE TO SELF RELIANCE AND MINDFULNESS BY GLOBAL DEVELOPMENT

Prof. (Dr.) Nirja Sharma & Ajeet Kumar Pandey

Introduction

The term Self- reliance is coined by philosophers and the manifestation of idea behind this term is to follow our own instincts and idea which comes within us and to develop confidence so as to formulate true idea from true discourse.

Paper will emphasize on the Buddhist perspective of Self reliance. It is necessary to discuss about Buddhist idea of State, Environmental Concern, Economic model and Sustainable growth and some of its best examples are the first democratic state of Vajji, happiness model of Bhutan with Sustainable growth, the concept of Right livelihood which is embedded in the eight fold path propounded by Buddha and various philosophical concerns which will make better understanding on the theme.

Self-reliance does not mean to close doors of Indian economy in this globalized era but to develop with the world; it is a way to put forward to the world. It is a way to realize

the potential of young population by arousing there mental strength. To think upon this idea, it is essential to take these principles of teachings to grass roots so that it will impact humankind deeper and that may not disturb the ecological balance and uplift humanity. Generally there are two ways to approach a problem, top-down approach and bottom-up approach, the most efficient approach is the later one where problem oriented towards specific and moves to general which means rather than depending on just policies why not every individual of society must focus on their potential energy to strengthen the economy and democracy.

The Ancient Democratic Model of World

Democracy is backbone of Self reliance and Vajji was one of the oldest democratic forms of government which India has from a long period of time. The confederacy of vajji was located on the north of Ganga, major geography of Bihar came under its region and it was extended up to territory of Nepal. Its capital was Vaishali. This confederacy was ruled by the Gana' which means a popular democratic assembly. The head was elected leader, administration was governed by elected elders of society. There were 7 basic principles known as Sapta aparihani

Dhamma which were conditions of welfare advised by Buddha. These principles initiated the idea of local autonomy where society is governing itself. Decisions were taken collectively, frequent public meetings held and voice of common people was heard, women's were seen respectfully in society and played prominent role when required, local Shrines were supported etc,the policies indicate that these idea are very necessary to approach the path of Self reliance and these principles of 6th Century BC is itself a matter of pride for our society and due to these ideals the Sovereignty of confederacy existed for a long period of time with these self reliant approach where the common peoples are the key players in the formulation and execution of policies.

Sustainable and Equitable Socio Economic Development of Bhutan

A balanced approach towards economic development is a key to success and happiness for Bhutan which prefers ¯Gross Happiness Index (GHI) over ¯Gross Domestic product (GDP). Taking into account their environment and to protect their indigenous culture. These key features are example of good governance as a result Bhutan's ranking is amongst top nations of South Asia in terms of Human Development Index (HDI).Buddhism is state religion of this Himalayan state which always focused on the self reliant approach for the development of its people. This landlocked state is growing rapidly due to its stable policies and development of every individual entity which derives its inspiration from Buddhist philosophy and showing the path to the world. Shielding its traditions in the face of globalized modernity by pursuing core values of Buddhist political thoughts and seeking a balance between traditional and modern values. *Dasho Karma Ura* a Bhutani intellectual, scholar and civil servant behind GNH, describes in his work:

GNH stands for a holistic concept guiding governance and development. It also stands for the holistic needs of the people . . . GNH stands for the preservation and renewal of a holistic range of wealth or capital . . . It is not only economic wealth or capital—which is measured, though not so well, by GDP—but there are also other capitals, which we should value and measure.

These capitals are ecological, human resource, and cultural. (Ura 2010, p. 145)

The unconventional approach of Bhutan is sustainable in nature and well respected in international community. The civil society embraced the policies of government by popular support and by their individual efforts they are able to follow the path of self reliance.

Buddhist Economy: A Lens for Self Reliance

The application of economic idea that stem from Buddhist thought is commonly known as Buddhist economics (Alexandrin, 1993 p.3).E.F. Schumacher in his notable work Small is Beautiful: economics as if people mattered (1955) emphasized on the philosophical idea of right livelihood (*samma ajiva*), theory of dependent origination (*Pratîtyasamut pâda*) and Middle way to propose a non- violent way in economic and political life. Schumacher argue and slams western beliefs, that global prosperity will bring peace, he argues that world's greed for wealth and materialism will only widen the poverty gap and will exhaust the natural resources in a ruthless and exploitative manner. He defended human centric economic model for growth where production must be in accordance with want. His concern regarding a sustainable growth often been criticized and sometimes even he has been labeled as romantic idealist' (Bunting, 2011).

Buddhist economy is resolute by individual conduct, which in turn is governed by minds. These ideas can be inculcated for right view through education and training. Policies should be made with right understanding of sustainable model which should be human centric which can help in achieving human satisfaction which prefers quality over quantity.

There is a difference between Buddhist and modern economics, in modern economics the standard of living is measured by amount of consumption. Assuming man who consumes more is in better condition. While Buddhist approach will believe it irrational and emphasize on human well being, as consumption is just a medium for survival not the final goal.

Buddhist Philosophy and its Guiding Principles

Buddha propounded philosophical discourse which can impact an individual and created consciousness of self reliant in the masses like his four noble truth in which he stressed on

suffering (Dukkha) and reason behind suffering of people, how their desires makes them suffer. Cessation of suffering (dukkha nirvana) and eight fold path of Dukkha nirvana will take you to the path which can control your innate misery, pain and desire; these principles can take you to the path of consciousness which can enhance quality of life. In the philosophy of eight fold path it is mentioned how to make better understanding of life to make a good contribution for the society with good intentions, the ways to look forward by activating fullest mental energy. He stressed on the unethical ways of livelihood where five kinds of trades are listed in prohibited list i.e. trading in weapons, human trafficking, intoxicating drinks and narcotics product, poison, killing of any living beings (Anguttara Nikaya 5.177).These ideals are setting a highest moral ground in society which can inculcate right mindfulness and mental discipline. A society which will focus on quality over quantity will definitely uplift humanity and this will inspire to generations.

These are the basic ideas of Buddhism which are foundation for the path of self reliance for the people by pursuing these path people will rescue themselves from the worldly desires. Making a better understanding of these ideas will make aware people to know the exact reality of the world and to build a confidence of self reliance. The path of liberation lies within individuals .Trusting one's own intuitions can only transcend our spiritual powers. A nation is built by ideas and a rich philosophy. In Buddhist philosophy self reliance is not only a self centric idea it means that every individual is an entity of society and our individual struggle within ourselves will uplift the standard of society. Theory of momentariness is also amongst the ultimate philosophies which emphasize on the impermanent nature of moments which leads to create attachment with worldly affairs and later on became a reason of suffering, can only be controlled by will power which can be developed gradually to seek balance in life.

Nature is suffering from various environmental imbalances; Buddhist idea also touched this particular aspect of ecology. Various canon are concerned to this issue, western idea to environment is quite capitalist oriented in nature which can be twisted as required. Various examples in Buddhism tells us that violating the law of nature may leads to disastrous consequences and a threat to humanity the same is illustrated by an example of Bhutan in this paper where environmental concerns are highlighted as Constitutional value for the Himalayan state. Buddhism is human centric and believe in Salvation it talks about nirvana by controlling wants and desires (*trishna*). It talks about problems of common people and suggest the ways to resolve internal conflict arises in our mind. Buddha's journey towards enlightenment is a witness of his high mental abilities which tends him to propound a true discourse. It is transmitted to a generation which is changing life of people, injecting confidence in common people and taking them to the path of nirvana.

Conclusion

To achieve any goal it is required to have a driving force and Buddhist philosophy can help in achieving the goals of self reliant economy where every single entity will join hands to uplift the system with their fullest individual effort by following the mantra of Appo Deepo Bhava" which is supposed to be amongst the last guiding principle given by Buddha. This will make impact on generations to come, this guiding philosophy insist that construct your own path. The principle propounded by Buddha suites very well in global system where the path of prosperity will be achieved only through the efforts of every individual. It is crucial to find a stable position in global supply chain system by utilising resources in a sustainable manner; production must be in a ratio of consumption. These moves may inspire the global order as Bhutan's example is a living proof and the focus should be the well being and upliftment humanity.

References

- Alexandrin, G. (1993). Elements of buddhist economics. International Journal of Social Economics.
- Ash, C. (2007). Happiness and economics: A Buddhist perspective. Society and Economy, 201-222.
- Bapat, P.V. (1976). 2500 Years of Buddhism. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
- Berchoiz, Samuel & Kohn, S.C (ed), The Buddha and his Teaching, Shambhala Publication, Boston, 2003.
- Bunting, M. (2011, November 10). Small is beautiful – an economic idea that has sadly been forgotten. The Guardian.
- Davids, K.J. Ethics in early Buddhism, Motilal Banarsidass Publications, 1st edition. Delhi.
- Givel, Michael. 2015. Mahayana Buddhism and Gross National Happiness in Bhutan. International Journal of Wellbeing.
- Goodman, Charles. 2009. Consequences of Compassion: An Interpretation and Defense of Buddhist Ethics, 1st ed. Oxford: Oxford University Press.
- Gunaratana, Bhante. (2011).Mindfulness in Plain English, Wisdom Publication, Boston, United States.
- Horner, I.B (trans) The Vinay Pitaka (the book of the discipline), 6vols, London, PTS (1938-1966).
- Kornfield , Jack. (1988) . The Path of Compassion, Parallax Press, Berkeley United States
- Macy, Joanna. (1991). World as lover, World as self, Parallax Press, Berkeley, Unites States.
- Magnuson, J. C. (2011). Pathways to a mindful economy. In L. Zsolnai (Ed.), Ethical principles and economic transformation – a Buddhist approach (pp. 79- 107). Dordrecht, Netherlands: Springer.
- Schumacher, E. F. (1973). Small is beautiful: Economics as if people mattered, Harper& Row, New York.
- Ura, Karma. 2010. Leadership of the Wise: Kings of Bhutan. Thimphu: Centre for Bhutan Studies.
- Walshe, Maurice. 1995. (trans) The Long Discourse of The Buddha. Wisdom Publication, Boston , United States.